# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## एकोनत्रिंशः अध्यायः

## दशमः स्कन्धः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— भगवानपि ता रात्रीः शरदोत्फुल्लमल्लिकाः ।
वीक्ष्य रन्तुं मनश्चक्रे योगमायामुपाश्रितः ॥१॥

पदच्छेद— भगवान् अपि ताः रात्रीः शरदा उत्फुल्ल मल्लिकाः ।
वीक्ष्य रन्तुम् मनः चक्रे योगमायाम् उपाश्रितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| भगवान् | १. भगवान् ने | वीक्ष्य | ५. देखा जिनमें |
| अपि | २. भी | रन्तुम् | १०. रास क्रीडा करने का |
| ताः रात्रीः | ४. उन रात्रियों को | मनः | ११. मन में |
| शरदा | ३. शरद् ऋतु की | चक्रे | १२. विचारा |
| उत्फुल्ल | ७. खिल रहे थे (उन्होंने) | योगमायाम् | ८. योग माया का |
| मल्लिकाः । | ६. बेला, चमेली के पुष्प | उपाश्रितः ॥ | ९. आश्रय लेकर |

श्लोकार्थ—भगवान् ने भी शरद् ऋतु की उन रात्रियों को देखा, जिनमें बेला, चमेली के पुष्प खिल रहे थे। उन्होंने योगमाया का आश्रय लेकर रास क्रीडा करने का मन में विचारा ॥

### द्वितीयः श्लोकः

तदोडुराजः ककुभः करैर्मुखं प्राच्या विलिम्पन्नरुणेन शन्तमैः ।
स चर्षणीनामुदगाच्छुचो मृजन् प्रियः प्रियाया इव दीर्घदर्शनः ॥२॥

पदच्छेद— तदा उडुराजः ककुभः करैः मुखम् प्राच्या विलिम्पन् अरुणेन शन्तमैः ।
सः चर्षणीनाम् उदगात् शुचः मृजन् प्रियः प्रियायाः इव दीर्घदर्शनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तदा उडुराजः | १. उस समय चन्द्रदेव ने | सः | १२. वैसे ही चन्द्रदेव ने |
| ककुभः | ६. दिशा के | चर्षणीनाम् | १४. लोगों के |
| करैः | ४. किरणों से | उदगात् | १३. उदित होकर |
| मुखम् | ७. मुख पर | शुचः | १५. ताप-दुःख को |
| प्राच्या | ५. प्राची | मृजन् | १६. दूर कर दिया |
| विलिम्पन् | ८. रोली मल दी | प्रियः प्रियायाः | १०. प्रियतम ने अपनी प्रिया को |
| अरुणेन | ३. रक्तिम | इव | ९. जैसे |
| शन्तमैः । | २. अपनी शीतल और | दीर्घदर्शनः ॥ | ११. बहुत समय बाद दर्शन देकर प्रसन्न किया हो |

श्लोकार्थ—उस समय चन्द्रदेव ने अपनी शीतल और रक्तिम किरणों से प्राची दिशा के मुख पर रोली मल दी। जैसे प्रियतम ने अपनी प्रिया को बहुत समय बाद दर्शन देकर प्रसन्न किया हो। वैसे ही चन्द्रदेव ने उदित होकर लोगों के ताप-दुःख को दूर कर दिया ॥

## तृतीयः श्लोकः

**दृष्ट्वा कुमुद्वन्तमखण्डमण्डलं रमाननाभं नवकुङ्कुमारुणम् ।**
**वनं च तत्कोमलगोभिरञ्जितं जगौ कलं वामदृशां मनोहरम् ॥३॥**

पदच्छेद— दृष्ट्वा कुमुदवन्तम् अखण्ड मण्डलम् रमाननाभम् नव कुङ्कुम अरुणम् ।
वनम् च तत्कोमल गोभिः रञ्जितम् जगौ कलम् वामदृशाम् मनोहरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दृष्ट्वा | १२. ऐसा देख कर | वनम् च | ८. और सारा वन |
| कुमुदवन्तम् | ३. कुमुद के समान विकसित तथा | तत्कोमल | ९. उसकी कोमल |
| अखण्ड | ४. अखण्ड था | गोभिः | १० किरणों से |
| मण्डलम् | २. चन्द्रदेव का मण्डल | रञ्जितम् | ११. लाल था । |
| रमाननाभम् | १. लक्ष्मी के मुख के समान आभावाले | जगौ | १६. ध्वनि छेड़ दी |
| नव | ५. नवीन | कलम् | १३. उन्होंने सुन्दर और |
| कुङ्कुम | ६. केसर के समान | वामदृशाम् | १४. व्रज सुन्दरियों के लिये |
| अरुणम् । | ७. लाल हो रहा था | मनोहरम् ॥ | १५. मन को हरने वाली |

श्लोकार्थ—लक्ष्मी के मुख के समान आभा वाले चन्द्रदेव का मण्डल कुमुद के समान विकसित तथा अखण्ड था । नवीन केसर के समान लाल हो रहा था । और सारा वन उसकी कोमल किरणों से लाल था । ऐसा देख कर उन्होंने सुन्दर और व्रज सुन्दरियों के लिये मन हरने वाली ध्वनि छेड़ दी ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**निशम्य गीतं तदनङ्गवर्धनं व्रजस्त्रियः कृष्णगृहीतमानसाः ।**
**आजग्मुरन्योन्यमलक्षितोद्यमाः स यत्र कान्तो जवलोलकुण्डलाः ॥४॥**

पदच्छेद— निशम्य गीतम् तत् अनङ्ग वर्धनम् व्रजस्त्रियः कृष्णगृहीत मानसाः ।
आजग्मुः अन्योन्यम् अलक्षित उद्यमाः सः यत्र कान्तः जवलोल कुण्डलाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| निशम्य | ७. सुना (और) | आजग्मुः | १२. पास चल दीं उस समय |
| गीतम् तत् | ६. उस वंशी की ध्वनि को | अन्योन्यम् | ९. परस्पर एक दूसरे से |
| अनङ्ग | ४. कामभाव को | अलक्षित | १०. छिपाती हुई |
| वर्धनम् | ५. बढ़ाने वाली ऐसी | उद्यमाः | ८. वे अपनी चेष्टा को |
| व्रजस्त्रियः | ३. व्रज की स्त्रियों ने | सः यत्र कान्तः | ११. अपने उन परम प्रियतम के |
| कृष्णगृहीत | २. श्रीकृष्ण ने चुरा लिये थे | जवलोल | १४. वेग के कारण हिल रहे थे |
| मानसाः । | १. जिनके मन | कुण्डलाः ॥ | १३. उनके कुण्डल |

श्लोकार्थ—जिनके मन श्रीकृष्ण ने चुरा लिये थे । व्रज की स्त्रियों ने कामभाव को बढ़ाने वाली ऐसी उस वंशी की ध्वनि को सुना । और वे अपनी चेष्टा को परस्पर एक दूसरे से छिपाती हुई अपने उन प्रियतम के पास चल दीं । उस समय उनके कुण्डल वेग के कारण हिल रहे थे ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**दुहन्त्योऽभिययुः काश्चिद् दोहं हित्वा समुत्सुकाः ।**
**पयोऽधिश्रित्य संयावमनुद्वास्यापरा ययुः ॥५॥**

पदच्छेद— दुहन्त्यः अभिययुः काश्चित् दोहम् हित्वा समुत्सुकाः ।
पयः अधिश्रित्य संयावम् अनुद्वास्य अपराः ययुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दुहन्त्यः | २. दूध दुह रही थीं | पयः | ८. उफनता हुआ दूध |
| अभिययुः | ६. चल पड़ीं | अधिश्रित्य | ६. छोड़कर और कोई |
| काश्चित् | १. कोई गोपी | संयावम् | १०. लपसी |
| दोहम् | ३. कोई दूध औंटा रही थी | अनुद्वास्य | ११. बिना उतारे ही |
| हित्वा | ४. सब कुछ छोड़कर | अपराः | ७. अन्य कोई |
| समुत्सुकाः । | ५. वे उत्सुकता वश | ययुः ॥ | १२. चल पड़ीं |

श्लोकार्थ—कोई गोपी दूध दुह रही थीं । कोई दूध औंटा रही थीं । सब कुछ छोड़ कर वे उत्सुकता वश चल पड़ीं । अन्य कोई उफनता हुआ दूध छोड़कर और कोई लपसी बिना उतारे ही चल पड़ीं ॥

## षष्ठः श्लोकः

**परिवेषयन्त्यस्तद्धित्वा पाययन्त्यः शिशून् पयः ।**
**शुश्रूषन्त्यः पतीन् काश्चिदश्नन्त्योऽपास्य भोजनम् ॥६॥**

पदच्छेद— परिवेषयन्त्यः तत् हित्वा पाययन्त्यः शिशून् पयः ।
शुश्रूषन्त्यः पतीन् काश्चित् अश्नन्त्यः अपास्य भोजनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| परिवेषयन्त्यः | १. भोजन परोसने वाली | शुश्रूषयन्त्यः | ८. सेवा करने वाली |
| तत् | २. उस भोजन को | पतीन् | ७. अपने पति की |
| हित्वा | ३. छोड़कर | काश्चित् | ६. अन्य कोई सेवा छोड़कर |
| पाययन्त्यः | ६. पिलाने वाली (उसे छोड़कर) | अश्नन्त्यः | १०. भोजन करती हुई |
| शिशून् | ४. बच्चों को | अपास्य | १२. छोड़कर चल पड़ीं |
| पयः । | ५. दूध | भोजनम् ॥ | ११. भोजन को |

श्लोकार्थ—भोजन परोसने वाली उस भोजन को छोड़कर, बच्चों को दूध पिलाने वाली उसे छोड़कर, अपने पति की सेवा करने वाली अन्य कोई सेवा छोड़कर, और भोजन करती हुई भोजन को छोड़कर, चल पड़ीं ॥

## सप्तमः श्लोकः

**लिम्पन्त्यः प्रमृजन्त्योऽन्या अञ्जन्त्यः काश्च लोचने ।**
**व्यत्यस्तवस्त्राभरणाः काश्चित् कृष्णान्तिकं ययुः ॥७॥**

पदच्छेद— लिम्पन्त्यः प्रमृज्यन्त्यः अन्याः अञ्जन्त्यः काश्च लोचने ।
व्यत्यस्त वस्त्र आभरणाः कश्चित् कृष्ण अन्तिकम् ययुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| लिम्पन्त्यः | १. कोई लीपती हुई | व्यत्यस्त | ९. उलटे-पलटे धारण करके |
| प्रमृजन्त्या | ३. उबटन करती हुई | वस्त्राभरणाः | ८. वस्त्र और आभूषण |
| अन्याः | २. अन्य कोई गोपी | काश्चित् | ७. कोई |
| अञ्जन्त्यः | ६. अञ्जन लगाती हुई | कृष्ण | १०. श्रीकृष्ण के |
| काश्च | ४. अन्य कोई | अन्तिकम् | ११. पास |
| लोचने । | ५. अपने नेत्रों में | ययुः ॥ | १२. जा पहुँचीं |

श्लोकार्थ—कोई लीपती हुई, अन्य कोई गोपी उबटन करती हुई, अन्य कोई अपने नेत्रों में अञ्जन लगाती हुई और कोई वस्त्र एवं आभूषण उलटे-पलटे धारण करके श्रीकृष्ण के पास जा पहुँची ॥

## अष्टमः श्लोकः

**ता वार्यमाणाः पतिभिः पितृभिर्भ्रातृबन्धुभिः ।**
**गोविन्दापहृतात्मानो न न्यवर्तन्त मोहिताः ॥८॥**

पदच्छेद— ताः वार्यमाणाः पतिभिः पितृभिः भ्रातृ बन्धुभिः ।
गोविन्द अपहृत आत्मानः न न्यवर्तन्त मोहिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ताः | १. वे | गोविन्द | १०. श्रीकृष्ण ने |
| वार्यमाणाः | ६. रोके जाने पर भी | अपहृत | १२. हरण कर लिया था |
| पतिभिः | २. अपने पतियों | आत्मानः | ११. उनके प्राण मन और आत्मा का |
| पितृभिः | ३. पिताओं | न | ७. नहीं |
| भ्रातृ | ४. भाई और | न्यवर्तन्त | ८. लौटीं । वे |
| बन्धुभिः । | ५. बन्धुओं के द्वारा | मोहिताः ॥ | ९. श्रीकृष्ण पर मोहित थीं क्योंकि |

श्लोकार्थ—वे अपने पतियों, पिताओं, भाई और बन्धुओं के द्वारा रोके जाने पर भी नहीं लौटीं । वे श्रीकृष्ण पर मोहित थीं । क्योंकि श्रीकृष्ण ने उनके प्राण, मन और आत्मा का हरण कर लिया था ॥

## नवमः श्लोकः

अन्तर्गृहगताः काश्चिद् गोप्योऽलब्धविनिर्गमाः ।
कृष्णं तद्भावनायुक्ता दध्युर्मीलितलोचनाः ॥९॥

पदच्छेद— अन्तः गृह गताः काश्चिद् गोप्यः अलब्ध विनिर्गमाः ।
कृष्णम् तत् भावना युक्ताः दध्युः मीलित लोचनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अन्तः | ४. भीतर थी | कृष्णम् | ९. | श्रीकृष्ण की |
| गृह | ३. घर के | तत् | ८. | उसने |
| गताः | ५. उसे | भावना | १०. | भवना से |
| काश्चित् | १. कोई | युक्ताः | ११. | भावित होकर |
| गोप्यः | २. गोपी | दध्युः | १४. | वहीं ध्यान लगाया |
| अलब्ध | ७. नहीं मिला | मीलित | १३. | बन्द करके |
| विर्गमाः । | ६. बाहर निकलने का मार्ग | लोचनाः ॥ | १२. | अपने नेत्र |

श्लोकार्थ—कोई गोपी घर के भोतर थीं । उन्हें बाहर निकलने का मार्ग नहीं मिला । उन्होंने श्रीकृष्ण की भावना से भावित होकर अपने नेत्र बन्द करके वहीं ध्यान लगाया ॥

## दशमः श्लोकः

दुःसहप्रेष्ठविरहतीव्रतापधुताशुभाः ।
ध्यानप्राप्ताच्युताश्लेषनिर्वृत्या क्षीणमङ्गलाः ॥१०॥

पदच्छेद— दुःसह प्रेष्ठ विरह तीव्र ताप धुत अशुभाः ।
ध्यान प्राप्त अच्युत आश्लेष निर्वृत्या क्षीण मङ्गलाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| दुःसह | ३. अत्यन्त कठिन | ध्यान | ८. | ध्यान में ही |
| प्रेष्ठ | १. अपने प्रियतम | प्राप्त | ११. | प्राप्त करके वे |
| विरह | २. वियोग के | अच्युत | ९. | श्रीकृष्ण का |
| तीव्र | ४. भीषण | आश्लेष | १०. | आलिङ्गन |
| ताप | ५. ताप से उसके | निर्वृत्या | १२. | परम आनन्दित हुई |
| धुत | ७. नष्ट हो गये । और | क्षीण | १४. | नष्ट हो गये |
| अशुभाः । | ६. अशुभ संस्कार | मङ्गलाः ॥ | १३. | जिससे उनके अशुभ |

श्लोकार्थ—अपने प्रियतम के अत्यन्त कठिन भीषण ताप से उनके अशुभ संस्कार नष्ट हो गये । और ध्यान में ही श्रीकृष्ण का आलिगन प्राप्त करके वे परम आनिन्दत हुईं । जिससे उनके अशुभ नष्ट हो गये ॥

## एकादशः श्लोकः

तमेव परमात्मानं जारबुद्ध्यापि सङ्गताः ।
जहुर्गुणमयं देहं सद्यः प्रक्षीणबन्धनाः ॥११॥

पदच्छेद— तम् एव परम आत्मानम् जारबुद्ध्या अपि सङ्गताः ।
जहुः गुणमयम् देहम् सद्यः प्रक्षीण बन्धनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तम् एव | १. उन्होंने उन | जहुः | १२. छोड़ दिया |
| परम | २. परम | गुणमयम् | १०. इस गुणमय |
| आत्मानम् | ३. आत्मा श्रीकृष्ण का | देहम् | ११. शरीर को भी |
| जारबुद्ध्या | ४. जारबुद्धि से | सद्यः | ८. तत्काल |
| अपि | ५. ही | प्रक्षीण | ९. छोडकर |
| सङ्गताः | ६. आलिङ्गन किया था परन्तु | बन्धनाः | ७. समस्त बन्धनों को |

श्लोकार्थ— उन्होंने उन परमाआत्मा श्रीकृष्ण का जारबुद्धि से ही आलिङ्गन किया था। परन्तु समस्त बन्त्रनों को तत्काल छाड़कर इस गुणमय शरीर को भी छोड़ दिया।

## द्वादशः श्लोकः

राजोवाच—कृष्णं विदुः परं कान्तं न तु ब्रह्मतया मुने ।
गुणप्रवाहोपरमस्तासां गुणधियां कथम् ॥ १२ ॥

पदच्छेद— कृष्णम् विदुः परम् कान्तम् नतु ब्रह्मतया मुने ।
गुण प्रवाह उपरमः तासाम् गुणधियाम् कथम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कृष्णम् | २. उन्होंने श्रीकृष्ण को | गुण | ११. गुणों के |
| विदुः | ५. माना था | प्रवाहः | १२. प्रवाह में |
| परम् | ३. अपना परम | उपरम | १३. आसक्ति |
| कान्तम् | ४. प्रियतम | तासाम् | १०. उनकी |
| न तु | ७. नही माना था। फिर | गुण | ८. गुणों में ही |
| ब्रह्मतया | ६. ब्रह्मरूप में | धियाम् | ९. आसक्त |
| मुने | १. हे भगवन् | कथम् | १४. कैसे हुई |

श्लोकार्थ— हे भगवन् ! उन्होंने ने श्रीकृष्ण को अपना परम प्रियतम माना था। ब्रह्म रूप में नहीं माना था। फिर गुणों में ही आसक्त उनको गुणों के प्रवाह में आसक्ति कैसे हुई।

## त्रयोदशः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—उक्तं पुरस्तादेतत्ते चैद्यः सिद्धिं यथा गतः ।**
**द्विषन्नपि हृषीकेशं किमुताधोक्षजप्रियाः ॥१३॥**

पदच्छेद— उक्तम् पुरस्तात् एतत् ते चैद्यः सिद्धिम् यथा गतः ।
द्विषन् अपि हृषीकेशम् किम् उत अधोक्षजप्रियाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **उक्तम्** | ११. कह चुका हूँ | गतः । | ७. पाया था |
| **पुरस्तात्** | ९. पहले ही | द्विषन् | ३. द्वेष करने पर |
| **एत त्** | ८. यह कथा मैं | अपि | ४. भी |
| **ते** | १०. तुमसे | हृषीकेशम् | २. भगवान् के प्रति |
| **चैद्यः** | १. चेदिराज शिशुपाल ने | किम्उत | १४. क्या आश्चर्य है |
| **सिद्धिम्** | ६. परमसिद्धि को | अधोक्षज | १२. फिर जो श्रीकृष्ण की |
| **यथा** | ५. जिस प्रकार | प्रियाः ॥ | १३. प्यारी हैं उनके बारे में |

श्लोकार्थ— चेदिराज शिशुपाल ने भगवान् के प्रति द्वेष करने के कारण भी जिस प्रकार परम सिद्धि को पाया था, यह कथा मैं पहले ही तुमसे कह चुका हूँ। फिर जो श्रीकृष्ण की प्यारी हैं। उनके बारे में तो आश्चर्य ही क्या है।

## चतुर्दशः श्लोकः

**नृणां निःश्रेयसार्थाय व्यक्तिर्भगवतो नृप ।**
**अव्ययस्या प्रमेयस्य निर्गुणस्य गुणात्मनः ॥१४॥**

पदच्छेद— नृणाम् निःश्रेयस अर्थाय व्यक्तिः भगवतः नृप ।
अव्ययस्य अप्रमेयस्य निर्गुणस्य गुण आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **नृणाम्** | ८. मनुष्यों के | अव्ययस्य | २. अविनाशी |
| **निःश्रेयस** | ९. परम कल्याण के | अप्रमेयस्य | ३. प्रमेय रहित |
| **अर्थाय** | १०. लिये ही | निर्गुणस्य | ४. गुणों से परे और |
| **व्यक्तिः** | ११. अपने को प्रकट किया है | गुण | ५. गुणों के |
| **भगवतः** | ७. परमात्मा ने | आत्मनः ॥ | ६. आश्राय |
| **नृप** | १. हे राजन् | | |

श्लोकार्थ— हे राजन् ! अविनाशी, प्रमेयरहित, गुणों से परे और गुणों के आश्रय परमात्मा ने मनुष्यों के कल्याण के लिये ही अपने को प्रकट किया है ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

कामं क्रोधं भयं स्नेहमैक्यं सौहृदमेव च ।
नित्यं हरौ विदधतो यान्ति तन्मयतां हि ते ॥१५॥

पदच्छेद— कामम् क्रोधम् भयम् स्नेहम् ऐक्यम् सौहृदम् एव च ।
नित्यम् हरौ विदधतः यान्ति तन्मयताम् हि ते ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कामम् | १. काम | च । | ६. और |
| क्रोधम् | २. क्रोध | नित्यम् | ९. निरन्तर |
| भयम् | ३. भय | हरौ | १०. श्रीकृष्ण में |
| स्नेहम् | ४. स्नेह | विदधतः | ११. लगाने से |
| ऐक्यम् | ५. नातेदारी | यान्ति | १४. हो जाती हैं |
| सौहृदम् | ७. सौहार्द की | तन्मयताम् | १३. भगवन्मय |
| एव | ८. वृत्तियों को भी | हि ते ॥ | १२. वे वृत्तियाँ भी |

श्लोकार्थ—काम, क्रोध, भय, स्नेह, नातेदारी और सौहार्द की वृत्तियों को भी निरन्तर श्रीकृष्ण में लगाने से वे वृत्तियाँ भगवन्मय हो जाती हैं ॥

## षोडशः श्लोकः

न चैवं विस्मयः कार्यो भवता भगवत्यजे ।
योगेश्वरेश्वरे कृष्णे यत एतद् विमुच्यते ॥१६॥

पदच्छेद— न च एवम् विस्मयः कार्यः भवता भगवतिअजे ।
योगेश्वर ईश्वरे कृष्णे यतः एतत् विमुच्यते ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| न च | ८. नहीं | योगेश्वर | २. योगेश्वरों के भी |
| एवम् | ६. इस प्रकार का | ईश्वरे | ३. ईश्वर |
| विस्मयः | ७. कोई आश्चर्य | कृष्णे | ५. श्रीकृष्ण के बारे में |
| कार्यः | ९. करना चाहिये | यतः | १०. क्योंकि |
| भवता | १. आपको | एतत् | ११. उनके संकेत मात्र से |
| भगवतिअजे । | ४. अजन्मा भगवान् | विमुच्यते ॥ | १२. समस्त संसार का कल्याण हो सकता है |

श्लोकार्थ—आपको योगेश्वरों के भी ईश्वर अजन्मा भगवान् श्रीकृष्ण के बारे में इस प्रकार का कोई आश्चर्य नहीं करना चाहिये । क्योंकि उनके संकेत मात्र से समस्त संसार का कल्याण हो सकता है ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**ता दृष्ट्वान्तिकमायाता भगवान् व्रजयोषितः ।**
**अवदद् वदतां श्रेष्ठो वाचः पेशैर्विमोहयन् ॥१७॥**

पदच्छेद— ताः दृष्ट्वा अन्तिकम् आयाताः भगवान् व्रजयोषितः ।
अवदत् वदताम् श्रेष्ठः वाचः पेशैः विमोहयन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ताः | ६. उन | अवदत् | १२. इस प्रकार कहा |
| दृष्ट्वा | ५. देखा तो | वदताम् | ७. वक्ताओं में |
| अन्तिकम् | ३. अपने समीप | श्रेष्ठः | ८. सर्वश्रेष्ठ प्रभु ने |
| आयाताः | ४. आये हुये | वाचः | ६. अपनी वाणी के |
| भगवान् | १. भगवान् श्रीकृष्ण ने | पेशैः | १०. चातुर्य से उन्हें |
| व्रजयोषितः । | २. व्रज की सुन्दरियों को | विमोहयन् ॥ | ११. मोहित करते हुये |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने व्रज की सुन्दरियों को अपने समीप आये हुये देखा। तो उन वक्ताओं में श्रेष्ठ प्रभु ने अपनी वाणी के चातुर्य से उन्हें मोहित करते हुये इस प्रकार कहा ॥

## अष्टादशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच— **स्वागतं वो महाभागाः प्रियं किं करवाणि वः ।**
**व्रजस्यानामयं कच्चिद् ब्रूतागमनकारणम् ॥१८॥**

पदच्छेद— स्वागतम् वः महाभागाः प्रियम् किम् करवाणि वः ।
व्रजस्य अनामयम् कच्चित् ब्रूत आगमन करणम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| स्वागतम् | ३. स्वागत है | व्रजस्य | ७. व्रज में |
| वः | २. तुम्हारा | अनामयम् | ६. कुशल तो है |
| महाभागाः | १. महाभाग्यवती गोपियों | कच्चित् | ८. सब |
| प्रियम् | ५. प्रसन्न करने के लिये | ब्रूत | १२. बतायें |
| किम् करवाणि | ६. मैं क्या करूँ | आगमन | १०. आप यहाँ आने का |
| वः । | ४. तुम्हें | करणम् ॥ | ११. कारण |

श्लोकार्थ—महाभाग्यवती गोपियो ! तुम्हारा स्वागत है। तुम्हें प्रसन्न करने के लिये मैं क्या करूँ। व्रज में सब कुशल तो है। आप यहाँ आने का कारण बतायें ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

रजन्येषा घोररूपा घोरसत्त्वनिषेविता ।
प्रतियात व्रजं नेह स्थेयं स्त्रीभिः सुमध्यमाः ॥१९॥

पदच्छेद— रजनी एषा घोररूपा घोर सत्त्व निषेविता ।
प्रतियात व्रजम् न इह स्थेयम् स्त्रीभिः सुमध्यमाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रजनी | ३. | रात्रि | प्रतियात | १२. | लौट जाओ |
| एषा | २. | यह | व्रजम् | ११. | व्रज में |
| घोररूपा | ४. | बड़ी भयावनी है | न इह | ९. | इस समय यहाँ नहीं |
| घोर | ५ | भयानक | स्थेयम् | १०. | रहना चाहिये अतः |
| सत्त्व | ६. | जीव | स्त्रीभिः | ८. | स्त्रियों को |
| निषेविता । | ७. | इसमें घूमते हैं | सुमध्यमाः ॥ | १. | हे सुन्दरी गोपियों ! |

श्लोकार्थ—हे सुन्दरी गोपियों ! यह रात्रि बड़ी भयावनी है । भयानक जीव इसमें घूमते हैं । स्त्रियों को इस समय यहाँ नहीं रहना चाहिये । अतः व्रज में लौट जाओ ॥

## विंशः श्लोकः

मातरः पितरः पुत्रा भ्रातरः पतयश्च वः ।
विचिन्वन्ति ह्यपश्यन्तो मा कृढ्वं बन्धुसाध्वसम् ॥२०॥

पदच्छेद— मातरः पितरः पुत्राः भ्रातरः पतयः च वः ।
विचिन्वन्ति हि अपश्यन्तः मा कृढ्वम् बन्धु साध्वसम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मातरः | २. | माता | विचिन्वन्ति | ९. | खोज रहे होंगे (अतः) |
| पितरः | ३. | पिता | हि अपश्यन्तः | ८. | तुम्हें न देखकर |
| पुत्राः | ४. | पुत्र | मा | १२. | मत |
| भ्रातरः | ५. | भाई | कृढ्वम् | १३. | डालो |
| पतयः | ७. | पति | बन्धु | १०. | तुम अपने बन्धुओं को |
| च | ६. | और | साध्वसम् । | ११. | भय में |
| वः ॥ | १. | आपके | | | |

श्लोकार्थ—आपके माता-पिता, पुत्र, भाई और पति तुम्हें न देखकर खोज रहे होंगे । तुम अपने बन्धुओं को भय में मत डालो ॥

## एकविंशः श्लोकः

**दृष्टं वनं कुसुमितं राकेशकररञ्जितम् ।**
**यमुनानिललीलैजत्तरुपल्लवशोभितम् ॥२१॥**

पदच्छेद— दृष्टम् वनम् कुसुमितम् राकेश कर रञ्जितम् ।
यमुना अनिल लीला एजत् तरु पल्लव शोभितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दृष्टम् | १२. देखा | यमुना | ४. तथा यमुना के जल का |
| वनम् | ११ इस वन को | अनिल लीला | ५. स्पर्श करके बहने वाली वायु के कारण |
| कुसुमितम् | १०. पुष्पों से लदे | एजत् | ६. हिलते हुए |
| राकेश | १. तुमने चन्द्रमा की | तरु | ७. वृक्ष के |
| कर | २ किरणों से | पल्लव | ८. पत्तों से |
| रञ्जितम् । | ३. आरक्त | शोभितम् ॥ | ९. सुशोभित और |

श्लोकार्थ—तुमने चन्द्रमा की किरणों से आरक्त तथा यमुना के जल का स्पर्श करके बहने वाली वायु के कारण हिलते हुए वृक्ष के पत्तों से सुशोभित और पुष्पों से इन वन को देखा ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**तद् यात मा चिरं गोष्ठं शुश्रूषध्वं पतीन् सतीः ।**
**क्रन्दन्ति वत्सा बालाश्च तान् पाययत दुह्यत ॥२२॥**

पदच्छेद— तत् यात मा चिरम् गोष्ठम् शुश्रूषध्वम् पतीन् सतीः ।
क्रन्दन्ति वत्साः बालाः च तान् पालयत दुह्यत ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत् | २. इसलिये | क्रन्दन्ति | ११. रो रहे हैं |
| यात | ४. जाओ | वत्साः | ८. गौओं के बछड़े |
| मा चिरम् | ५. देर मत करो | बालाः | १०. तुम्हारे बालक |
| गोष्ठम् | ३. व्रज में | च | ९. और |
| शुश्रूषध्वम् | ७. सेवा करो | तान् | १२. उन्हें |
| पतीन् | ६. अपने पतियों की | पालयत | १४. उनका पालन करो |
| सतीः । | १. तुम सती साध्वी हो, | दुह्यत ॥ | १३. दुहकर दूध पिलाओ और |

श्लोकार्थ—तुम सती-साध्वी हो ; इसलिये व्रज में जाओ, देर मत करो । अपने पतियों की सेवा करो। गौओं के बछड़े और तुम्हारे बालक रो रहे हैं । उन्हें दुह कर दूध पिलाओ ओर उनका पालन करो ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

अथवा मदभिस्नेहाद् भवत्यो यन्त्रिताशयाः ।
आगता ह्युपपन्नं वः प्रीयन्ते मयि जन्तवः ॥२३॥

पदच्छेद— अथवा मत् अभिस्नेहात् भवत्यः यन्त्रित आशयाः ।
आगताः अथवा हि उपपन्नम् वः प्रीयन्ते मयि जन्तवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अथवा | १. अथवा यदि | आगताः | ७. यहाँ पर आई हो तो यह |
| मत् | २. मुझसे | हि उपपन्नम् | ६. उचित ही है |
| अभिस्नेहात् | ३. प्रेम होने के कारण | वः | ८. तुम लोगों के लिये |
| भवत्यः | ४. आप लोग | प्रीयन्ते | १२. स्नेह करते हैं |
| यन्त्रित | ५. परवश | मयि | ११. मुझसे |
| आशयाः । | ६. चित्त होकर | जन्तवः ॥ | १०. संसार के समस्त प्राणी |

श्लोकार्थ—अथवा यदि मुझसे प्रेम होने के कारण आप लोग परवश चित्त होकर यहाँ पर आई हो, तो यह तुम लोगों के लिये उचित ही है। संसार के समस्त प्राणी मुझसे स्नेह करते हैं ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

भर्तुः शुश्रूषणं स्त्रीणां परो धर्मो ह्यमायया ।
तद्बन्धूनां च कल्याण्यः प्रजानां चानुपोषणम् ॥२४॥

पदच्छेद— भर्तुः शुश्रूषणम् स्त्रीणाम् परः धर्मः हि अमायया ।
तत् बन्धूनाम् च कल्याण्यः प्रजानाम् च अनुपोषणम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| भर्तुः | ५. वे पति | तत् | ७. उनके |
| शुश्रूषणम् | १०. सेवा करें | बन्धूनाम् | ८. भाई बन्धुओं की |
| स्त्रीणाम् | २. स्त्रियों का | च | ६. और |
| परः | ३. पर | कल्याण्यः | १. हे कल्याणि गोपियो ! |
| धर्मः | ४. धर्म यही है कि | प्रजानाम् च | ११. और सन्तान का |
| हि अमायया । | ६. निष्कपट भाव से | अनुपोषणम् | १२. पालन करें |

श्लोकार्थ—हे कल्याणि गोपियो ! स्त्रियों का परम धर्म यही है कि वे पति और उनके भाई बन्धुओं की निष्कपट भाव से सेवा करें और सन्तान का पालन करें ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

दुःशीलो दुर्भगो वृद्धो जडो रोग्यधनोऽपि वा ।
पतिः स्त्रीभिर्न हातव्यो लोकेप्सुभिरपातकी ॥२५॥

पदच्छेद— दुशीलः दुर्भगः वृद्धः जडः रोगी अधनः अपि वा ।
पतिः स्त्रीभिः न हातव्यः लोकेप्सुभिः अपातकी ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दुशीलः | ४. बुरे स्वभाव वाले | पतिः | १०. पति का भी |
| दुर्भगः | ५. भाग्यहीन | स्त्रीभिः | २. स्त्रियों को |
| वृद्धः जडः | ६. वृद्ध-मूर्ख | न | ११. नहीं |
| रोगी | ७. रोगी | हातव्यः | १२. त्याग करना चाहिये |
| अधनः | ६. निर्धन | लोकेप्सुभिः | १. उत्तम लोक चाहने वाली |
| अपि वा । | ८. अथवा | अपातकी ॥ | ३. पापी को छोड़कर |

श्लोकार्थ—उत्तमलोक चाहने वाली स्त्रियों को पापी को छोडकर बुरे स्वभाव वाले, भाग्यहीन, वृद्ध, मूर्ख, रोगी अथवा निर्धन पति का भी त्याग नहीं करना चाहिये ॥

## षड्विंशः श्लोकः

अस्वर्ग्यमयशस्यं च फल्गु कृच्छ्रं भयावहम् ।
जुगुप्सितं च सर्वत्र औपपत्यं कुलस्त्रियाः ॥२६॥

पदच्छेद— अस्वर्ग्यम् अयशस्यम् च फल्गु कृच्छ्रम् भय आवहम् ।
जुगुप्सितम् च सर्वत्र औपपत्यम् कुल स्त्रियाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अस्वर्ग्यम् | ६. इससे स्वर्ग नहीं मिलता है | जुगुप्सितम् | ५. निन्दनीय है |
| अयशस्यम् | ७. अपयश होता है | च | ११. और |
| च | ८. और यह कर्म | सर्वत्र | ४. सब तरह से |
| फल्गु | ६. तुच्छ | औपपत्यम् | ३. जार पति की सेवा |
| कृच्छ्रम् | १०. क्षणिक | कुल | १. कुल न |
| भयावहम् । | १२. भयदायक है | स्त्रियाः ॥ | २. स्त्रियों के लिये |

श्लोकार्थ—कुलीन स्त्रियों के लिये जार पति की सेवा सब तरह से निन्दनीय है । इससे स्वर्ग नहीं मिलता है, तथा अपयश होता है । और यह कर्म तुच्छ, क्षणिक और भयदायक है ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

श्रवणाद् दर्शनाद् ध्यानान्मयि भावोऽनुकीर्तनात् ।
न तथा सन्निकर्षेण प्रतियात ततो गृहान् ॥२७॥

पदच्छेद— श्रवणात् दर्शनात् ध्यानात् मयि भावः अनु कीर्तनात् ।
न तथा सन्निकर्षेण प्रतियात ततः गृहान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| श्रवणात् | १. मेरी लीला के श्रवण | न | ९. नहीं होता है |
| दर्शनात् | २. रूप के दर्शन | तथा | ७. वैसा प्रेम |
| ध्यानात् | ४. ध्यान से | सन्निकर्षेण | ८. पास रहने से |
| मयि | ५. मेरे प्रति | प्रतियात | १२. वापिस लौट जाओ |
| भावः | ६. जैसा प्रेम होता है | ततः | १०. इसलिये |
| अनुकीर्तनात् । | ३. कीर्तन और | गृहान् ॥ | ११. तुम घर |

श्लोकार्थ—मेरी लीला के श्रवण, रूप के दर्शन, कीर्तन और ध्यान से मेरे प्रति जैसा प्रेम होता है। वैसा प्रेम पास रहने से नहीं होता है। इस लिये तुम घर वापिस लौट जाओ ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

इति विप्रियमाकर्ण्य गोप्यो गोविन्दभाषितम् ।
विषण्णा भग्नसङ्कल्पाश्चिन्तामापुर्दुरत्ययाम् ॥२८॥

पदच्छेद— इति विप्रियम् आकर्ण्य गोप्यः गोविन्द भाषितम् ।
विषण्णाः भग्नसङ्कल्पाः चिन्ताम् आपुः दुरत्ययाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| इति | ३. इस प्रकार | विषण्णाः | ७. खिन्न हो गईं |
| विप्रियम् | ४. अप्रिय | भग्न | ९. टूट गई और वे |
| आकर्ण्य | ६. सुना तो वे | सङ्कल्पाः | ८. उनकी आशा लता |
| गोप्यः | १. गोपियों ने | चिन्ताम् | १०. चिन्ता के |
| गोविन्द | २. श्रीकृष्ण का | आपुः | १२. डूब गयी |
| भाषितम् । | ५. भाषण | दुरत्ययाम् ॥ | ११. अथाह सागर में |

श्लोकार्थ—गोपियों ने श्रीकृष्ण का इस प्रकार अप्रिय भाषण सुना तो वे खिन्न हो गईं। उनकी आशालता टूट गई। और वे चिन्ता के अथाह सागर में डूब गईं ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

कृत्वा मुखान्यव शुचः श्वसनेन शुष्यद्-
विम्बाधराणि चरणेन भुवं लिखन्त्यः ।
अस्त्रैरुपात्तमषिभिः कुचकुङ्कुमानि
तस्थुर्मृजन्त्य उरुदुःखभराः स्म तूष्णीम् ॥२९॥

पदच्छेद— कृत्वा मुखानिअव शुचः श्वसनेन शुष्यत् बिम्बाधराणि चरणेन भुवम् लिखन्त्यः ।
अस्त्रैः उपात्तमषिभिः कुच कुङ्कुमानि तस्थुः मृजन्त्यः उरु दुःखभरा स्म तूष्णीम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृत्वा | ६. | करके | अस्त्रैः | ९. | बहते हुये आंसू |
| मुखानिअव | ५. | मुँह नोचे | उपात्तमषिभिः | १०. | काजल के साथ मिलकर |
| शुचः | ३. | शोक से उत्पन्न | कुचकुङ्कुमानि | ११. | वक्षःस्थल पर लगी केसर को |
| श्वसनेन शुष्यत् | ४. | लम्बी सांस से सूख गये | तस्थुः | १६. | खड़ी रह गईं |
| बिम्ब | १. | उनके बिम्बाफल के समान | मृजन्त्यः | १२. | धोने लगे |
| अधराणि | २. | लाल लाल अधर | उरु | १३. | अत्यधिक |
| चरणेन् भुवम् | ७. | वे अपने पैरों से पृथ्वी के | दुःखभराः | १४. | दुःख के भार के कारण |
| लिखन्त्यः । | ८. | कुरेदने लगीं | स्म तूष्णीम् ॥ | १५. | वे चुप होकर |

श्लोकार्थ—उनके बिम्बाफल के समान लाल लाल अधर शोक से उत्पन्न लम्बी साँस से सूख गये । मुँह नोचे करके वे अपने पैरों से धरती कुरेदने लगीं । बहते हुये आँसु काजल के साथ मिल कर वक्षःस्थल पर लगी केसर को धोने लगे । अत्यधिक दुःख के भार के कारण वे चुप होकर खड़ी रह गयीं ॥

## त्रिंशः श्लोकः

प्रेष्ठं प्रियेतरमिव प्रतिभाषमाणं कृष्णं तदर्थविनिवर्तितसर्वकामाः ।
नेत्रे विमृज्य रुदितोपहते स्म किञ्चित्संरम्भगद्गदगिरोऽब्रुवतानुरक्ताः ॥३०॥

पदच्छेद—प्रेष्ठम् प्रियइतरम् इव प्रति भाषमाणम् कृष्णम् तत् अर्थ विनिवर्तित सर्वकामाः ।
नेत्रे विमृज्य रुदित उपहते स्म किञ्चित् संरम्भगद्गदगिरः अब्रुवत अनुरक्ताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रेष्ठम् | ४. | उन्हीं प्रियतम | नेत्रे विमृज्य | १०. | फिर आँसुओं को पोंछ कर |
| प्रियइतरम् इव | ६. | निष्ठुरता भरी सी | रुदित | ८. | वे रोने |
| प्रतिभाषमाणम् | ७. | बातों को सुन कर | उपहते स्म | ९. | लगीं |
| कृष्णम् | ५. | श्रीकृष्ण की | किञ्चित्संरम्भ | ११. | तनिक प्रणय कोप के कारण |
| तत् अर्थ | १. | जिन श्रीकृष्ण के लिये उन्होंने | गद्गद् गिरः | १२. | गद् गद् वाणी से |
| विनिवर्तित | ३. | त्याग कर दिया था | अब्रुवत | १४. | बोलने लगीं |
| सर्वकामाः । | २. | समस्त कामनाओं का | अनुरक्ताः ॥ | १३. | प्रेम भरे वचन |

श्लोकार्थ—जिन श्री कृष्ण के लिये उन्होंने समस्त कामनाओं का त्याग कर दिया था । उन्हीं प्रियतम श्रीकृष्ण की निष्ठुरता भरी-सी बातों को सुनकर वे रोने लगीं। फिर आँसुओं को पोंछकर तनिक प्रणय कोप के कारण प्रेम भरे वचन बोलने लगीं ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

गोप्यः ऊचुः— मैवं विभोऽर्हति भवान् गदितुं नृशंसं
सन्त्यज्य सर्वविषयांस्तव पादमूलम् ।
भक्ता भजस्व दुरवग्रह मा त्यजास्मान्
देवो यथाऽऽदिपुरुषो भजते मुमुक्षून् ॥३१॥

पदच्छेद— मैवम् विभो अर्हति भवान् गदितुम्नृशंसम् सन्त्यज्य सर्वविषयान् तवपादमूलम् ।
भक्ताः भजस्व दुरवग्रह मा त्यज अस्मान् देवः यथा आदि पुरुषः भजतेमुमुक्षून् ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| मैवम् | ९. नहीं है | भक्ताः | १२. हम भक्तों पर वैसा ही |
| विभो | ५. हे प्रभो ! | भजस्व | १३. प्रेम करिये |
| अर्हति | ८. योग्य | दुरवग्रह | १. हे स्वच्छन्द प्रभो ! |
| भवान् | ६. आपको | मा त्यज | ११. परित्याग मत करिये |
| गदितुम्नृशंसम् | ७. क्रूर वचन बोलना | अस्मान् | १०. आप हमारा |
| सन्त्यज्य | ३. छोड़ कर | देवः | १५. भगवान् नारायण |
| सर्वविषयान् | २. हमने समस्त विषयों को | यथा आदि पुरुषः | १४. जैसे आदि पुरुष |
| तवपादमूलम् । | ४. आपके चरणों को अपनाया है | भजते मुमुक्षून् ॥ | १६. मुमुक्षुओं से प्रेम करते हैं |

श्लोकार्थ—हे स्वच्छन्द प्रभो ! हमने समस्त विषयों को छोड़ कर आपके चरणों को अपनाया है । हे प्रभो ! आपको क्रूर वचन बोलना योग्य नहीं है । आप हमारा परित्याग मत करिये । हम भक्तों पर वैसा ही प्रेम करिये, जैसे आदि पुरुष भगवान् नारायण मुमुक्षुओं से प्रेम करते हैं ।।

## द्वात्रिंशः श्लोकः

यत्पत्यपत्यसुहृदामनुवृत्तिरङ्ग स्त्रीणां स्वधर्म इति धर्मविदा त्वयोक्तम् ।
अस्त्वेवमेतदुपदेशपदे त्वयीशे प्रेष्ठो भवांस्तनुभृतां किल बन्धुरात्मा ॥३२॥

पदच्छेद— यत् पति अपत्य सुहृदाम् अनुवृत्तिः अङ्ग स्त्रीणाम् स्वधर्म इतिधर्मविदा त्वयाउक्तम् ।
अस्तु एवम् एतत् उपदेश पदे त्वयि ईशे प्रेष्ठः भवान् तनुभृताम् किल बन्धुः आत्मा ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| यत् पति अपत्य | ४. कि पति-पुत्र और | अस्तु एवम् | ९. आपने ठीक ही कहा है । |
| सुहृदाम् अनुवृत्तिः | ५. भाई-बन्धुओं की सेवा ही | एतत् उपदेश | १३. इस उपदेश के |
| अङ्ग | १. हे श्याम सुन्दर | पदे त्वयि ईशे | १४. विषय आप परमेश्वर ही हैं |
| स्त्रीणाम् | ६. स्त्रियों का | प्रेष्ठः भवान् | ११. आप प्रियतम |
| स्वधर्म | ७. स्वधर्म है | तनुभृताम् | १०. शरीरधारियों के लिये |
| इति धर्मविदा | २. धर्म के जानकार यह | किल | ८. निश्चय ही |
| त्वया उक्तम् । | ३. आपके द्वारा जो कहा गया है | बन्धुः आत्मा ॥ | १२. बन्धु और आत्मा होने से |

श्लोकार्थ—हे श्यामसुन्दर ! धर्म के जानकार यह आपके द्वारा जो कहा गया है कि पति-पुत्र और भाई-बन्धुओं की सेवा ही स्त्रियों का स्वधर्म है । निश्चय ही आपने ठीक ही कहा है । शरीर धारियों के लिये आप प्रियतम, बन्धु और आत्मा होने से इस उपदेश के विषय आप परमेश्वर ही हैं ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**कुर्वन्ति हि त्वयि रतिं कुशलाः स्व आत्मन्**
**नित्यप्रिये पतिसुतादिभिरार्तिदैः किम् ।**
**तन्नः प्रसीद परमेश्वर मा स्म छिन्द्या**
**आशां भृतां त्वयि चिरादरविन्दनेत्र ॥३३॥**

पदच्छेद—कुर्वन्ति हि त्वयि रतिम् कुशलाः स्वआत्मन् नित्यप्रिये पति सुतआदिभिः आर्तिदैः किम् ।
तत्नः प्रसीद परमेश्वर मा स्म छिन्द्याः आशाम् भृताम् त्वयि चिरात् अरविन्दनेत्र ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| कुर्वन्ति | ४. करते हैं ! क्योंकि | किम् । | ८. क्या प्रयोजन है |
| हित्वयि रतिम् | ३. आप से ही प्रेम | तत् नः प्रसीद | १०. इसलिये आप हम पर प्रसन्न हों |
| कुशलाः | २. निपुण महापुरुष | परमेश्वर | ९. हे परमेश्वर ! |
| स्वआत्मन् | १. अपने आत्म ज्ञान में | मास्मछिन्द्याः | १४. छेदन मत करो |
| नित्य प्रिये | ५. आप नित्य प्रिय हैं | आशाम् भृताम् | १३. पाली-पोसी आशा का |
| पति सुतआदिभिः | ७. पति, पुत्रादि से उन्हें | त्वयिचिरात् | १२. तुम्हारे प्रति चिरकाल से |
| आर्तिदैः | ६. अनित्य दुःखद | अरविन्दनेत्र ॥ | ११. हे कमल नयन ! |

श्लोकार्थ—अपने आत्मज्ञान में निपुण महापुरुष आपसे ही प्रेम करते हैं। क्योंकि आप नित्य प्रिय हैं। अनित्य दुःखद पति, पुत्रादि से उन्हें क्या प्रयोजन है। हे परमेश्वर ! इसलिये आप हम पर प्रसन्न हों। हे कमल नयन ! तुम्हारे प्रति चिरकाल से पाली-पोसी आशा का छेदन मत करो ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**चित्तं सुखेन भवतापहृतं गृहेषु यन्निर्विशत्युत करावपि गृह्यकृत्ये ।**
**पादौ पदं न चलतस्तव पादमूलाद् यामः कथं व्रजमथो करवाम किं वा ॥३४॥**

पदच्छेद— चित्तम् सुखेन भवता अपहृतम् गृहेषु यत् निर्विशति उत करौ अपिगृह्यकृत्ये ।
पादौ पदम् न चलतः तव पाद मूलात् यामः कथम् व्रजम् अथो करवाम किम् वा ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| चित्तम् सुखेन | ५. हमारा चित्त सुख पूर्वक | पादौ पदम् | ९. हमारे पैर एक पग भी |
| भवता अपहृतम् | ७. आपने चुरा लिया है | न चलतः | १०. नहीं चलना चाहते हैं |
| गृहेषु | ६. घर में लगा रहता था उसे | तवपाद मूलात् | ८. आपके चरणों का आश्रय छोड़कर |
| यत् | १. हे श्याम सुन्दर ! जो | यामः कथम्व्रजम् | ११. हम व्रज में कैसे जायें |
| निर्विशति उत | ४. लगे रहते थे। और जो | अथो करवाम | १४. करें |
| करौ | २. हमारे हाथ | किम् | १३. क्या |
| अपिगृह्यकृत्ये । | ३. घर के कामों में | वा ॥ | १२. अथवा वहाँ जाकर |

श्लोकार्थ—हे श्याम सुन्दर ! जो हमारे हाथ घर के कामों में लगे रहते थे और जो हमारा चित्त सुख-पूर्वक घर में लगा रहता था। उसे आपने चुरा लिया है। आपके चरणों का आश्रय छोड़कर हमारे पैर एक पग भी नहीं चलना चाहते हैं। हम व्रज में कैसे जायें। अथवा वहाँ जाकर क्या करें ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**सिञ्चाङ्ग नस्त्वदधरामृतपूरकेण हासावलोककलगीतजहृच्छयाग्निम् ।**
**नो चेद् वयं विरहजाग्न्युपयुक्तदेहा ध्यानेन याम पदयोः पदवीं सखे ते ॥३५॥**

पदच्छेद— सिञ्च अङ्ग नस्त्वद् अधरामृत पूरकेण हास अवलोक कलगीतज हृच्छय अग्निम् ।
नो चेत् वयम् विरहज अग्नि उपयुक्त देहाः ध्यानेन याम पदयोः पदवीम् सखे ते ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| सिञ्च | ८. बुझा दो ! | नोचेत् वयम् | १०. अन्यथा हम आपके |
| अङ्ग | १. हे श्याम सुन्दर ! हमारे | विरहज अग्नि | ११. वियोग की अग्नि में अपना |
| नस्त्वद् | ३. आप अपने | उपयुक्त देहाः | १२. शरीर जलाकर |
| अधरामृत | ४. अधरों की | ध्यानेन | १३. ध्यान के द्वारा |
| पूरकेण | ५. रसधारा | याम | १६. प्राप्त कर लेंगी |
| हास अवलोक | ६. हास चितवन और | पदयोः पदवीम् | १५. चरण कमलों में स्थान |
| कलगीतज | ७. सुन्दर गीतों से | सखे | ९. हे प्यारे सखा |
| हृच्छय अग्निम् । | २. हृदय की अग्नि को | ते ॥ | १४. आपके |

श्लोकार्थ—हे श्यामसुन्दर ! हमारे हृदय की अग्नि को आप अपने अधरों की रस-धारा, हास, मनोहर चितवन और सुन्दर गीतों से बुझा दो । हे प्यारे सखा ! अन्यथा हम आपके वियोग की अग्नि में अपना शरीर जलाकर ध्यान के द्वारा आपके चरण कमलों में स्थान प्राप्त कर लेंगी ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**यर्ह्यम्बुजाक्ष तव पादतलं रमाया दत्तक्षणं क्वचिदरण्यजनप्रियस्य ।**
**अस्प्राक्ष्म तत्प्रभृति नान्यसमक्षमङ्ग स्थातुं त्वयाभिरमिता बत पारयामः ॥३६॥**

पदच्छेद—यर्हि अम्बुजाक्ष तव पाद तलम् रमायाः दत्तक्षणम् स्थातुम् क्वचित् अरण्यजन प्रियस्य ।
अस्प्राक्ष्म तत् प्रभृति न अन्यसमक्षम् अङ्ग स्थातुम् त्वया अभिरमिताः बत पारयामः ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| यर्हि | २. जब से | अस्प्राक्ष्म | ९. स्पर्श किया है |
| अम्बुजाक्ष तव | १. हे कमल नयन ! आपने | तत् प्रभृति | १३. तभी से लेकर आज तक |
| पाद तलम् | ४. जिन चरणों की सेवा का | न अन्यसमक्षम् | १४. अन्य किसी के सामने |
| रमायाः | ३. लक्ष्मी जी को भी | अङ्ग | १०. हे श्याम सुन्दर ! |
| दत्तक्षणम् | ६. अवसर दिया है | स्थातुम् | १५. खड़ी होने में भी हम |
| क्वचित् | ५. कभी-कभी | त्वया अभिरमिताः | १२. आपसे आनन्दित होकर |
| अरण्यजन | ७. हम वनवासियों ने | बत | ११. हर्ष का विषय है कि |
| प्रियस्य । | ८. प्रेम से जब से उनका | पारयामः ॥ | १६. समर्थ नहीं हैं |

श्लोकार्थ—हे कमलनयन ! आपने जब से लक्ष्मी जी को भी जिन चरणों की सेवा का कभी-कभी अवसर दिया है, हम वनवासियों ने प्रेम से जब से उनका स्पर्श किया है, हे श्याम सुन्दर ! हर्ष का विषय है कि आपसे आनन्दित होकर तभी से लेकर आज तक अन्य किसी के सामने खड़ी होने में भी हम समर्थ नहीं हैं ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**श्रीर्यत्पदाम्बुजरजश्चकमे तुलस्या लब्ध्वापि वक्षसि पदं किल भृत्यजुष्टम् ।**
**यस्याः स्ववीक्षणकृतेऽन्यसुरप्रयासस्तद्वद् वयं च तव पादरजः प्रपन्नाः ॥३७॥**

पदच्छेद— श्रीः यत् पदाम्बुज रजः चकमे तुलस्याः लब्ध्वा अपि वक्षसि पदम् किल भृत्य जुष्टम् ।
यस्याः स्ववीक्षणकृते अन्यसुर प्रयासः तत्वत् वयम् च तव पादरजः प्रपन्नाः ॥

| शब्दार्थ—श्रीः | ५. वही लक्ष्मी जी | यस्याः | १. जिन लक्ष्मी जी का |
|---|---|---|---|
| यत् पदाम्बुज | १०. आपके चरण कमलों का | स्ववीक्षणकृते | २. कृपा कटाक्ष पाने के लिये |
| रजः चकमे | ११. रज पाने की अभिलाषा करती हैं | अन्यसुर | ३. बड़े-बड़े देवता |
| तुलस्याः | ८. अपनी सौत तुलसी के साथ | प्रयासः | ४. तपस्या करते रहते हैं |
| लब्ध्वाअपि | ७. प्राप्त कर लेने पर भी | तत् वत् | १२. उन्हीं के समान |
| वक्षसि पदम् | ६. आपके वक्षः स्थल में स्थान | वयम् च तव | १३. हम भी आप की |
| किल भृत्य जुष्टम् । | ९. निश्चय ही भक्तों द्वारा सेवित | पादरजःप्रपन्नाः ॥ | १४. चरण रज की शरण में आई हैं |

श्लोकार्थ—जिन लक्ष्मी जी का कृपा कटाक्ष पाने के लिये बड़े-बड़े देवता तपस्या करते रहते हैं। वही लक्ष्मी जी आप के वक्षः स्थल में स्थान प्राप्त कर लेने पर भी अपनी सौत तुलसी के साथ निश्चय ही भक्तों द्वारा सेवित आपके चरण कमलों की रज पाने की अभिलाषा करती हैं। उन्हीं के समान हम भी आपकी चरण रज की शरण में आई हैं ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**तन्नः प्रसीद वृजिनार्दन तेऽङ्घ्रिमूलं प्राप्ता विसृज्य वसतीस्त्वदुपासनाशाः ।**
**त्वत्सुन्दरस्मितनिरीक्षणतीव्रकामतप्तात्मनां पुरुषभूषण देहि दास्यम् ॥३८॥**

पदच्छेद-- तत् नः प्रसीद वृजिन अर्दन ते अङ्घ्रिमूलम् प्राप्ता विसृज्य वसतीः त्वद् उपासनाशाः ।
त्वत् सुन्दर स्मित निरीक्षण तीव्रकामतप्त आत्मानम् पुरुष भूषण देहि दास्यम् ॥

| शब्दार्थ—तत् | १. इसलिये | त्वत् सुन्दर | ९. आप अपने सुन्दर |
|---|---|---|---|
| नः प्रसीद | ३. आप हम पर प्रसन्न हों | स्मित | १०. मुसकान का |
| वृजिन अर्दन | २. हे दुःख-नाशक | निरीक्षण | ११. दर्शन करने की |
| ते अङ्घ्रिमूलम् | ६. आपके चरणों में | तीव्रकामतप्त | १२. बलवती आकांक्षावाली तप्त |
| प्राप्ता | ७. आयी हैं | आत्मानम् | १३. हृदय हम गोपियों को |
| विसृज्य वसतीः | ४. सब कुछ छोड़कर | पुरुष भूषण | ८. हे पुरुषश्रेष्ठ ! |
| त्वद् उपासनाशाः । | ५. आपकी सेवा की आशा से | देहि दास्यम् ॥ | १४. अपनी दासी बनाइये |

श्लोकार्थ—इसलिये हे दुःख-नाशक प्रभो ! आप हम पर प्रसन्न होइये। हम सब कुछ छोड़कर कमलों आपकी सेवा की आशा से आपके चरणों में आयी हैं। हे पुरुषश्रेष्ठ ! आप अपने सुन्दर मुसकान का दर्शन करने की बलवती आकांक्षावाली, तप्त हृदय, हम गोपियों को अपनी दासी बनाइये ॥

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**वीक्ष्यालकावृतमुखं तव कुण्डलश्रीगण्डस्थलाधरसुधं हसितावलोकम् ।
दत्ताभदं च भुजदण्डयुगं विलोक्य वक्षः श्रियैकरमणं च भवाम दास्यः ॥३९॥**

पदच्छेद—वीक्ष्य अलक आवृत मुखम् तव कुण्डल श्रीगण्डस्थल अधर सुधम् हसित अवलोकम् ।
दत्त अभयम् च भुज दण्ड युगम् विलोक्य वक्षः श्रियैकरमणम् च भवाम दास्यः ॥

| शब्दार्थ वीक्ष्य | ८. | देखकर | दत्तअभयम् च | ९. | और भक्तों को अभय देने वाले |
|---|---|---|---|---|---|
| अलक आवृत | १. | घुंघराले केशों से घिरा | भुजदण्ड | ११. | भुजदण्डों को |
| मुखम् तव | २. | आपका मुख | युगम् | १०. | दोनों |
| कुण्डल श्री | ४. | कुण्डलों की शोभा | विलोक्य | १२. | देखकर |
| गण्डस्थल | ३. | गण्ड-स्थल पर | वक्षः | १४. | वक्षः स्थल देखकर |
| अधरसुधाम् | ५. | अधरों में अमृत और | श्रियैकरमणम्च | १३. | और एकमात्र लक्ष्मी जी का विहार |
| हसित | ६. | मधुर हास्य तथा | भवाम | १६. | हो गई हैं |
| अवलोकम् । | ७. | तिरछी चितवन | दास्यः ॥ | १५. | हम आपकी दासी |

श्लोकार्थ—घुंघराले केशों से घिरा आपका मुख गण्डस्थल पर कुण्डलों की शोभा अधरों में अमृत और मधुर हास्य तथा तिरछी चितवन देखकर और भक्तों को अभय देने वाले भुजदण्डों को देखकर और एकमात्र लक्ष्मी जी का विहार वक्षः स्थल देखकर हम आपकी दासी हो गयी हैं ॥

## चत्वारिंशः श्लोकः

**का स्त्र्यङ्ग ते कलपदायतमूर्च्छितेन सम्मोहिताऽऽर्यचरितान्न चलेत्त्रिलोक्याम् ।
त्रैलोक्यसौभगमिदं च निरीक्ष्य रूपं यद् गोद्विजद्रुममृगाः पुलकान्यबिभ्रन् ॥४०**

पदच्छेद—का स्त्री अङ्ग ते कल पद आयत मूर्च्छितेन सम्मोहित आर्यचरितात् न चलेत् त्रिलोक्याम् ।
त्रैलोक्य सौभगम् इदम् च निरीक्ष्य रूपम् यत् गोद्विज द्रुममृगाः पुलकानि अबिभ्रन् ॥

| शब्दार्थ—का स्त्री | ३. | ऐसी कौन स्त्री है | त्रैलोक्य | १४. | तीनों लोकों में |
|---|---|---|---|---|---|
| अङ्ग | १. | हे श्याम सुन्दर | सौभगम् इदम् | १५. | सुन्दर इस |
| ते | ४. | जो आपकी वंशी की | च | ९. | और |
| कलपद आयत | ५. | मधुर पदों विविध | निरीक्ष्यरूपम् | १६. | रूपकोदेखकर आसक्त नहोजाय |
| मूर्च्छितेन | ६. | मूर्च्छनाओं से | यत् गोद्विज | १०. | जो गाय ब्राह्मण |
| सम्मोहिता | ७. | मोहित होकर | द्रुम मृगाः | ११. | वृक्ष पशु-पक्षियों तक को |
| आर्यचरितात्नचलेत् | ८. | आर्य मर्यादा से विचलित न होगी | पुलकानि | १२. | आनन्द |
| त्रिलोक्याम् । | २. | त्रिलोकी में | अबिभ्रन् ॥ | १३. | प्रदान करने वाले |

श्लोकार्थ—हे श्याम सुन्दर ! त्रिलोकी में ऐसी कौन स्त्री है । जो आपकी वंशी के मधुर पदों की विविध मूर्च्छनाओं से मोहित होकर आर्य, मर्यादा से विचलित न होगी । और जो गाय ब्राह्मण वृक्ष पशु, पक्षियों तक को आनन्द प्रदान करने वाले तीनों लोकों में सुन्दर इस रूप को देखकर आसक्त न हो जाय ॥

## एकचत्वारिंशः श्लोकः

**व्यक्तं भवान् व्रजभयार्तिहरोऽभिजातो देवो यथाऽऽदिपुरुषः सुरलोकगोप्ता ।**
**तन्नो निधेहि करपङ्कजमार्तबन्धो तप्तस्तनेषु च शिरस्सु च किङ्करीणाम् ॥४१॥**

पदच्छेद—व्यक्तम् भवान् व्रजभय आर्तिहरः अभिजातः देवः यथा आदि पुरुषः सुरलोक गोप्ता ।
तत् नः निधेहि कर पङ्कजम् आर्तबन्धो तप्तस्तनेषु च शिरस्सु च किङ्करीणाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| व्यक्तम् | १. | यह स्पष्ट ही है कि | तत् | १०. | इसलिये |
| भवान् | ५. | आप भी | नः | ११. | हम |
| व्रजभय | ६. | व्रज वासियों का भय और | निधेहि | १६. | स्थापित करिये |
| आर्तिहरः | ७. | दुःखहरण करने के लिये ही | करपङ्कजम् | १५. | कर कमल |
| अभिजातः | ८. | उत्पन्न हुये हैं | आर्तबन्धो | ६. | हे दीनबन्धु |
| देवः | ३. | नारायण | तप्तस्तनेषु च | १३. | सन्तप्त वक्ष स्थल |
| यथा आदिपुरुषः | २. | जैसे आदि पुरुष | शिरस्सु च | १४. | और शिरों पर |
| सुरलोक गोप्ता | ४. | देवलोक के रक्षक हैं वैसे ही | किङ्करीणाम् ॥ | १२. | सेविकाओं के |

श्लोकार्थ—यह स्पष्ट ही है कि जैसे आदि पुरुष नारायण देवलोक के रक्षक हैं, वैसे ही आप भी व्रजवासियों का भय और दुःखहरण करने के लिये ही उत्पन्न हुये हैं। हे दीनबन्धु ! इसलिये हम सेविकाओं के सन्तप्त वक्षःस्थल और सिरों पर आप अपना कर कमल स्थापित करिये ॥

## द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— **इति विक्लवितं तासां श्रुत्वा योगेश्वरेश्वरः ।**
**प्रहस्य सदयं गोपीरात्मारामोऽप्यरीरमत् ॥४२॥**

पदच्छेद— इति विक्लवितम् तासाम् श्रुत्वा योगेश्वर ईश्वरः ।
प्रहस्य सदयम् गोपीः आत्मा रामः अपि अरीरमत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | ६. | इस प्रकार | प्रहस्य | ६. | हँस कर |
| विक्लवितम् | ७. | व्याकुलता भरी वाणी | सदयम् | १०. | दयापूर्वक |
| तासाम् | ५. | गोपियों की | गोपीः | ११. | गोपियों के साथ |
| श्रुत्वा | ८. | सुनकर (और) | आत्मारामः | ३. | अपने आपमें ही रमण करने वाले |
| योगेश्वर | १. | योगेश्वरों के भी | अपि | ४. | होने पर भी |
| ईश्वरः । | २. | ईश्वर श्री कृष्ण ने | अरीरमत् ॥ | १२. | क्रीडा आरम्भ की |

श्लोकार्थ—योगेश्वरों के भी ईश्वर श्री कृष्ण ने अपने आप में ही रमण करने वाले होने पर भी गोपियों की इस प्रकार व्याकुलता भरी वाणी सुनकर और हँसकर दयापूर्वक गोपियों के साथ क्रीडा आरम्भ की ॥

## त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

**ताभिः समेताभिरुदारचेष्टितः प्रियेक्षणोत्फुल्लमुखीभिरच्युतः ।**
**उदारहासद्विजकुन्ददीधितिर्व्यरोचतैणाङ्क इवोडुभिर्वृतः ॥४३॥**

पदच्छेद— ताभिः समेताभिः उदार चेष्टितः प्रियईक्षण उत्फुल्ल मुखीभिः अच्युतः ।
उदारहास द्विज कुन्द दीधितिः व्यरोचत एणाङ्क इव उडुभिः वृतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ताभिः | ७. उन गोपियों के | उदारहास | ६. मधुर हंसी के कारण |
| समेताभिः | ८. साथ लीला की । तब | द्विज | १०. दाँतों के |
| उदार | १. उदार | कुन्द | ११. कुन्द पुष्प के समान |
| चेष्टितः | २. लीला तथा | दीधितिः | १२. चमक से वे |
| प्रियईक्षण | ३. प्रेम पूर्ण चितवन वाले | व्यरोचत | १६. सुशोभित हुये |
| उत्फुल्ल | ५. प्रसन्न | एणाङ्क इव | १५. चन्द्रमा के समान |
| मुखीभिः | ६. मुख वाली | उडुभिः | १३. तारिकाओं से |
| अच्युतः । | ४. श्रीकृष्ण ने | वृतः ॥ | १४. घिरे |

श्लोकार्थ—उदार लीला तथा प्रेम पूर्ण चितवन वाले श्रीकृष्ण ने प्रसन्न मुख वाली उन गोपियों के साथ लीला की । तब मधुर हँसी के कारण दाँतों के कुन्दपुष्प के समान चमक से वे तारिकाओं से घिरे चन्द्रमा के समान सुशोभित हुये ॥

## चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

**उपगीयमान उद्गायन् वनिताशतयूथपः ।**
**मालां बिभ्रद् वैजयन्तीं व्यचरन्मण्डयन् वनम् ॥४४॥**

पदच्छेद— उपगीयमानः उद्गायन् वनिता शत यूथपः ।
मालाम् बिभ्रद् वैजयन्तीम् व्यचरत् मण्डयन् वनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| उपगीयमानः | १०. कभी गोपियाँ कृष्ण के गीत गाती और | मालाम् | ५. माला |
| उद्गायन् | ११. कभी श्रीकृष्ण गोपियों के गीत गाते | बिभ्रद् | ६. पहने |
| वनिता | १. गोपियों के | वैजयन्तीम् | ४. वैजयन्ती |
| शत | २. शत-शत | व्यचरत् | ९. विचरण करने लगे |
| यूथपः । | ३. यूथों के स्वामी श्रीकृष्ण | मण्डयन् | ८. शोभायमान करते हुये |
| | | वनम् ॥ | ७. वृन्दावन को |

श्लोकार्थ—गोपियों के शत-शत यूथों के स्वामी श्रीकृष्ण वैजयन्ती माला पहने वृन्दावन को शोभायमान करते हुये विचरण करने लगे । कभी गोपियाँ श्रीकृष्ण के गीत गातीं और कभी श्रीकृष्ण गोपियों के गीत गाते थे ॥

## पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

नद्याः पुलिनमाविश्य गोपीभिर्हिमवालुकम् ।
रेमे तत्तरलानन्दकुमुदामोदवायुना ॥४५॥

पदच्छेद— नद्याः पुलिनम् आविश्य गोपीभिः हिम बालुकम् ।
रेमे तत् तरल आनन्द कुमुद आमोद वायुना ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| नद्याः | २. यमुना जी के | रेमे | १२. गोपियों के साथ क्रीड़ा की |
| पुलिनम् | ३. किनारे | तत् | ७. यमुना जी |
| आविश्य | ६. जाकर | तरल आनन्द | ८. शीतल आनन्द दायक |
| गोपीभिः | १. गोपियों के साथ | कुमुद | ९. कुमुदिनी की |
| हिम | ४. चमकीली | आमोद | १०. सुगन्ध से सुवासित |
| बालुकम् । | ५. बालू में | वायुना ॥ | ११. वायु में |

श्लोकार्थ— भगवान् श्रीकृष्ण ने तब गोपियों के साथ यमुना जी के किनारे चमकीली बालू में जाकर यमुना जी की शीतल आनन्द दायक कुमुदिनी की सुगन्ध से सुवासित वायु में गोपियों के साथ क्रीड़ा की ॥

## षट्चत्वारिंशः श्लोकः

बाहुप्रसारपरिरम्भकरालकोरुनीवीस्तनालभननर्मनखाग्रपातैः ।
क्ष्वेल्यावलोकहसितैर्व्रजसुन्दरीणामुत्तम्भयन् रतिपतिं रमयाञ्चकार ॥४६॥

पदच्छेद— बाहुप्रसार परिरम्भ कर अलक ऊरु नीवी स्तन आलभन नर्म नखाग्रपातैः ।
क्ष्वेल्या अवलोक हसितैः व्रज सुन्दरीणाम् उत्तम्भयन् रति पतिम् रमयाम् चकार ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| बहुप्रसार | १. हाथ फैलाना | क्ष्वेल्या | ९. विनोद पूर्ण |
| परिरम्भ | २. आलिङ्गन करना | अवलोक | १०. चितवन से देखना और |
| कर | ३. हाथ दबाना | हसितैः | ११. मुसकान आदि के द्वारा |
| अलक ऊरु | ४. चोटी जाँघ | व्रज सुन्दरीणाम् | १२. व्रज की सुन्दरियों को |
| नीवी स्तन | ५. नीवी और स्तन का | उत्तम्भयन् | १३. उत्तेजित करके |
| आलभन | ६. स्पर्श करना | रतिपतिम् | १४. श्रीकृष्ण ने उनके साथ |
| नर्म | ७. विनोद करना | रमयाम् | १५. रमण |
| नखाग्रपातैः । | ८. नखक्षत करना | चकार ॥ | १६ किया ॥ |

श्लोकार्थ—हाथ फैलाना, आलिङ्गन करना, हाथ दबाना, चोटी, जाँघ, नीवी और स्तन का स्पर्श करना, विनोद करना, नख क्षत करना, विनोद पूर्ण चितवन से देखना और मुसकान आदि के द्वारा व्रज की सुन्दरियों को उत्तेजित करके श्रीकृष्ण ने उनके साथ रमण किया ॥

## सप्तचत्वारिंश श्लोकः

एवं भगवतः कृष्णाल्लब्धमाना महात्मनः ।
आत्मानं मेनिरे स्त्रीणां मानिन्योऽभ्यधिकं भुवि ॥४७॥

पदच्छेद— एवम् भगवतः कृष्णात् लब्धमानाः महात्मनः ।
आत्मानम् मेनिरे स्त्रीणाम् मानिन्यः अभ्यधिकम् भुवि ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एवम् | ४. इस प्रकार | आत्मानम् | ६. उन्होंने अपने को |
| भगवतः | २. भगवान् | मेनिरे | १०. माना और वे |
| कृष्णात् | ३. श्रीकृष्ण के द्वारा | स्त्रीणाम् | ८. स्त्रियों में |
| लब्धमानाः | ५. सम्मान पाकर | मानिन्यः | ११. मानवती हो गईं |
| महात्मनः । | १. उदार शिरोमणि | अभ्यधिकम् | ९. सबसे श्रेष्ठ |
| | | भुवि ॥ | ७. पृथ्वी की |

श्लोकार्थ—उदारशिरोमणि भगवान् श्रीकृष्ण के द्वारा इस प्रकार सम्मान पाकर उन्होंने अपने को पृथ्वी की स्त्रियों में सबसे श्रेष्ठ माना और वे मानवती हो गईं ॥

## अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

तासां तत् सौभगमदं वीक्ष्य मानं च केशवः ।
प्रशमाय प्रसादाय तत्रैवान्तरधीयत ॥४८॥

पदच्छेद— तासाम् तत् सौभगमदम् वीक्ष्य मानम् च केशवः ।
प्रशमाय प्रसादाय तत्र एव अन्तर् अधीयत ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तासाम् | १. उनके | प्रशमाय | ७. उनका गर्व शान्त करने के लिये |
| तत् | २. उस | प्रसादाय | ८. और प्रसन्नकरने के लिये |
| सौभगमदम् | ३. सुहाग के गर्व को | तत्र | ९. वहाँ पर |
| वीक्ष्य | ५. देखकर | एव | १०. ही |
| मानम् च | ४. और मान को | अन्तर् | ११. अन्तर्धान |
| केशवः । | ६. श्रीकृष्ण ने | अधीयत ॥ | १२. हो गये |

श्लोकार्थ—उनके उस सुहाग के गर्व को और मान को देखकर श्रीकृष्ण ने उनका गर्व शान्त करने के लिये और (मानमर्दन करके) प्रसन्न करने के लिये वहीं पर अन्तर्धान हो गये ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमे स्कन्धे पूर्वार्धे भगवतो रास-क्रीडावर्णनं नाम एकोनत्रिंशः अध्यायः ॥२९॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## त्रिंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— अन्तर्हिते भगवति सहसैव व्रजाङ्गनाः ।
अतप्यंस्तमचक्षाणाः करिण्य इव यूथपम् ॥१॥

पदच्छेद— अन्तर्हिते भगवति सहसा एव व्रजाङ्गनाः ।
अतप्यन् तम् अचक्षाणाः करिण्यः इव यूथपम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अन्तर्हिते | ४. | अन्तर्धान हो जाने पर | अतप्यन् | ७. | विरह ज्वालामें वैसे ही जलने लगीं |
| भगवति | १. | भगवान् के | तम् अचक्षाणाः | ६. | उन्हें न देखकर |
| सहसा | २. | अकस्मात् | करिण्यः | ९. | हथिनियाँ |
| एव | ३. | ही | इव | ८. | जैसे |
| व्रजाङ्गनाः । | ५. | व्रज युवतियाँ | यूथपम् ॥ | १०. | हाथी के बिना जलती हैं |

श्लोकार्थ—भगवान् के अकस्मात् ही अन्तर्धान हो जाने पर व्रज युवतियाँ उन्हें न देखकर विरह ज्वाला में वैसे ही जलने लगीं जैसे हथिनियाँ हाथी के बिना जलती हैं ॥

### द्वितीयः श्लोकः

गत्यानुरागस्मितविभ्रमेक्षितैर्मनोरमालापविहारविभ्रमैः ।
आक्षिप्तचित्ताः प्रमदा रमापतेस्तास्ता विचेष्टा जगृहुस्तदात्मिकाः ॥२॥

पदच्छेद— गत्या अनुराग स्मित विभ्रम ईक्षितैः मनोरमआलाप विहार विभ्रमैः ।
आक्षिप्त चित्ताः प्रमदाः रमापतेः ताःताः विचेष्टाः जगृहुः तत् आत्मिकाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गत्या अनुराग | २. | चाल, प्रेम भरी | आक्षिप्तचित्ताः | १०. | चित्त चुरा लिया था |
| स्मितविभ्रम | ३. | मुसकान, विलास भरी | प्रमदाः | ९. | उन युवतियों का |
| ईक्षितैः | ४. | चितवन | रमापतेः | १. | भगवान् श्रीकृष्ण की |
| मनोरम | ५. | मनोरम | ताः ताः | ११. | श्रीकृष्ण की उन-उन |
| आलाप | ६. | प्रेमालाप और | विचेष्टाः | १२. | चेष्टाओं को |
| विहार | ८. | लीलाओं ने | जगृहुः | १४. | करने गयीं । |
| विभ्रमैः । | ७. | भिन्न-भिन प्रकार की | तत् आत्मिकाः ॥ | १३. | वे कृष्ण स्वरूप होकर |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण की चाल, प्रेम भरी मुसकान, विलास भरी चितवन, मनोरम प्रेमलाप और भिन्न-भिन्न प्रकार की लीलाओं ने उन युवतियों का चित चुरा लिया था । श्रीकृष्ण की उन-उन चेष्टाओं को वे कृष्ण स्वरूप होकर करने लगीं ॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## त्रिंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— अन्तर्हिते भगवति सहसैव व्रजाङ्गनाः ।
अतप्यंस्तमचक्षाणाः करिण्य इव यूथपम् ॥१॥

पदच्छेद— अर्न्तहिते भगवति सहसा एव व्रजाङ्गनाः ।
अतप्यन् तम् अचक्षाणाः करिण्यः इव यूथपम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अर्न्तहिते | ४. | अन्तर्धान हो जाने पर | अतप्यन् | ७. | विरह ज्वालामें वैसे ही जलने लगीं |
| भगवति | १. | भगवान् के | तम् अचक्षाणाः | ६. | उन्हें न देखकर |
| सहसा | २. | अकस्मात् | करिण्यः | ९. | हथिनियाँ |
| एव | ३. | ही | इव | ८. | जैसे |
| व्रजाङ्गनाः । | ५. | व्रज युवतियाँ | यूथपम् ॥ | १०. | हाथी के बिना जलती हैं |

श्लोकार्थ—भगवान् के अकस्मात् ही अन्तर्धान हो जाने पर व्रज युवतियाँ उन्हें न देखकर विरह ज्वाला में वैसे ही जलने लगीं जैसे हथिनियाँ हाथी के बिना जलती हैं ॥

### द्वितीयः श्लोकः

गत्यानुरागस्मितविभ्रमेक्षितैर्मनोरमालापविहारविभ्रमैः ।
आक्षिप्तचित्ताः प्रमदा रमापतेस्तास्ता विचेष्टा जगृहुस्तदात्मिकाः ॥२॥

पदच्छेद— गत्या अनुराग स्मित विभ्रम ईक्षितैः मनोरमआलाप विहार विभ्रमैः ।
आक्षिप्त चित्ताः प्रमदाः रमापतेः ताःताः विचेष्टाः जगृहुः तत् आत्मिकाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गत्या अनुराग | २. | चाल, प्रेम भरी | आक्षिप्तचित्ताः | १०. | चित्त चुरा लिया था |
| स्मितविभ्रम | ३. | मुसकान, विलास भरी | प्रमदाः | ९. | उन युवतियों का |
| ईक्षितैः | ४. | चितवन | रमापतेः | १. | भगवान् श्रीकृष्ण की |
| मनोरम | ५. | मनोरम | ताः ताः | ११. | श्रीकृष्ण की उन-उन |
| आलाप | ६. | प्रेमालाप और | विचेष्टाः | १२. | चेष्टाओं को |
| विहार | ८. | लीलाओं ने | जगृहुः | १४. | करने लगीं । |
| विभ्रमैः । | ७. | भिन्न-भिन प्रकार की | तत् आत्मिकाः ॥ | १३. | वे कृष्ण स्वरूप होकर |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण की चाल, प्रेम भरी मुसकान, विलास भरी चितवन, मनोरम प्रेमलाप और भिन्न-भिन्न प्रकार की लीलाओं ने उन युवतियों का चित चुरा लिया था । श्रीकृष्ण की उन-उन चेष्टाओं को वे कृष्ण स्वरूप होकर करने लगीं ॥

## तृतीयः श्लोकः

**गतिस्मितप्रेक्षणभाषणादिषु प्रियाः प्रियस्य प्रतिरूढमूर्तयः ।**
**असावहं त्वित्यबलास्तदात्मिका न्यवेदिषुः कृष्णविहारविभ्रमाः ॥३॥**

पदच्छेद— गति स्मित प्रेक्षण भाषण आदिषु प्रियाः प्रियस्य प्रतिरूढ मूर्तयः ।
असौ अहम् तु इति अबलाः तत् आत्मिकाः न्यवेदिषुः कृष्ण विहार विभ्रमः ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| गति | २. चाल-ढाल | असौ अहम् तु | १२. मैं श्रीकृष्ण ही हूँ |
| स्मित | ३. हास-विलास | इति | १३. इस प्रकार |
| प्रेक्षण | ४. चितवन | अबलाः | ११. गोपियाँ |
| भाषण आदिषु | ५. बोलने आदि में | तत् | १५. कृष्ण |
| प्रियाः | ६. प्यारी गोपियाँ | आत्मिकाः | १६. स्वरूप ही हो गईं |
| प्रियस्य | १. प्रियतम श्रीकृष्ण की | न्यवेदिषुः | १४. कहती हुईं |
| प्रतिरूढ | ८. बन गयीं | कृष्ण विहार | ९. श्रीकृष्ण की लीलाओं का |
| मूर्तयः । | ७. उन्हीं की मूर्ति | विभ्रमः ॥ | १०. अनुकरण करने लगीं |

श्लोकार्थ—प्रियतम श्रीकृष्ण की चाल-ढाल-हास-विलास-बोलने आदि में प्यारी गोपियाँ उन्हीं की मूर्ति बन गईं । श्रीकृष्ण की लीलाओं का अनुकरण करने लगीं । गोपियाँ मैं श्रीकृष्ण हूँ इस प्रकार कहती हुई कृष्ण स्वरूप हो हो गईं ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**गायन्त्य उच्चैरमुमेव संहता विचिक्युरुन्मत्तकवद् वनाद् वनम् ।**
**पप्रच्छुराकाशवदन्तरं बहिर्भूतेषु सन्तं पुरुषं वनस्पतीन् ॥४॥**

पदच्छेद— गायन्त्यः उच्चैः अमुम् एव संहताः विचिक्युः उन्मत्तकवद् वनात् वनम् ।
पप्रच्छुः आकाशवत् अन्तरम् बहिः भूतेषु सन्तम् पुरुषम् वनस्पतीन् ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| गायन्त्यः | ३. गान करने लगीं | पप्रच्छुः | १४. पूछने लगीं |
| उच्चैः अमुम् | १. वे ऊँचे स्वर से श्रीकृष्ण के गुणों का | आकाशवत् | ८. आकाश के समान |
| एव संहताः | २. ही मिलकर | अन्तरम् बहिः | १०. भीतर-बाहर |
| विचिक्युः | ७. ढूंढने लगीं | भूतेषु | ९. समस्त प्राणियों के |
| उन्मत्तकवद् | ४. मतवाली जैसी होकर | सन्तम् | ११. रहने पर भी वे |
| वनात् | ५. एक वन से | पुरुषम् | १२. परम पुरुष श्रीकृष्ण के बारे में |
| वनम् । | ६. दूसरे वन में उन्हें | वनस्पतीन् ॥ | १३. पेड़ पौधों से |

श्लोकार्थ—वे गोपी ऊँचे स्वर से श्रीकृष्ण के गुणों का ही मिलकर गान करने लगीं । तथा मतवाली जैसी होकर एक वन से दूसरे वन में उन्हें ढूंढने लगीं । आकाश के समान समस्त प्राणियों के भीतर-बाहर रहने पर भी वे परम पुरुष श्रीकृष्ण के बारे में पेड़ पौधों से पूछने लगीं ॥

## पञ्चमः श्लोकः

दृष्टो वः कच्चिदश्वत्थ प्लक्ष न्यग्रोध नः मनः ।
नन्दसूनुर्गतः हृत्वा प्रेमहासावलोकनैः ॥५॥

पदच्छेद— दृष्टः वः कच्चित् अश्वत्थ प्लक्ष न्यग्रोध नः मनः ।
नन्द सूनुः गतः हृत्वा प्रेम हास अवलोकनैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दृष्टः | १४. देखा है | नन्द | ४. नन्द |
| वः | १२. आपने | सूनुः | ५. नन्दन श्याम सुन्दर |
| कच्चित् | १३. उन्हें कहीं | गतः | ११. ले गये हैं |
| अश्वत्थ | १. हे पीपल ! | हृत्वा | १०. चुराकर |
| प्लक्ष | २. पाकर और | प्रेम | ६. अपनी प्रेम भरी |
| न्यग्रोध | ३. बरगद | हास | ७. मुसकान और |
| नः मनः । | ९. हमारा मन | अवलोकनैः ॥ | ८. चितवन से |

श्लोकार्थ—हे पीपल, पाकर, और बरगद ! नन्दनन्दन श्यामसुन्दर अपनी प्रेम भरी मुसकान और मनोहर चितवन से हमारा मन चुराकर ले गये हैं । उन्हें कहीं आपने देखा है ॥

## षष्ठः श्लोकः

कच्चित् कुरबकाशोकनागपुन्नागचम्पकाः ।
रामानुजो मानिनीनामितो दर्पहरस्मितः ॥६॥

पदच्छेद— कच्चित् कुरबक अशोक नाग पुन्नाग चम्पकाः ।
राम अनुजः मानिनीनाम् इतः दर्पहर स्मितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कच्चित् | ११. क्या | राम | ६. बलराम जी के |
| कुरबक | १. कुरबक | अनुजः | ७. छोटे भाई |
| अशोक | २. अशोक | मानिनीनाम् | ९. मानिनियों का |
| नाग | ३. नागकेसर | इतः | १२. इधर आये थे |
| पुन्नाग | ४. पुन्नाग और | दर्पहर | १०. मानमर्दन होता है |
| चम्पकाः । | ५. चम्पा ! | स्मितः ॥ | ८. जिनकी मुसकान मात्र से |

श्लोकार्थ—हे कुरबक ! अशोक, नागकेसर, पुन्नाग और चम्पा ! बलराम जी के छोटे भाई, जिनकी मुसकान मात्र से मानिनियों का मानमर्दन होता है, क्या इधर आये थे ॥

## सप्तमः श्लोकः

कच्चित्तुलसि कल्याणि गोविन्दचरणप्रिये ।
सह त्वालिकुलैर्बिभ्रद् दृष्टस्तेऽतिप्रियोऽच्युतः ॥७॥

पदच्छेद— कच्चित् तुलसि कल्याणि गोविन्द चरण प्रिये ।
सह त्वाअलिकुलैः बिभ्रद् दृष्टः ते अतिप्रियः अच्युतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| कच्चित् | ९. क्या | सहत्वा | ७. | साथ तुझे |
| तुलसि | २. तुलसी | अलिकुलैः | ६. | वे भौंरों के समूह के |
| कल्याणि | १. हे कल्याणि ! | बिभ्रद् | ८. | धारण करते हैं |
| गोविन्द | ३. तुम्हारा तो भगवान् के | दृष्टः | १२. | दिखाई पड़े हैं |
| चरण | ४. चरणों में | ते अतिप्रियः | १०. | तुम्हें अत्यन्त प्रिय |
| प्रिये । | ५. बड़ा प्रेम है | अच्युतः ॥ | ११. | श्रीकृष्ण |

श्लोकार्थ—हे कल्याणि तुलसी ! तुम्हारा तो भगवान् के चरणों में बड़ा प्रेम है । वे भौंरों के समूह के साथ तुझे धारण करते हैं । क्या तुम्हें अत्यन्त प्रिय श्रीकृष्ण दिखाई पड़े है ॥

## अष्टमः श्लोकः

मालत्यदर्शि वः कच्चिन्मल्लिके जाति यूथिके ।
प्रीतिं वो जनयन् यातः करस्पर्शेन माधवः ॥८॥

पदच्छेद— मालति अर्दशि वः कच्चित् मल्लिके जाति यूथके ।
प्रीतिम् वः जनयन् यातः करस्पर्शेन माधवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मालति | १. प्यारी मालती ! | प्रीतिम् | १०. | आनन्द |
| अर्दशि | ७. देखा होगा | वः | ९. | आपको |
| वः | ४. तुम लोगों ने | जनयन् | ११. | प्रदान करते हुये वे |
| कच्चित् | ५. कदाचित् | यातः | १२. | यहाँ से निकले हैं |
| मल्लिके | २. मल्लिके | करस्पर्शेन | ८. | क्या अपने करों के स्पर्श से |
| जातियूथके । | ३. जाती और जूही | माधवः ॥ | ६. | प्यारे माधव को |

श्लोकार्थ-- प्यारी मालती ! मल्लिके, जाती और जूही ! तुम लोगों ने कदाचित् प्यारे माधव को देखा होगा । आपको आनन्द प्रदान करते हुये वे यहाँ से निकले हैं ॥

## नवमः श्लोकः

**चूतप्रियालपनसासनकोविदारजम्ब्वर्कबिल्वबकुलाम्रकदम्बनीपाः ।**
**येऽन्ये परार्थभवका यमुनोपकूलाः शंसन्तु कृष्णपदवीं रहितात्मनां नः ॥९॥**

पदच्छेद— चूत प्रियाल पनस असन कोविदार जम्बु अर्क बिल्व कुल आम्र कदम्ब नीपाः ।
ये अन्ये परार्थ भवका यमुना उपकूलाः शंसन्तु कृष्ण पदवीम् रहित आत्मनाम् नः ॥

| शब्दार्थ | | | |
|---|---|---|---|
| चूतप्रियाल | १. हे रसाल ! प्रियाल | ये अन्येपरार्थं | ८. अन्यान्य परोपकार के लिये ही |
| पनस असन | २. कटहल पीतशाल | भवकाः | १०. उत्पन्न हुये तरुवरों |
| कोविदारजम्बु | ३. कचनार जामुन | यमुनाउपकूलाः | ९. यमुना के तट पर |
| अर्क बिल्व | ४. आक बेल | शंसन्तु | १४. हमारा मार्गदर्शन करो |
| वकुलआम्र | ५. मौलसिरी-आम | कृष्णपदवीम् | १२. श्रीकृष्ण की प्राप्ति के |
| कदम्ब | ६. कदम्ब और | रहित | १३. बिना सूना हो रहा है |
| नीपाः । | ७. नीम तथा | आत्मानमनः ॥ | ११. हमारा जीवन |

श्लोकार्थ—हे रसाल, प्रियाल, कटहल, पीतशाल, कचनार, जामुन, आक, बेल, मौलसिरी, आम कदम्ब और नीम तथा अन्यान्य परोपकार के लिये यमुना के तट पर उत्पन्न हुये तरुवरों ! हमारा जीवन श्रीकृष्ण की प्राप्ति के बिना सूना हो रहा है । हमारा मार्गदर्शन करो ॥

## दशमः श्लोकः

**किं ते कृतं क्षिति तपो बत केशवाङ्घ्रिस्पर्शोत्सवोत्पुलकिताङ्गरुहैर्विभासि ।**
**अप्यङ्घ्रिसम्भव उरुक्रमविक्रमाद् वा आहो वराहवपुषः परिरम्भणेन ॥१०॥**

पदच्छेद—किम् ते कृतम् क्षितितपः बत केशव अङ्घ्रि स्पर्शः उत्सवः उत पुलकित अङ्ग रुहैः विभासि ।
अपि अङ्घ्रि सम्भव उरु क्रम विक्रमात् वा आहो वराह वपुषः परिरम्भणेन ॥

| शब्दार्थ | | | |
|---|---|---|---|
| किम्ते | ३. तुमने कौन सी | पुलकित | १०. रोमाञ्चित होकर |
| कृतम् | ५. की है जो तुम | अङ्गरुहैः | ९. तृण-लतारूप से |
| क्षिति | २. हे पृथ्वी देवी ! | विभासि । | ११. सुशोभित हो रही हो |
| तपः | ४. तपस्या | अपिअङ्घ्रि | १४. चरण से स्पर्श किया था |
| बत | १. अहो | सम्भव | १३. धारण करके जो आपका |
| केशव अङ्घ्रि | ६. श्रीकृष्ण के चरण कमलों के | उरुक्रमविक्रमात्वा | १२. अथवा वामनावतार में विश्वरूप |
| स्पर्शाः | ७. स्पर्श से | आहो वाराह वपुषः | १५. या वाराहरूप धारण करके जो |
| उत्सव उत | ८. प्रसन्न होकर और | परिरम्भणेन ॥ | १६. सङ्गप्राप्तकिया या उससे यह दशा है अथवा |

श्लोकार्थ—अहो हे पृथ्वी देवी ! तुमने कौन सी तपस्या की है । जो तुम श्रीकृष्ण के चरण कमलों के स्पर्श से प्रसन्न हो कर तृण-लतारूप से रोमञ्चित होकर सुशोभित हो रही हो । वामनावतार में विश्वरूप धारण करके जो आपका चरण से स्पर्श किया था । या वाराह रूप धारण करके जो अङ्ग सङ्ग प्राप्त किया था । उससे यह दशा है ॥

## एकादशः श्लोकः

**अप्येणपत्न्युपगतः प्रिययेह गात्रैस्तन्वन् दृशां सखि सुनिर्वृतिमच्युतो वः ।**
**कान्ताङ्गसङ्गकुचकुङ्कुमरञ्जितायाः कुन्दस्रजः कुलपतेरिह वाति गन्धः ॥११॥**

पदच्छेद— अप्येणपत्न्यु उपगतः प्रियया इहगात्रैः तन्वन् दृशाम् सखि सुनिवृतिम् अच्युताः वः ।
कान्ता अङ्ग-सङ्ग कुचकुङ्कुम रञ्जितायाः कुन्दस्रजः कुलपतेः इह वाति गन्धः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अप्येणपत्नि | २. अरीहरिण पत्नियों ! | वः । | ६. तुम्हारे |
| उपगतः प्रियया | ५. अपनी प्राण प्रिया के साथ | कान्ता | १३. जो उनकी प्रेयसी के |
| इह गात्रैः | ३. यहाँ शरीर को सुख देने वाले | अङ्ग-सङ्ग | १४. अङ्ग-सङ्ग से लगे हुये |
| तन्वन् | ६. दान करने तो नहीं आये | कुचकुङ्कुम | १५. कुचकुङ्कुम से |
| दृशाम् | ७. नयनों को | रञ्जितायाः | १६. अनुरञ्जित रहती है |
| सखि | १. हे सखी ! | कुन्दस्रजः | ११. कुन्दकली की माला की |
| सुनिर्वृतिम् | ८. परम आनन्द का | कुलपतेः | १०. कुलपति श्रीकृष्ण को |
| अच्युतः | ४. श्याम सुन्दर | इह वाति गन्धः ॥ | १२. मनोहर गन्ध यहाँ आ रही है |

श्लोकार्थ— हे सखी ! अरी हरिण पत्नियों ! यहाँ शरीर को सुख देने वाले श्याम सुन्दर अपनी प्राण प्रिया के साथ तुम्हारे नयनों को परम आनन्द का दान करने तो नहीं आये। कुलपति श्रीकृष्ण की कुन्द कली की माला की मनोहर गन्ध यहाँ आ रही है। जो उनकी प्रेयसी के अङ्ग सङ्ग से लगे हुये कुचकुङ्कुम से अनुरञ्जित रहती है ॥

## द्वादशः श्लोकः

**बाहुं प्रियांस उपधाय गृहीतपद्मो रामानुजस्तुलसिकालिकुलैर्मदान्धैः ।**
**अन्वीयमान इह वस्तरवः प्रणामं किं वाभिनन्दति चरन् प्रणयावलोकैः ॥१२॥**

पदच्छेद— बाहुम् प्रिय अंसे उपधाय गृहीत पद्मः राम अनुजः तुलसिका अलिकुलैः मदान्धैः ।
अन्वीयमानः इह वः तरवः प्रणामम् किम् वा अभिनन्दति चरन् प्रणय अवलोकैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| बाहुम् प्रिय | ६. एक हाथ अपनी प्रेयसी के | अन्वीयमानः | १०. विचरण करते हुये |
| अंसे उपधाय | ७. कन्धे पर रखे और दूसरे में | इह वः | ११. यहाँ उन्होंने आपके |
| गृहीत पद्मः | ८. लीला कमल लिये होंगे | तरवः | १. हे तरुवरो ! |
| राम अजः | ५. बलराम जी के छोटे भाईश्रीकृष्ण | प्रणामम् | १२. प्रणाम का |
| तुलसिका | २. उनकी माला की तुलसी पर | किम् वा | ६. अथवा क्या |
| अलिकुलैः | ४. भौंरे मंडराते रहते हैं | अभिनन्दति चरन् | १४. अभिनन्दन करते हुये उत्तर दिया है |
| मदान्धैः । | ३. मदान्ध | प्रणय अवलोकैः ॥ | १३. अपनी प्रेम पूर्ण चितवन से |

श्लोकार्थ—हे तरुवरो ! उनकी माला की तुलसी में मदान्ध भौंरे मडराते रहते हैं। बलराम जी के छोटे भाई श्रीकृष्ण एक हाथ अपनी प्रेयसी के कन्धे पर रखे और दूसरे में लीला कमल लिये होंगे। अथवा क्या विचरण करते हुये यहाँ पर उन्होंने आपके प्रणाम का अपनी प्रेम पूर्ण चितवन से अभिनन्दन करते हुये उत्तर दिया है ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

पृच्छतेमा लता बाहूनप्याश्लिष्टा वनस्पतेः ।
नूनं तत्करजस्पृष्टा बिभ्रत्युत्पुलकान्यहो ॥१३॥

पदच्छेद— पृच्छत इमाः लताः बाहून् अपि आश्लिष्टाः वनस्पतेः ।
नूनम् तत् करज स्पृष्टा बिभ्रति उत् पुलकानि अहो ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| पृच्छत | ३. पूछो जो | | नूनम् | ९. निश्चय ही |
| इमाः | १. इन | | तत् | १०. उन्हीं श्याम सुन्दर के |
| लताः | २. लताओं से | | करज | ११. नखों के |
| बाहून् | ६. अपनी भुजाओं से | | स्पृष्टाः | १२. स्पर्श से ये |
| अपि | ५. भी | | बिभ्रति | १४. हो रही हैं |
| आश्लिष्टाः | ७. आलिङ्गन कर रही हैं | | उत् पुलकानि | १३. पुलकाय मान |
| वनस्पतेः । | ४. अपने पति वृक्षों का | | अहो ॥ | ८. अहो |

श्लोकार्थ—इन लताओं से पूछो ! जो अपने पति वृक्षों का भी आलिङ्गन कर रही हैं । अहो निश्चय ही उन्हीं श्याम सुन्दर के नखों के स्पर्श से ये पुलकायमान हो रही हैं ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

इत्युन्मत्तवचो गोप्यः कृष्णान्वेषणकातराः ।
लीला भगवतस्तास्ता ह्यनुचक्रुस्तदात्मिकाः ॥१४॥

पदच्छेद— इति उन्मत्त वचः गोप्यः कृष्ण अन्वेषण कातराः ।
लीलाः भगवतः ताः ताः हि अनुचक्रुः तत् आत्मिकाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| इति | १. इस प्रकार | लीला | १३. लीलाओं का |
| उन्मत्त | २. मतवाली | भगवतः | १०. भगवान् की |
| वचः | ४. प्रलाप करती हुई | ताः | ११. उन |
| गोप्यः | ३. गोपियाँ | ताः | १२. उन |
| कृष्ण | ५. श्रीकृष्ण को | हि अनुचक्रुः | १४. अनुकरण करने लगीं |
| अन्वेषण | ६. ढूंढते-ढूंढते | तत् | ८. भगवत् |
| कातराः । | ७. कातर हो रही थीं (और) | आत्मिकाः ॥ | ९. स्वरूप होकर वे |

श्लोकार्थ—इस प्रकार मतवाली गोपियाँ प्रलाप करती हुई श्रीकृष्ण को ढूंढते-ढूंढते कातर हो रही थीं । और भगवत् स्वरूप होकर वे भगवान् की उन-उन लीलाओं का अनुकरण करने लगीं ॥

## पञ्चदश : श्लोकः

कस्याश्चित् पूतनायन्त्याः कृष्णायन्त्यपिबत् स्तनम् ।
तोकायित्वा रुदत्यन्या पदाहञ्छकटायतीम् ॥१५॥

पदच्छेद— कस्याश्चित् पूतनायन्त्याः कृष्णायन्ती अपिबत् स्तनम् ।
तोकायित्वा रुदती अन्या पदा अहन् शकटा आयतीम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कस्याश्चित् | १. कोई एक गोपी | तोकायित्वा | ८. बालकृष्ण बनकर |
| पूतना | २. पूतना | रुदती | ९. रोते हुये |
| यन्त्याः | ३. बन गयी | अन्या | ७. अन्य किसी ने |
| कृष्णायन्ती | ४. दूसरी कृष्ण बनकर | पदाहन् | १२. पैर से उलट दिया |
| अपिबत् | ६. पीने लगी | शकटा | १०. छकड़ा |
| स्तनम् । | ५. उसका स्तन | यतीम् ॥ | ११. बनी हुई गोपी को |

श्लोकार्थ—कोई एक गोपी पूतना बन गयी। दूसरी कृष्ण बन कर उसका स्तन पीने लगी। अन्य किसी ने बाल कृष्ण बन कर रोते हुये छकड़ा बनी हुई गोपी को पैर से उलट दिया ॥

## षोडशः श्लोकः

दैत्यायित्वा जहारान्यामेका कृष्णार्भभावनाम् ।
रिङ्गयामास काप्यङ्घ्री कर्षन्ती घोषनिःस्वनैः ॥१६॥

पदच्छेद— दैत्यायित्वा जहार अन्याम् एका कृष्ण अर्भ भावनाम् ।
रिङ्गयामास कापि अङ्घ्री कर्षन्ती घोष निःस्वनैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दैत्या | ४. कोई दैत्य का | रिङ्गयामास | ९. चलने लगी। तब |
| यित्वा | ५. रूप धर कर | कापि | ७. कोई गोपी |
| जहार अन्याम् | ६. उसे हर ले गयी | अङ्घ्री | ८. घुटनों के बल |
| एका | १. कोई एक सखी | कर्षन्ती | १०. घिसटते हुये उसकी |
| कृष्ण अर्भ | २. बाल कृष्ण | घोष | १२. ध्वनि करने लगे |
| भावनाम् । | ३. बन कर बैठ गई | निःस्वनैः ॥ | ११. पायजेब के घुंघरू |

श्लोकार्थ - कोई एक सखी बाल कृष्ण बनकर बैठ गयी। कोई दैत्य का रूप धर कर उसे हर ले गयी। कोई गोपी घुटनों के बल चलने लगी। तब घिसटते हुये उसकी पायजेब के घुंघरू ध्वनि करने लगे ॥

## सप्तदशः श्लोकः

कृष्णरामायिते द्वे तु गोपायन्त्यश्च काश्चन ।
वत्सायतीं हन्ति चान्या तत्रैका तु बकायतीम् ॥१७॥

पदच्छेद— कृष्णरामायिते द्वे तु गोपायन्त्यः च कश्चन ।
वत्सायतीम् हन्ति च अन्या तत्र एका तु बकायतीम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कृष्ण | २. श्रीकृष्ण और | वत्सायतीम् | ७. कोई बत्सासुर बनो |
| रामायिते | ३. बलराम बन गयीं | हन्ति | १२. मारने को लीला की |
| द्वै तु | १. दो गोपियाँ | च | ८. और |
| गोपायन्त्यः | ६. ग्वाल बाल बन गयीं | अन्या तत्र | ११. वहाँ अन्य गोपियों ने उन्हें |
| च | ४. और | एका तु | ९. एक गोपी |
| काश्चन । | ५. बहुत सी गोपियाँ | बकायतीम् ॥ | १०. बकासुर बनी |

श्लोकार्थ—दो गोपियाँ श्रीकृष्ण और बलराम बन गयीं । और बहुत सी गोपियाँ ग्वाल-बाल बन गयीं । कोई बत्सासुर बनो । और एक गोपी बकासुर बनी । वहाँ अन्य गोपियों ने उन्हे मारने की लीला की ॥

## अष्टादशः श्लोकः

आहूय दूरगा यद्वत् कृष्णस्तमनुकुर्वतीम् ।
वेणुं क्वणन्तीं क्रीडन्तीमन्याः शंसन्ति साध्विति ॥१८॥

पदच्छेद— आहूय दूरगा यत् वत् कृष्णः तम् अनुकुर्वतीम् ।
वेणुम् क्वणन्तीम् क्रीडन्तीम् अन्याः शंसन्ति साधु इति ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| आहूय | ४. बुलाते थे वैसे ही | वेणुम् | ७. और बंशी |
| दूरगाः | ३. दूर गये हुये पशुओं को | क्वणन्तीम् | ८. बजा-बजा कर |
| यत् वत् | १. जैसे | क्रीडन्तीम् | ९. क्रीडा करने लगीं तब |
| कृष्णः | २. श्रीकृष्ण | अन्याः | १०. अन्य गोपियाँ |
| तम् | ५. वह उनका | शंसन्ति | १२. प्रशंसा करने लगीं |
| अनुकुर्वतीम् । | ६. अनुकरण करने लगीं | साध्विति ॥ | ११. वाह-वाह कह कर उसकी |

श्लोकार्थ—जैसे श्रीकृष्ण दूर गये हुये पशुओं को बुलाते थे वैसे ही वह उनका अनुकरण करने लगीं । और बंशी बजा-बजा कर क्रीडा करने लगीं । तब अन्य गोपियाँ वाह-वाह कह कर उसकी प्रशंसा करने लगीं ।

## एकोनविंशः श्लोकः

कस्यांचित् स्वभुजं न्यस्य चलन्त्याहापरा ननु ।
कृष्णोऽहं पश्यत गतिं ललितामिति तन्मनाः ॥१९॥

पदच्छेद— कस्याम् चित् स्वभुजम् न्यस्य चलन्ती आह अपरा ननु ।
कृष्णः अहम् पश्यत गतिम् ललिताम् इति तन्मनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कस्याम् चित् | १. कोई एक गोपी | कृष्णः | ९. श्रीकृष्ण हूँ |
| स्वभुजम् | २. अपनी भुजा को | अहम् | ८. मैं |
| न्यस्य | ३. अन्य गोपी के गले में डालकर | पश्यत | १४. देखो |
| चलन्ती | ४. चलती हुई | गतिम् | १३. चाल को तो |
| आह | ६. कहने लगी | ललिताम् | १२. मेरी मनोहर |
| अपरा | ५. अन्य सखी से | इति | १०. इस प्रकार |
| ननु । | ७. निश्चय ही | तन्मनाः ॥ | ११. श्रीकृष्णमय होकर बोली |

श्लोकार्थ—कोई एक गोपी अपनी भुजा को अन्य गोपी के गले में डाल कर अन्य सखी से कहने लगी निश्चय ही मैं श्रीकृष्ण हूँ। इस प्रकार श्रीकृष्णमय होकर बोली। मेरी मनोहर चाल को तो देखो ॥

## विंशः श्लोकः

मा भैष्ट वातवर्षाभ्यां तत्त्राणं विहितं मया ।
इत्युक्त्वैकेन हस्तेन यतन्त्युन्निदधेऽम्बरम् ॥२०॥

पदच्छेद— मा भैष्ट वात वर्षाभ्याम् तत्त्राणम् विहितम् मया ।
इति उक्त्वा एकेन हस्तेन यतन्ती उन्निदधे अम्बरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| मा | ३. मत | इति | ८. ऐसा |
| भैष्ट | ४. डरो | उक्त्वा | ९. कह कर |
| वात | १. कोई कहती आँधी और | एकेन | १०. एक |
| वर्षाभ्याम् | २. वर्षा से | हस्तेन | ११. हाथ से |
| तत्त्राणम् | ६. उससे रक्षा का उपाय | यतन्ती | १२. प्रयत्न करते हुये उसने |
| विहितम् | ७. कर लिया है | उन्निदधे | १४. ऊपर तान ली |
| मया। | ५. मैंने | अम्बरम् ॥ | १३. अपनी ओढ़नी |

श्लोकार्थ—कोई कहती आँधी और वर्षा से मत डरो। मैंने उससे रक्षा का उपाय कर लिया है। ऐसा कह कर एक हाथ से प्रयत्न करते हुये उसने अपनी ओढ़नी ऊपर तान ली ॥

## एकविंशः श्लोकः

आरुह्यैका पदाऽऽक्रम्य शिरस्याहापरां नृप ।
दुष्टाहे गच्छ जातोऽहं खलानां ननु दण्डधृक् ॥२१॥

पदच्छेद— आरुह्य एका पदा आक्रम्य शिरसि आह अपराम् नृप ।
दुष्ट अहे गच्छ जातः अहम् खलानाम् ननु दण्डधृक् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| आरुह्य | ६. चढ़ कर | दुष्ट अहे | ९. हे दुष्ट ! नाग |
| एका | २. एक गोपी | गच्छ | १०. यहाँ से भाग जा |
| पदा | ४. एक पैर | जातः | १४. उत्पन्न हुआ हूँ |
| आक्रम्य | ५. रख कर और | अहम् | ११. क्योंकि मैं |
| शिरसि | ३. कालियनाग के सिर पर | खलानाम् | १२. दुष्टों को |
| आह अपराम् | ७. अन्य गोपी से बोली | ननु | ८. निश्चय ही |
| नृप । | १. हे परीक्षित् ! | दण्डधृक् ॥ | १३. दण्ड देने के लिये ही |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! एक गोपी कालियनाग के सिर पर एक पैर रख कर और चढ़ कर अन्य गोपी से बोली । निश्चय ही हे दुष्ट ! नाग यहाँ से भाग जा । क्योंकि मैं दुष्टों को दण्ड देने के लिये ही उत्पन्न हुआ हूँ ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

तत्रैकोवाच हे गोपा दावाग्निं पश्यतोल्बणम् ।
चक्षूंष्याश्वपिदध्वं वो विधास्ये क्षेममञ्जसा ॥२२॥

पदच्छेद— तत्र एका उवाच हे गोपाः दावाग्निम् पश्यत उल्बणम् ।
चक्षूंषि आशु अपिदध्वम् वो विधास्ये क्षेमम् अञ्जसा ॥

शब्दार्थ —

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत्र एका | १. तब एक गोपी | चक्षूंषि आशु | ७. शीघ्र ही अपने नेत्र |
| उवाच | २. बोली | अपिदध्वम् | ८. बन्द कर लो |
| हे गोपाः | ३. अरे ग्वालों ! | वः | १०. तुम लोगों |
| दावाग्निम् | ६. दावानल लगी है | विधास्ये | १२. कर लूंगा |
| पश्यत | ४. देखो | क्षेमम् | ११. रक्षा |
| उल्बणम् । | ५. बड़ी भयंकर | अञ्जसा ॥ | ९. मैं अनायास ही |

श्लोकार्थ—तब एक गोपी बोली ! अरे ग्वालों ! देखो बड़ी भयंकर दावानल लगी है । शीघ्र ही अपने नेत्र बन्द कर लो । मैं अनायास हीं तुम लोगों की रक्षा कर लूंगा ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**बद्धान्यया स्रजा काचित्तन्वी तत्र उलूखले ।**
**भीता सुदृक् पिधायास्यं भेजे भीतिविडम्बनम् ॥२३॥**

पदच्छेद— बद्धा अन्यया स्रजा काचित् तन्वी तत्र उलूखले ।
भीता सुदृक् पिधाय अस्यम् भेजे भीति विडम्बनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| बद्ध | ७. बाँध दिया | भीता | ११. भयभीत जैसी |
| अन्यया | २. अन्य | सुदृक् | ८. अब वह सुन्दरी गोपी |
| स्रजा | ५. फूलों की माला से | पिधाये | १०. ढाप कर |
| काचित् | ४. किसी गोपी ने उन्हें | अस्यम् | ९. मुँह |
| तन्वी | ३. कृशाङ्गी | भेजे | १४. करने लगी |
| तत्र | १. वहाँ | भीति | १२. भय की |
| उलूखले । | ६. ऊखल से | विडम्बनम् ॥ | १३. नकल |

श्लोकार्थ—वहाँ अन्य कृशाङ्गी किसी गोपी ने उन्हें फूलों की माला से ऊखल में बाँध दिया । तब वह सुन्दरी गोपी हाथों से मुँह ढाँप कर भयभीत जैसी भय की नकल करने लगी ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**एवं कृष्णं पृच्छमाना वृन्दावनलतास्तरून् ।**
**व्यचक्षत वनोद्देशे पदानि परमात्मनः ॥२४॥**

पदच्छेद— एवम् कृष्णम् पृच्छमाना वृन्दावन लताः तरून् ।
व्यचक्षत वन उद्देशे पदानि परमात्मनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एवम् | १. इस प्रकार गोपियाँ | व्यचक्षत | १२. देखे |
| कृष्णम् | ५. श्रीकृष्ण का पता | वन | ७. तभी उन्होंने वन में |
| पृच्छमाना | ६. पूछने लगीं | उद्देशे | ८. एक स्थान पर |
| वृन्दावन | २. वृन्दावन के | पदानि | ११. चरण चिह्न |
| लताः | ४. लता आदि से | परम | ९. परम |
| तरून् । | ३. वृक्ष और | आत्मनः ॥ | १०. आत्मा (परमत्मा श्याम सुन्दर के) |

श्लोकार्थ—इस प्रकार गोपियाँ वृन्दावन के वृक्ष और लता-आदि से श्रीकृष्ण का पता पूछने लगीं । तभी उन्होंने वन में एक स्थान पर परमात्मा श्याम सुन्दर के चरण चिह्न देखे ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**पदानि व्यक्तमेतानि नन्दसूनोर्महात्मनः ।**
**लक्ष्यन्ते हि ध्वजाम्भोजवज्राङ्कुशयवादिभिः ॥२५॥**

पदच्छेद— पदानि व्यक्तम् एतानि नन्द सूनोः महात्मनः ।
लक्ष्यन्ते हि ध्वज अम्भोज वज्र अङ्कुश यव आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **पदानि** | ५. चरण हैं क्योंकि | लक्ष्यन्ते | १०. दिखाई दे रहे हैं |
| **व्यक्तम्** | १. अवश्य ही | हि ध्वज | ६. इनमें ध्वज |
| **एतानि** | २. ये | अम्भोज | ७. कमल |
| **नन्दसूनोः** | ४. नन्द नन्दन के | वज्रअङ्कुश | ८. वज्र अङ्कुश |
| **महात्मनः ।** | ३. उदार शिरोमणि | यव आदिभिः ॥ | ९. जौ आदि के चिह्न |

श्लोकार्थ—अवश्य ही ये उदार शिरोमणि नन्द नन्दन के चरण हैं। क्योंकि इनमें ध्वज, कमल, वज्र, अङ्कुश, जौ आदि के चिह्न दिखाई दे रहे हैं ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**तैस्तैः पदैस्तत्पदवीमन्विच्छन्त्योऽग्रतोऽबलाः ।**
**वध्वाः पदैः सुपृक्तानि विलोक्यार्ताः समब्रुवन् ॥२६॥**

पदच्छेद— तैः तैः पदैः तत् पदवीम् अन्विच्छन्त्यः अग्रतः अबलाः ।
वध्वाः पदैः सुपृक्तानि विलोक्य आर्ताः समब्रुवन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **तैः तैः** | १. उन-उन | **वध्वाः** | ८. किसी गोप बन्धु के |
| **पदैः** | २. चरण चिह्नों के द्वारा | **पदैः** | ९. चरण चिह्न |
| **तत् पदवीम्** | ३. उन श्याम सुन्दर के स्थान को | **सुपृक्तानि** | ७. श्री कृष्ण के साथ |
| **अन्वीच्छन्त्यः** | ४. खोजती हुई | **विलोक्य** | १०. देखकर वे |
| **अग्रतः** | ६. आगे बढ़ो | **आर्ताः** | ११. दुःखी हो गयीं और |
| **अबलाः ।** | ५. वे गोपाङ्गनायें | **समब्रुवन् ॥** | १२. कहने लगीं |

श्लोकार्थ—उन चरण चिह्नों के द्वारा उन श्याम सुन्दर के स्थान को खोजती हुई वे गोपाङ्गनाये आगे बढ़ीं। श्रीकृष्ण के साथ किसी गोपबन्धु के चरण चिह्न देखकर कर वे दुःखी हो गयीं, और कहने लगीं ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**कस्याः पदानि चैतानि यातायाः नन्दसूनुना ।**
**अंसन्यस्तप्रकोष्ठायाः करेणोः करिणा यथा ॥२७॥**

पदच्छेद— कस्याः पदानि च एतानि यातायाः नन्द सूनुना ।
अंसन्यस्त प्रकोष्ठायाः करेणोः करिणा यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कस्याः | ६. किस बड़भागिनी | अंसन्यस्त | ५. उनके कंधे पर |
| पदानि | १०. चरण चिह्न हैं | प्रकोष्ठायाः | ६. हाथ रख कर |
| च एतानि | ८. ये | करेणोः | २. हथिनी |
| यातायाः | ७. चलने वाली | करिणा | ३. गजराज के साथ गई हो वैसे हो |
| नन्दसूनुना । | ४. नन्द नन्दन के साथ | यथा ॥ | १. जैसे |

श्लोकार्थ—जैसे हथिनी गजराज के साथ गई हो वैसे ही नन्द नन्दन के साथ उनके कन्धे पर हाथ रख कर चलने वाली ये किस बड़भागिनी के चरण चिह्न हैं ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**अनयाऽऽराधितो नूनं भगवान् हरिरीश्वरः ।**
**यन्नो विहाय गोविन्दः प्रीतो यामनयद् रहः ॥२८॥**

पदच्छेद— अनया आराधितः नूनम् भगवान् हरिः ईश्वरः ।
यत नःविहाय गोविन्दः प्रीतः याम् अनयत् रहः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अनया | २. इसने | यत् | ७. जो कि |
| आराधितः | ६. उपासना की है | नःविहाय | ६. हमें छोड़कर |
| नूनम् | १. अवश्य ही | गोविन्दः | ८. श्याम सुन्दर |
| भगवान् | ४. भगवान् | प्रीतःयाम् | १०. प्रसन्न होकर इसे |
| हरिः | ५. श्रीकृष्ण की | अनयत् | १२. ले गये हैं |
| ईश्वरः । | ३. सर्वशक्तिमान् | रहः ॥ | ११. एकान्त में |

श्लोकार्थ—अवश्य ही इसने सर्वशक्तिमान् भगवान् श्रीकृष्ण की उपासना की है । जो कि श्याम सुन्दर हमें छोड़कर प्रसन्न होकर इसे एकान्त में ले गये हैं ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

धन्या अहो अमी आल्यो गोविन्दाङ्घ्र्यब्जरेणवः ।
यान् ब्रह्मेशो रमा देवी दधुर्मूर्ध्न्यघनुत्तये ॥२६॥

पदच्छेद— धन्याः अहो अमी आल्यः गोविन्द अङ्घ्रि अब्जरेणवः ।
यान् ब्रह्म ईशः रमादेवी दधुः मूर्ध्नि अघनुत्तये ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धन्याः | ७. | धन्य हैं | यान् | ८. | जिस रज को |
| अहो | १. | अहो ! | ब्रह्मा | ६. | ब्रह्मा |
| अमी | ६. | ये जन | ईशः | १०. | शंकर |
| आल्यः | २. | प्यारी सखियों | रमादेवी | ११. | लक्ष्मी आदि |
| गोविन्द | ३. | श्रीकृष्ण के | दधुः | १४. | धारण करते हैं |
| अङ्घ्रि अब्ज | ४. | चरण-कमलों की | मूर्ध्नि | १३. | अपने सिर पर |
| रेणवः। | ५. | धूली का स्पर्श करने वाले | अघनुत्तये ॥ | १२. | अशुभ नष्ट करने के लिये |

श्लोकार्थ—अहो ! प्यारी सखियों ! श्रीकृष्ण के चरण कमलों की धूली का स्पर्श करने वाले ये जन धन्य हैं । जिस रज को ब्रह्मा, शंकर, लक्ष्मी आदि अशुभ नष्ट करने के लिये अपने सिर पर धारण करते हैं ॥

## त्रिंशः श्लोकः

तस्या अमूनि नः क्षोभं कुर्वन्त्युच्चैः पदानि यत् ।
यैकापहृत्य गोपीनां रहो भुङ्क्तेऽच्युताधरम् ॥३०॥

पदच्छेद— तस्याः अमूनि नः क्षोभम् कुर्वन्ति उच्चैः पदानि यत् ।
या एका अपहृत्य गोपीनाम् रहः भुङ्क्ते अच्युत अधरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्याः | ८. | उसके | या एका | २. | जो एक गोपी |
| अमूनि | ६. | ये | अपहृत्य | ३. | श्रीकृष्ण को ले जाकर |
| नः | १२. | ये हमारे हृदय में | गोपीनाम् | १. | हम गोपियों में |
| क्षोभम् | १३. | क्षोभ | रहः | ४. | एकान्त में |
| कुर्वन्ति | १४. | उत्पन्न कर रहें हैं | भुङ्क्ते | ७. | पान कर रही है |
| उच्चैः पदानि | ११. | चरण चिह्न हैं | अच्युत | ५. | श्रीकृष्ण के |
| यत् । | १०. | जो उभरे हुये | अधरम् ॥ | ६. | अधर रस का |

श्लोकार्थ—हम गोपियों में जो एक गोपी श्रीकृष्ण को ले जाकर एकान्त में श्रीकृष्ण के अधर रस का पान कर रही है । उसके ये जो उभरे हुये चरण चिह्न हैं । ये हमारे हृदय में क्षोभ उत्पन्न कर रहे हैं ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**न लक्ष्यन्ते पदान्यत्र तस्या नूनं तृणाङ्कुरैः ।**
**खिद्यत्सुजाताङ्घ्रितलामुन्निन्ये प्रेयसीं प्रियः ॥३१॥**

पदच्छेद— न लक्ष्यन्ते पदानि अत्र तस्याः नूनम् तृण अङ्कुरैः ।
खिद्यत् सुजात अङ्घ्रितलाम् उन्निन्ये प्रेयसीम् प्रियः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| न लक्ष्यन्ते | ३. नहीं दिखलाई देते | खिद्यत् | ११. न लग जाय इसलिये उसे |
| पदानि | २. पैर | सुजात | ७. सुकुमार |
| अत्र तस्याः | १. यहाँ उस गोपी के | अङ्घ्रितलाम् | ८. चरणों के नीचे |
| नूनम् | ४. निश्चय ही | उन्निन्ये | १२. कन्धे पर चढ़ा लिया होगा |
| तृण | ९. घास और | प्रेयसीम् | ६. कहीं मेरी प्रिया के |
| अङ्कुरैः । | १०. अङ्कुर | प्रियः ॥ | ५. श्याम सुन्दर ने |

श्लोकार्थ—यहाँ पर उस गोपी के पैर नहीं दिखलाई देते । निश्चय ही श्याम सुन्दर ने कहीं मेरी प्रिया के सुकुमार चरणों के नीचे घास और अङ्कुर न लग जाय, इस लिये उसे कन्धे पर चढ़ा लिया होगा ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**इमान्यधिकमग्नानि पदानि वहतो वधूम् ।**
**गोप्यः पश्यत कृष्णस्य भाराक्रान्तस्य कामिनः ॥३२॥**

पदच्छेद— इमानि अधिक मग्नानि पदानि वहतः वधूम् ।
गोप्यः पश्यत कृष्णस्य भार आक्रान्तस्य कामिनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| इमानि | १०. यहाँ | गोप्यः | १. हे गोपियों |
| अधिक | ११. अधिक | पश्यत | २. देखो |
| मग्नानि | १२. गहरे धंस गये हैं | कृष्णस्य | ८. श्रीकृष्ण के |
| पदानि | ९. चरण | भार | ५. भार के |
| वहतः | ४. ढोने के | आक्रान्तस्य | ६. कारण उस |
| वधूम् । | ३. उस गोपी को | कामिनः ॥ | ७. कामी |

श्लोकार्थ—हे गोपियों ! देखो । उस गोपी को ढोने के भार के कारण उस कामी श्रीकृष्ण के चरण यहाँ अधिक गहरे धंस गये हैं ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**अत्र प्रसूनावचयः प्रियार्थे प्रेयसा कृतः ।**
**प्रपदाक्रमणे एते पश्यतासकले पदे ॥३३॥**

पदच्छेद— अत्र प्रसून अवचयः प्रिया अर्थे प्रेयसा कृतः ।
प्रपदाक्रमणे एते पश्यत असकले पदे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अत्र | १. | यहाँ | प्रिया अर्थे | ८. | अपनी प्रिया के लिये |
| अवरोपिता | ५. | नीचे उतारा है । और | प्रेयसा | ७. | प्रियतम श्रीकृष्ण ने |
| कान्ता | ४. | अपनी प्रेयसी को | कृतः | ११. | किया है |
| पुष्प हेतोः | ३. | फूल चुनने के लिये | प्रपदाक्रमणे | १२. | उचकने के कारण |
| महात्मना । | २. | उदार शिरोमणि श्रीकृष्ण ने | एते | १३. | इन |
| अत्र | ६. | यहाँ | पश्यत | १६. | देखो ! |
| प्रसून | ९. | पुष्पों का | असकले | १४. | आधे-आधे |
| अवचयः | १०. | चयन | पदे ॥ | १५. | चरण चिह्नों को |

श्लोकार्थ—यहाँ उदार शिरोमणि श्रीकृष्ण ने फूल चुनने के लिये अपनी प्रेयसी को नीचे उतारा है । और यहाँ प्रियतम श्रीकृष्ण ने अपनी प्रिया के लिये पुष्पों का चयन किया है । उचकने के कारण इन आधे-आधे चरण-चिह्नों को देखो ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**केशप्रसाधनं त्वत्र कामिन्याः कामिना कृतम् ।**
**तानि चूडयता कान्तामुपविष्टमिह ध्रुवम् ॥३४॥**

पदच्छेद — केश प्रसाधनम् तु अत्र कामिन्याः कामिना कृतम् ।
तानि चूडयता कान्ताम् उपविष्टम् इह ध्रुवम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| केश | ४. | केशों का | तानि | ७. | फूलों को |
| प्रसाधनम् | ५. | शृंगार | चूडयता | ९. | चोटी में गूंथने के लिये |
| तु अत्र | १. | यहाँ पर | कान्ताम् | ८. | अपनी प्रिया को |
| कामिन्याः | ३. | अपनी प्रेयसी के | उपविष्टम् | १२. | बैठे रहे होगे |
| कामिना | २. | कामी पुरुष के समान | इह | १०. | यहाँ पर |
| कृतम् । | ६. | किया है । और | ध्रुवम् ॥ | ११. | बहुत देर तक |

श्लोकार्थ—यहाँ पर कामी पुरुष के समान अपनी प्रेयसी के केशों का शृंगार किया है । और फूलों को अपनी प्रिया की चोटी में गूंथने के लिये यहाँ पर बहुत देर तक बैठे रहे होंगे ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

रेमे तया चात्मरत आत्मारामोऽप्यखण्डितः ।
कामिनां दर्शयन् दैन्यं स्त्रीणां चैव दुरात्मताम् ॥३५॥

पदच्छेद— रेमे तया च आत्मरतः आत्मारामः अपि अखण्डितः ।
कामिनाम् दर्शयम् दैन्यम् स्त्रीणाम् च एव दुरात्मताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| रेमे | १२. क्रीडा की थी | कामिनाम् | ५. | कामियों का |
| तया | ११. उन्होंने गोपी के साथ | दर्शयन् | १०. | दिखाने के लिये |
| च आत्मरतः | १. और श्रीकृष्ण अपने आप में सन्तुष्ट | दैन्यम् | ६. | दैन्य |
| आत्मारामः | २. आत्माराम | स्त्रीणाम् | ८. | स्त्रियों की |
| अपि | ४. भी | च एव | ७. | और |
| अखण्डितः । | ३. पूर्ण होने पर | दुरात्मताम् ॥ | ९. | कुटिलता |

श्लोकार्थ—और श्रीकृष्ण अपने आप में सन्तुष्ट आत्माराम पूर्ण होने पर भी कामियों का दैन्य और स्त्रियों की कुटिलता दिखाने के लिये ही उन्होंने गोपी के साथ क्रीडा की थी ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

इत्येवं दर्शयन्त्यस्ताश्चेरुर्गोप्यो विचेतसः ।
यां गोपीमनयत् कृष्णो विहायान्याः स्त्रियो वने ॥३६॥

पदच्छेद— इति एवम् दर्शयन्त्यः ताः चेरुः गोप्यः विचेतसः ।
याम् गोपीम् अनयत् कृष्णः विहाय अन्याः स्त्रियः वने ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| इति | ७. तब | याम् गोपीम् | १३. | जिस गोपी को |
| एवम् | ३. इस प्रकार | अनयत् | १४. | अपने साथ ले गये थे |
| दर्शयन्त्यः | ४. चरण चिह्न दिखाती हुई | कृष्णः | ८. | श्रीकृष्ण |
| ताः | १. वे गोपियाँ | विहाय | १२. | छोड़कर |
| चेरुः | ६. हो गईं । | अन्याः | ९. | अन्य |
| गोप्यः | २. अन्य गोपियों को | स्त्रियः | १०. | स्त्रियों को |
| विचेतसः | ५. मूर्च्छित | वने ॥ | ११. | वन में |

श्लोकार्थ—वे गोपियाँ अन्य गोपियों को इस प्रकार चरण चिह्न दिखाती हुई मूर्च्छित हो गईं । तब श्री कृष्ण अन्य स्त्रियों को वन में छोड़ कर जिस गोपी को अपने साथ ले गये थे ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**सा च मेने तदाऽऽत्मानं वरिष्ठं सर्वयोषिताम् ।**
**हित्वा गोपीः कामयाना मामसौ भजते प्रियः ॥३७॥**

पदच्छेद — सा च मेने तदा आत्मानम् वरिष्ठम् सर्व योषिताम् ।
हित्वा गोपीः कामयानाः माम् असौ भजते प्रियः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सा | ३. | उसने | हित्वा | १४. | छोड़कर मुझे अपने साथ लिया है |
| च | १. | और | गोपीः | १३. | अन्य गोपियों को |
| मेने | ७. | मानते हुये (विचार किया कि) | कामयानाः | १२. | प्रेम करने वाली |
| तदा | २. | तब | माम् | १०. | मुझे |
| आत्मानम् | ४. | अपने को | असौ | ८. | ये |
| वरिष्ठम् | ६. | सर्वश्रेष्ठ | भजते | ११. | सबसे अधिक प्रेम करते हैं तभी तो |
| सर्वयोषिताम् । | ५. | सभी स्त्रियों में | प्रियः ॥ | ९. | प्रियतम श्याम सुन्दर |

श्लोकार्थ—और तब उसने अपने को सभी स्त्रियों में सर्वश्रेष्ठ मानते हुये विचार किया कि ये प्रियतम श्याम सुन्दर मुझे सबसे अधिक प्रेम करते हैं। तभी तो प्रेम करने वाली अन्य गोपियों को छोड़कर मुझे अपने साथ लिया है ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**ततो गत्वा वनोद्देशं दृप्ता केशवमब्रवीत् ।**
**न पारयेऽहं चलितुं नय मां यत्र ते मनः ॥३८॥**

पदच्छेद— ततः गत्वा वनोद्देशम् दृप्ता केशवम् अब्रवीत् ।
न पारये अहम् चलितुम् नय माम् यत्र ते मनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | तब वह | न पारये | ८. | बिलकुल समर्थ नहीं हूँ |
| गत्वा | ४. | जाकर | अहम् चलितुम् | ७. | मैं चलने में |
| वनोद्देशम् | ३. | वन प्रान्त में | नय | १२. | वहीं ले चलिये |
| दृप्ता | २. | मतवाली | माम् | ११. | मुझे |
| केशवम् | ५. | श्रीकृष्ण से | यत्र | १०. | जहाँ हो |
| अब्रवीत् । | ६. | बोली (हे श्रीकृष्ण) | ते मनः ॥ | ९. | आपका मन |

श्लोकार्थ—तब वह वन प्रान्त में जाकर ब्रह्मा और शंकर के भी शासक श्रीकृष्ण से बोली। मैं चलने में बिलकुल समर्थ नहीं हूँ। आपका मन जहाँ हो मुझे वहीं ले चलिये।

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**एवमुक्तः प्रियामाह स्कन्ध आरुह्यतामिति ।**
**ततश्चान्तर्दधे कृष्णः सा वधूरन्वतप्यत ॥३९॥**

पदच्छेद— एवम् उक्तः प्रियाम् आह स्कन्धे आरुह्यताम् इति ।
ततः च अन्तर्दधे कृष्णः सा वधूः अन्वतप्यत ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | उसके ऐसा | ततः | ११. | तब |
| उक्तः | २. | कहने पर श्याम सुन्दर ने | च | ७. | और |
| प्रियाम् | ३. | अपनी प्रेयसी से | अन्तर्दधे | १०. | अन्तर्धान हो गये |
| आह | ४. | कहा कि तुम | कृष्णः | ९. | श्रीकृष्ण वहीं पर |
| स्कन्धे | ५. | मेरे कन्धे पर | सा | १२. | वह |
| आरुह्यताम् | ६. | चढ़ जाओ | वधूः | १३. | गोपी |
| इति । | ८. | ऐसा कहने के बाद | अन्वतप्यत ॥ | १४. | रोने तथा पछताने लगी |

श्लोकार्थ—उसके ऐसा कहने पर श्याम सुन्दर ने अपनी प्रेयसी से कहा कि तुम मेरे कन्धे पर चढ़ जाओ । और ऐसा कहने के बाद श्रीकृष्ण वहीं पर अन्तर्धान हो गये । तब गह गोपी रोने तथा पछताने लगी ॥

## चत्वारिंशः श्लोकः

**हा नाथ रमण प्रेष्ठ क्वासि क्वासि महाभुज ।**
**दास्यास्ते कृपणाया मे सखे दर्शय सन्निधिम् ॥४०॥**

पदच्छेद— हा नाथ रमण प्रेष्ठ क्वासि क्वासि महाभुज ।
दास्याः ते कृपणायाः मे सखे दर्शय सन्निधिम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हा नाथ | १ | हा नाथ ! | दास्याः | ९. | दासी हूँ |
| रमण | २. | हा रमण ! | ते कृपणायाः | ८. | मैं आपकी दीन हीन |
| प्रेष्ठ | ३. | हा प्रेष्ट ! | मे सखे | ७. | मेरे सखा ! |
| क्वासि | ५. | तुम कहाँ हो ? | दर्शय | १०. | मुझे दर्शन देकर अपना |
| क्वासि | ६. | कहाँ हो ? | सन्निधिम् ॥ | ११. | सान्निध्य प्राप्त कराओ |
| महाभुज । | ४. | हा महाभुज । | | | |

श्लोकार्थ—हा नाथ ! हा रमण ! हा प्रेष्ठ ! हा महाभुज ! तुम कहाँ हो ? कहाँ हो ? मेरे सखा ! मैं आपकी दीन-हीन दासी हूँ । मुझे दर्शन देकर अपना सान्निध्य प्राप्त कराओ ॥

## एकचत्वारिंशः श्लोकः

**अन्विच्छन्त्यो भगवतो मार्गं गोप्योऽविदूरतः ।**
**ददृशुः प्रियविश्लेषमोहितां दुःखितां सखीम् ॥४१॥**

पदच्छेद— अन्विच्छन्त्यः भगवतः मार्गम् गोप्यः अविदूरतः ।
ददृशुः प्रिय विश्लेष मोहिताम् दुःखिताम् सखीम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **अन्विच्छन्त्यः** | ३. खोजती हुई | **ददृशुः** | ११. देखा |
| **भगवतः** | २. भगवान् को | **प्रिय** | ६. प्रियतम श्रीकृष्ण के |
| **मार्गम्** | १. मार्ग में | **विश्लेष** | ७. वियोग के कारण |
| **गोप्यः** | ४. गोपियों ने | **मोहिताम्** | ९. अचेत |
| **अविदूरतः ।** | ५. कुछ दूर से ही | **दुःखिताम्** | ८. दुःखी और |
| | | **सखीम् ॥** | १०. अपनी सखी को |

श्लोकार्थ—मार्ग में भगवान् को खोजती हुई गोपियों ने कुछ दूर से ही प्रियतम श्रीकृष्ण के वियोग के कारण दुःखी और अचेत अपनी सखी को देखा ॥

## द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

**तया कथितमाकर्ण्य मानप्राप्तिं च माधवात् ।**
**अवमानं च दौरात्म्याद् विस्मयं परमं ययुः ॥४२॥**

पदच्छेद— तया कथितम् आकर्ण्य मान प्राप्तिम् च माधवात् ।
अवमानम् च दौरात्म्यात् विस्मयम् परमम् ययुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **तया** | २. उसके द्वारा | **अवमानम्** | ९. जो अपमान किया उसे सुन कर |
| **कथितम्** | ५. बात को | **च** | ७. और |
| **आकर्ण्य** | ६. सुन कर | **दौरात्म्यात्** | ८. उसने कुटिलता वश भगवान् का |
| **मानप्राप्तिम्** | ४. सम्मान प्राप्त होने की | **विस्मयम्** | ११. आश्चर्य में |
| **च** | १. और | **परमम्** | १०. वे अत्यधिक |
| **माधवात् ।** | ३. श्रीकृष्ण से | **ययुः ॥** | १२. पड़ गयीं |

श्लोकार्थ—और उसके द्वारा श्रीकृष्ण से सम्मान प्राप्त होने की बात को सुन कर और उसने कुटिलता वश भगवान् का जो अपमान किया उसे सुन कर वे अत्यधिक आश्चर्य में पड़ गयीं ॥

## त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

ततोऽविशन् वनं चन्द्रज्योत्स्ना यावद् विभाव्यते ।
तमः प्रविष्टमालक्ष्य ततो निववृतुः स्त्रियः ॥४३॥

पदच्छेद— ततः अविशन् वनम् चन्द्रज्योत्स्ना यावत् विभाव्यते ।
तमः प्रविष्टम् आलक्ष्य ततः निववृतुः स्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | श्रीकृष्णमय मन | तमः | ६. | उन्हीं के |
| अविशन् | ६. | घुसती चली गईं | प्रविष्टम् | ८. | प्रवेश |
| वनम् | ५. | उस वन में | आलक्ष्य | १०. | देख कर |
| चन्द्रज्योत्स्ना | ३. | चन्द्रमा का प्रकाश | ततः | ११. | वहाँ से |
| यावत | २. | जहाँ तक | निववृतुः | १२. | वापिस लौट आयीं |
| विभाव्यते । | ४. | समझ आया वे | स्त्रियः ॥ | ७. | फिर ये स्त्रियाँ |

श्लोकार्थ—इसके बाद जहाँ तक चन्द्रमा का प्रकाश समझ आया वे उस वन में घुसती चलीं गईं। फिर वे स्त्रियाँ अन्धकार का प्रवेश देखकर वहाँ से वापिस लौट आयीं ॥

## चतुःचत्वारिंशः श्लोकः

तन्मनस्कास्तदालापास्तद्विचेष्टास्तदात्मिकाः ।
तद्गुणानेव गायन्त्यो नात्मागाराणि सस्मरुः ॥४४॥

पदच्छेद— तत् मनस्काः तत् आलापाः तत् विचेष्टाः तत् आत्मिकाः ।
तत् गुणान् एव गायन्त्यः न अत्मा अगाराणि सस्मरुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् मनस्काः | १. | श्रीकृष्णमय मन | तत् | ६. | उन्हीं के |
| तत् | २. | कृष्णमय | गुणान् | ७. | गुणों का |
| आलापः | ३. | वाणी और | एव | ८. | ही |
| तत् | ४. | कृष्ण की | गायन्त्यः | ९. | गान करती हुईं वे |
| विचेष्टाः | ५. | लीलाओं तथा | न | १४. | नहीं किया |
| तत् | १०. | कृष्ण | आत्मागराणि | १२. | फिर उन्होंने अपने घरों का |
| आत्मिकाः । | ११. | स्वरूप ही हो गयीं | सस्मरुः ॥ | १३. | स्मरण |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्णमय मन, कृष्णमय वाणी और कृष्ण की लीलाओं का तथा उन्हीं के गुणों का ही गान करती हुई वे कृष्ण स्वरूप हो गईं फिर उन्होंने अपने घरों का भी स्मरण नहीं किया ॥

## पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

**पुनः पुलिनमागत्य कालिन्द्याः कृष्णभावनाः ।**
**समवेता जगुः कृष्णं तदागमनकाङ्क्षिताः ॥४५॥**

पदच्छेद— पुनः पुलिनम् आगत्य कालिन्द्याः कृष्ण भावनाः ।
समवेताः जगुः कृष्णम् तत् आगमन काङ्क्षिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पुनः | ३. | वे पुनः | समवेताः | १०. | वे सब इकट्ठी होकर |
| पुलिनम् | ५. | किनारे पर | जगुः | १२. | गान करने लगीं |
| आगत्य | ६. | आ गयीं | कृष्णम् | ११. | श्याम सुन्दर के गुणों का |
| कालिन्द्याः | ४. | यमुना नदी के | तत् | ७. | और कृष्ण के |
| कृष्ण | १. | श्री कृष्ण की ही | आगमन | ८. | आगमन की |
| भावनाः । | २. | भावना करती हुई | काङ्क्षिताः ॥ | ९. | आकांक्षा के कारण |

श्लोकार्थ— श्री कृष्ण की ही भावना करती हुई वे पुनः यमुना नदी के किनारे पर आ गयीं । और श्रीकृष्ण के आगमन की आकांक्षा के कारण वे सब इकट्ठी होकर श्याम सुन्दर के गुणों का गान करने लगी ॥

**श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे**
**रासक्रीडायां कृष्णान्वेषणम् नाम त्रिंशः अध्यायः ॥३०॥**

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## एकत्रिंशः अध्यायः

## प्रथमः श्लोकः

**जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि ।**

**दयित दृश्यतां दिक्षु तावकास्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ॥१॥**

पदच्छेद— जयति ते अधिकम् जन्मना व्रजः श्रयत इन्दिरा शश्वत्अत्र हि ।
दयित दृश्यताम् दिक्षु तावकाः त्वयिधृतअसवः त्वाम् विचिन्वते ।।

| शब्दार्थ— जयति | ४. बढ़ गयी है | दयित | ८. हे प्रियतम ! |
|---|---|---|---|
| ते | १ आपके | दृश्यताम् | ९. देखो |
| अधिकम् | ३. अधिक | दिक्षु | १३. सभी दिशाओं में |
| जन्मना व्रज | २. जन्म से व्रज की महिमा | तावकाः | ११. आपकी गोपिकायें |
| श्रयत | ७. वास कर रही है | त्वयिधृतासवः | १०. आपके लिये प्राण धारण करनेवाली |
| इन्दिरा | ५. तभी तो लक्ष्मी | त्वाम् | १२. आपको |
| शश्वत्अत्रहि । | ६.निरन्तर यहाँ | विचिन्वते ।। | १४. खोजती भटक रही हैं |

श्लोकार्थ—आपके जन्म से व्रज की महिमा अधिक बढ़ गयी है । तभी तो लक्ष्मी निरन्तर यहाँ वास कर रही हैं । हे प्रियतम ! देखो आपके लिये प्राण धारण करने वाली आपकी गोपिकायें आपको सभी दिशाओं में खोजती भटक रही हैं ।।

## द्वितीयः श्लोकः

**शरदुदाशये साधुजातसत्सरसिजोदरश्रीमुषा दृशा ।**

**सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका वरदनिघ्नतो नेह किं वधः ॥२॥**

पदच्छेद— शरत् उदाशये साधुजात सत्सरसिज उदर श्री मुषा दृशा ।
सुरतनाथ ते अशुल्क दासिका वरदनिघ्नतः नेह किम् वधः ।।

| शब्दार्थ—शरत् | १. शरदकालीन | सुरतनाथ | ८. हे संभोग पति ! |
|---|---|---|---|
| उदाशये | २. जलाशय में | ते अशुल्क | ९. हम आपकी बिनामोल की |
| साधुजात | ३. भली-भाँति उत्पन्न | दासिकाः | १०. दासी हैं |
| सत्सरसिज | ४. सुन्दर कमल के | वरद | ११. हे मनोरथपूर्ण करने वाले |
| उदर श्री | ५. मध्यभाग की शोभा को | निघ्नतः | ७. हमें घायल कर दिया है |
| मुषा दृशा । | ६. चुराने वाले आपके नेत्रों ने | नेहकिम्वधः ।। | १२. क्या यह (नेत्रों से मारना) वध नहीं है |

श्लोकार्थ—शरद्कालीन जलाशय में भली-भाँति उत्पन्न सुन्दर कमल के मध्यभाग की शोभा को चुराने वाले आपके नेत्रों ने हमें घायल कर दिया है । हे संभोग पति ! हम आपकी बिना मोल की दासी हैं । हे मनोरथ पूर्ण करने वाले ! क्या यह नेत्रों से मारना वध नहीं है ।।

## तृतीयः श्लोकः

**विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद् वर्षमारुताद् वैद्युतानलात् ।**
**वृषमयात्मजाद् विश्वतोभयादृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः ॥३॥**

पदच्छेद— विषजल अप्ययात् व्याल राक्षसात् वर्षमारुतात् अनलात् ।
वृषमय आत्मजात् विश्वतः भयात् ऋषभ ते वयम् रक्षिताः मुहुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| विषजल | २. यमुना के विषैले जल | वृषमय | ९. वृषभासुर और |
| अप्ययात् | ३. विषयक मृत्यु से | आत्मजात् | १०. व्योमासुर आदि |
| व्याल | ४. अजगर रूपी | विश्वतः | ११. सब प्रकार के |
| राक्षसात् | ५. राक्षस से | भयात् | १२. भयों से |
| वर्षमारुतात् | ६. इन्द्र की वर्षा-आँधी | ऋषभ | १. हे पुरुष शिरोमणि ! |
| वैद्युत | ७. बिजली और | ते वयम् | १३. आपने हमारी |
| अनलात् । | ८. दावानल से | रक्षिता मुहुः ॥ | १४. बार-बार रक्षा की है |

श्लोकार्थ—हे पुरुष शिरोमणि ! यमुना के विषैले जल विषयक मृत्यु से, अजगररूपी राक्षस से, इन्द्र की वर्षा, आँधी, बिजली और दावानल से, वृषभासुर और व्योमासुर आदि सब प्रकार के भयों से आपने हमारी बार-बार रक्षा की है ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**न खलु गोपिकानन्दनो भवानखिलदेहिनामन्तरात्मदृक् ।**
**विखनसार्थितो विश्वगुप्तये सख उदेयिवान् सात्वतां कुले ॥४॥**

पदच्छेद— न खलु गोपिका नन्दनः भवान् अखिल देहिनाम् अन्तर आत्मदृक् ।
विखनस अर्थितः विश्वगुप्तये सखे उदेयिवान् सात्वताम् कुले ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| न | ४. नहीं हो, अपितु | विखनस | ९. ब्रह्माजी की |
| खलु | १. निश्चय ही | अर्थितः | १०. प्रार्थना पर |
| गोपिकानन्दनः | ३. यशोदानन्द नहीं | विश्व | ११. समस्त संसार की |
| भवान् | २. तुम केवल | गुप्तये | १२. रक्षा करने के लिये |
| अखिलदेहिनाम् | ५. समस्त शरीर धारियों के | सखे | ८. हे सखे ! |
| अन्तर | ६. हृदय में रहने वाले | उदेयिवान् | १४. अवतीर्ण हुये हो |
| आत्मदृक् । | ७. उनके साक्षी और अन्तर्यामी हो | सात्वताम् कुले ॥ | १३. तुम यदुवंश में |

श्लोकार्थ—निश्चय ही तुम केवल यशोदानन्दन ही नहीं हो । अपितु समस्त शरीरधारियों के हृदय में रहने वाले, उनके साक्षी और अन्तर्यामी हो । हे सखे ! ब्रह्माजी की प्रार्थना पर समस्त संसार की रक्षा करने के लिये तुम यदुवंश में अवतीर्ण हुये हो ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते चरणमीयुषां संसृतेर्भयात् ।**
**करसरोरुहं कान्त कामदं शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम् ॥५॥**

पदच्छेद— विरचित अभयम् वृष्णिधुर्य ते चरणम् ईयुषाम् संसृतेः भयात् ।
करसरोरुहम् कन्ति कामदम् शिरसि धेहि नः श्रीकर ग्रहम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **विरचित** | ५. देने वाले | कर | ११. अपने कर |
| **अभयम्** | ४. अभय | सरोरुहम् | १२. कमल को आप |
| **वृष्णिधुर्य** | १. हे यदुवंश शिरोमणि ! लोग | कान्त | ८. हे प्रियतम ! समस्त |
| **ते चरणम्** | ६. आपके चरणों की | कामदम् | ९. कामनाओं को पूर्ण करने वाले |
| **ईयुषाम्** | ७. शरण ग्रहण करते हैं (अतः) | शिरसि धेहि | १४. सिर पर रख दो |
| **संसृतेः** | २. जन्म मृत्युरूप संसार के | नः | १३. हमारे |
| **भयात् ।** | ३. भय से डर कर | श्रीकर ग्रहम् ॥ | १०. लक्ष्मी का हाथ पकड़ने वाले |

श्लोकार्थ—हे यदुवंश शिरोमणि ! लोग जन्म-मृत्युरूप संसार के भय से डर कर अभय देने वाले आपके चरणों की शरण ग्रहण करते हैं । अतः हे प्रियतम ! समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाले, लक्ष्मी का हाथ पकड़ने वाले अपने कर कमल को आप हमारे सिर पर रख दो ॥

## षष्ठः श्लोकः

**व्रजजनार्तिहन् वीर योषितां निजजनस्मयध्वंसनस्मित ।**
**भज सखे भवत्किङ्करीः स्म नो जलरुहाननं चारु दर्शय ॥६॥**

पदच्छेद— व्रजजन आर्तिहन् वीर योषिताम् निज जनस्मय ध्वंसनस्मित ।
भज सखे भवत् किङ्करीः स्म नो जल रुह आननम् चारु दर्शय ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **व्रजजन** | १. व्रजवासियों के | स्मित । | ४. आपकी मधुर मुस्कान ही |
| **आर्तिहन्** | २. दुःख को दूर करने वाले | भज | ११. हमसे प्रेम करो |
| **वीर** | ३. वीर शिरोमणि | सखे भवत् | ९. हे सखा ! हम तो आपकी |
| **योषिताम्** | ६. हम गोपियों के | किङ्करीः स्म | १०. दासी हैं |
| **निजजन** | ५. अपनी भक्ता | नो जलरुह | १२. हमें कमल के समान |
| **स्मय** | ७. गर्व को | आननम् चारु | १३. अपने सुन्दर मुख का |
| **ध्वंसन** | ८. नष्ट कर देने वाली है | दर्शय ॥ | १४. दर्शन कराओ |

श्लोकार्थ—व्रजवासियों के दुख को दूर करने वाले वीर शिरोमणि श्याम सुन्दर आपकी मधुर मुस्कान ही अपनी भक्ता हम गोपियों के गर्व को नष्ट कर देने वाली है । हे सखा ! श्याम सुन्दर ! हम तो आपकी दासी हैं । हम से प्रेम करो । हमें कमल के समान अपने सुन्दर मुख का दर्शन कराओ ॥

## सप्तमः श्लोकः

**प्रणतदेहिनां पापकर्शनं तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम् ।**
**फणिफणार्पितं ते पदाम्बुजं कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम् ॥७॥**

पदच्छेद— प्रणत देहिनाम् पापकर्शनम् तृणचर अनुगम् श्री निकेतनम् ।
फणिफण अर्पितम् ते पद अम्बुजम् कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **प्रणत** | २. | शरणागत | **फणिफण** | ९. | साँप के फणों पर |
| **देहिनाम्** | ३. | प्राणियों के | **अर्पितम्** | १०. | रखे गये उन्हीं चरणों को |
| **पापकर्शनम्** | ४. | पापों को नष्ट करने वाले | **ते पद अम्बुजम्** | १. | आपके चरण कमल |
| **तृणचर** | ५. | बछड़ों के | **कृणु** | १२ | रखो और |
| **अनुगम्** | ६. | पीछे चलने वाले तथा | **कुचेषु नः** | ११. | हमारे स्तनों पर |
| **श्री** | ७. | शोभा के | **कृन्धि** | १४. | शान्त करो |
| **निकेतनम् ।** | ८. | धाम हैं | **हृच्छयम् ॥** | १३. | हमारे हृदय की ज्वाला को |

श्लोकार्थ—आपके चरण कमल शरणागत प्राणियों के पापों को नष्ट करने वाले, बछड़े के पीछे चलने वाले तथा शोभा के धाम हैं। साँप के फणों पर रखे गये उन्हीं चरणों को हमारे स्तनों पर रखो और हमारे हृदय की ज्वाला को शान्त करो ॥

## अष्टमः श्लोकः

**मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण ।**
**विधिकरीरिमा वीर मुह्यतीरधरसीधुनाऽऽप्याययस्व नः ॥८॥**

पदच्छेद— मधुरया गिरा वल्गु वाक्यया बुध मनोज्ञया पुष्करेक्षण ।
विधिकरीः इमाः वीर मुह्यतीः अधर सीधुना आप्याययस्व नः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **मधुरया** | ६. | तुम्हारी मधुर | **विधिकरीः** | १०. | आज्ञाकारिणी दासी बन गईं हैं |
| **गिरा** | ७. | वाणी से | **इमाः** | ९. | हम आपकी |
| **वल्गु** | २. | सुन्दर | **वीर** | ११. | हे दान वीर |
| **वाक्यया** | ३. | नयनों के कारण | **मुह्यतीः** | ८. | मोहित होकर |
| **बुध** | ५. | विद्वानों को | **अधर** | १२. | अपने अधरों का |
| **मनोज्ञया** | ४. | आनन्द देने वाली | **सीधुना** | १३. | दिव्य अमृत रस |
| **पुष्करेक्षण ।** | १. | हे कमल नयन ! | **अप्याययस्व नः ॥** | १४. | पिलाकर हमें कृतार्थ करो |

श्लोकार्थ—हे कमलनयन ! सुन्दर नयनों के कारण विद्वानों को आनन्द देने वाली तुम्हारी मधुर वाणी से मोहित होकर हम आपकी आज्ञाकारिणी दासी बन गईं हैं। हे दानवीर ! अपने अधरों का दिव्य अमृतरस पिलाकर हमें कृतार्थ करो ॥

## नवमः श्लोकः

**तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम् ।**
**श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ॥६॥**

पदच्छेद— तव कथा अमृतम् तप्त जीवनम् कविभिः ईडितम् कल्मषअपहम् ।
श्रवण मङ्गलम् श्रीमद् आततम् भुवि गृणन्ति ते भूरिदाः जनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **तव कथा** | १. आपकी लीला कथा | श्रवण | ८. श्रवण मात्र से ही |
| **अमृतम्** | २. अमृत स्वरूप है | मङ्गलम् | ९. परम कल्याण को देने वाली है |
| **तप्त** | ३. विरह से सताये लोगों का | श्रीमद् | १०. परम सुन्दर और |
| **जीवनम्** | ४. जीवन सर्वस्व है | आततम् | ११. अति विस्तृत है |
| **कविभिः** | ५. भक्त कवियों ने | भुवि | १२. पृथ्वी पर जो इसका |
| **ईडितम्** | ६. उसका गान किया है वे | गृणन्ति ते | १३. गान करते हैं वे |
| **कल्मषअपहम् ।** | ७. पाप ताप को नष्ट करने वाली | भूरिदाःजनाः ॥ | १४. सबसे बड़े दाता हैं |

श्लोकार्थ—आपकी लीला कथा अमृत स्वरूप है । विरह से सताये लोगों का जीवन सर्वस्व है । भक्त कवियों ने उसका गान किया है । यह पाप-ताप को नष्ट करने वाली है । श्रवण मात्र से ही परम कल्याण को देने वाली है । परम सुन्दर और अति विस्तृत है । पृथ्वी पर जो इसका गान करते हैं, वे लोग सबसे बड़े दाता हैं ।

## दशमः श्लोकः

**प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं विहरणं च ते ध्यानमङ्गलम् ।**
**रहसि संविदो या हृदिस्पृशः कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि ॥१०॥**

पदच्छेद— प्रहसितम् प्रिय प्रेम वीक्षणम् विहरणम् च ते ध्यान मङ्गलम् ।
रहसि संविदः याः हृदिस्पृशः कुहक नो मनः क्षोभयन्तिहि ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **प्रहसितम्** | ३. हँसना | रहसि | ८. तुमने एकान्त में |
| **प्रिय** | १. हे प्यारे ! श्याम सुन्दर | संविदः | १०. ठिठोलियाँ की हैं |
| **प्रेम** | ४. प्रेमपूर्वक | याः हृदिस्पृशाः | ९. हमसे जो हृदय स्पर्शी |
| **वीक्षणम्** | ५. तिरछी चितवन से देखना | कुहक | ११. हमारे कपटी मित्र |
| **विहरणम्** | ६. विहार करना आदि का | नः | १२. वे सब हमारे |
| **च ते** | २. तुम्हारा | मनः | १३. मन को |
| **ध्यानमङ्गलम् ।** | ७. ध्यान भी परम मङ्गल कारक है | क्षोभयन्ति हि ॥ | १४. क्षुब्ध किये देती हैं |

श्लोकार्थ—हे प्यारे श्याम सुन्दर, तुम्हारा हंसना ! प्रेमपूर्वक तिरछी चितवन से देखना, विहार करना आदि का ध्यान भी परम मङ्गलकारक है । तुमने एकान्त में हमसे जो हृदय स्पर्शी ठिठोलियाँ की हैं, हमारे कपटी मित्र, वे सब हमारे मन को क्षुब्ध किये देती हैं ॥

## एकादशः श्लोकः

**चलसि यद् व्रजाच्चारयन् पशून् नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम् ।**
**शिलतृणाङ्कुरैः सीदतीति नः कलिलतां मनः कान्त गच्छति ॥११॥**

पदच्छेद— चलसि यद् व्रजात् चारयन् पशून् नलिन सुन्दरम् नाथ ते पदम् ।
शिलतृण अङ्कुरैः सीदतीति नः कलिलताम् मनः कान्त गच्छति ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **चलसि** | ७. निकलते हो तब | **शिल** | ९. | आपके चरण कङ्कड़ |
| **यद्** | ४. जब तुम | **तृणअङ्कुरैः** | १०. | तिनके और कुश-काँटे गड़ जाने से |
| **व्रजात्** | ६. व्रज से | **सीदतीति** | ११. | कष्ट पाते होंगे |
| **चारयन् पशून्** | ५. गौओं को चराने के लिये | **नः** | १२. | ऐसा सोच कर हमारा |
| **नलिन सुन्दरम्** | ३. कमल से भी सुन्दर हैं | **कलिलताम् मनः** | १३. | मन दुःखी |
| **नाथ** | १. हे प्यारे स्वामी ! | **कान्त** | ८. | हे प्रियतम ! |
| **ते पदम् ।** | २. तुम्हारे चरण | **गच्छति ।।** | १४. | हो जाता है |

**श्लोकार्थ**—हे प्यारे स्वामी ! तुम्हारे चरण कमल से भी सुन्दर हैं । जब तुम गौओं को चराने के लिये व्रज से निकलते हो तब हे प्रियतम ! आपके चरण कङ्कड़, तिनके और कुश काँटे गड़ जाने से कष्ट पाते होंगे । ऐसा सोचकर हमारा मन दुःखी हो जाता है ।।

## द्वादशः श्लोकः

**दिनपरिक्षये नीलकुन्तलैर्वनरुहाननं बिभ्रदावृतम् ।**
**घनरजस्वलं दर्शयन् मुहुर्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि ॥१२॥**

पदच्छेद— दिन परिक्षये नील कुन्तलैः वनरुह आननम् बिभ्रत् आवृतम् ।
घन रजस्वलम् दर्शयन् मुहुः मनसि नः स्मरम् वीर यच्छसि ।।

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **दिन** | १. दिन के | **घन** | ९. | गऊओं के खुरों से उड़ी हुई |
| **परिक्षये** | २. ढलने पर वन से लौटते समय | **रजस्वलम्** | १०. | धूली से मण्डित |
| **नीलकुन्तलैः** | ३. नीली-नीली अलकों से | **दर्शयन् मुहुः** | ११. | आपका मुख बार-बार देखकर |
| **वनरुह** | ५. आपका कमल के समान | **मनसि नः** | १२. | हमारे मन में |
| **आननम्** | ६ मुख | **स्मरम्** | १३. | मिलन की आकांक्षा |
| **बिभ्रत्** | ७. सुशोभित होता है | **वीर** | ८. | हे वीर प्रियतम् ! |
| **आवृतम् ।** | ४. घिरा हुआ | **यच्छसि ।।** | १४. | उत्पन्न करते हों |

**श्लोकार्थ**—दिन के ढलने पर वन से लौटते समय नीली-नीली अलकों से घिरा हुआ आपका कमल के समान मुख सुशोभित होता है । हे वीर प्रियतम ! गऊओं के खुरों से उड़ी हुई धूली से मण्डित आपका मुख बार-बार देखकर हमारे मन में मिलन की आकांक्षा उपन्न करते हो ।।

## त्रयोदशः श्लोकः

**प्रणतकामदं पद्मजार्चितं धरणिमण्डनं ध्येयमापदि ।**

**चरणपङ्कजं शन्तमं च ते रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन् ॥१३॥**

पदच्छेद— प्रणत कामदम् पद्मज अर्चितम् धरणि मण्डनम् ध्येयम् आपदि ।
चरण पङ्कजम् शन्तमम् चते रमण नः स्तनेषु अर्पय आधिहन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **प्रणत** | १. शरणागत भक्तों की | चरणपङ्कजम् | २. आपके चरण कमल |
| **कामदम्** | ४. अभिलाषा पूर्ण करने वाले | शन्तमम् | ११. परमकल्याणमय |
| **पद्मजार्चितम्** | १. लक्ष्मी जी द्वारा सेवित | च ते | १२. अपने उन्हीं चरणों को |
| **धरणि** | ७. पृथ्वी के | रमण | ६. हे प्रियतम ! |
| **मण्डनम्** | ८. अलङ्करण स्वरूप हैं | नः स्तनेषु | १३. तुम हमारे वक्षः स्थल पर |
| **ध्येयम्** | ६. चिन्तन करने योग्य तथा | अर्पय | १४. स्थापित करो |
| **आपदि ।** | ५. आपत्ति के समय | आधिहन् ॥ | १०. मन की व्यथा को नष्ट करनेवाले |

श्लोकार्थ—लक्ष्मी जी द्वारा सेवित आपके चरण कमल शरणागत भक्तों की अभिलाषा पूर्ण करने वाले, आपत्ति के समय चिन्तन करने योग्य तथा पृथ्वी के अलङ्करण स्वरूप हैं । हे प्रियतम ! मन की व्यथा को नष्ट करने वाले परमकल्याणमय अपने उन्हीं चरणों को तुम हमारे वक्षः स्थल पर स्थापित करो ।

## चतुर्दशः श्लोकः

**सुरतवर्धनं शोकनाशनं स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम् ।**

**इतररागविस्मारणं नृणां वितर वीर नस्तेऽधरामृतम् ॥१४॥**

पदच्छेद— सुरत वर्धनम् शोक नाशनम् स्वरित वेणुना सुष्ठु चुम्बितम् ।
इतरराग विस्मारणम् नृणाम् वितर वीर नः ते अधर अमृतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **सुरत** | २. मिलन की आकांक्षा को | इतरराग | १०. अन्य सांसारिक आसक्तियों को |
| **बर्धनम्** | ३. बढ़ाने वाला | विस्मारणम् | ११. विस्मृत कराने वाला |
| **शोक** | ४. शोक-सन्ताप को | नृणाम् | ६. मनुष्यों में |
| **नाशनम्** | ५. नष्ट करने वाला | वितर | १४. पिलाइये |
| **स्वरित** | ६. गाने वाली | वीर | १. हे वीर शिरोमणि ! |
| **वेणुना सुष्ठु** | ७. बाँसुरी के द्वारा भली-भाँति | नः ते | १२. हमें आप अपना वही |
| **चुम्बितम् ।** | ८. चुम्बित तथा | अधर अमृतम् ॥ | १३. अधररूपी अमृत |

श्लोकार्थ—हे वीर शिरोमणि ! मिलन की आकांक्षा को बढ़ाने वाला, शोक-सन्ताप को नष्ट करने वाला, गाने वाली बाँसुरी के द्वारा भली-भाँति चुम्बित तथा मनुष्यों में अन्यसांसारिक आसक्तियों को विस्मृत कराने वाला, हमें आप अपना वही अधररूपी अमृतपिलाइये ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**अटति यद् भवानह्नि काननं त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम् ।**
**कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते जड उदीक्षतां पक्ष्मकृद् दृशाम् ॥१५॥**

पदच्छेद— अटति यत् भवान् अह्निकाननम् त्रुटिः युगायते त्वाम् अपश्यताम् ।
कुटिल कुन्तलम् श्री मुखम् च ते जडः उदीक्षताम् पक्ष्मकृत् दृशाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अटति | ३. विचरण करते हैं तो | | कुटिलकुन्तलम् | ६. धुँघराली अलकों से |
| यत्भवान् | १. आप जो | | श्रीमुखम् | १०. सुशोभित मुख |
| अह्निकाननम् | २. दिन में वन में | | च ते | ८. और अथवा |
| त्रुटि | ६. हमें एक क्षण | | जडः | १४. हमें मूर्ख लगता है |
| युगायते | ७. युग के समान हो जाता है | | उदीक्षताम् | ११. देखते हुए |
| त्वाम् | ४. आपको | | पक्ष्मकृत् | १३. पलकों को |
| अपश्यताम् । | ५. देखे बिना | | दृशाम् ॥ | १२. नेत्रों की |

श्लोकार्थ—जो आप दिन में वन में विचरण करते हैं। तो आपको देखे बिना हमें एक क्षण युग के समान हो जाता है। अथवा घुंघराली अलकों से सुशोभित मुख देखते हुए नेत्रों की पलकों को बनाने वाला (ब्रह्मा) हमें मूर्ख लगता है ॥

## षोडशः श्लोकः

**पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवानतिविलङ्घ्य तेऽन्त्यच्युतागताः ।**
**गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि ॥१६॥**

पदच्छेद— पति सुत अन्वय भ्रातृ बान्धवान् अति विलङ्घ्य ते अन्ति अच्युत आगताः ।
गति विदः तव उद्गीत मोहिताः कितव योषितः कस्त्यजेत् निशि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| पति सुत | २. हम अपने पति पुत्र | | गतिविदः | ६. गति समझ कर |
| अन्वयः | ४. कुल परिवार का | | तवउद्गीत् | ८. हम आपकी मधुर गान की |
| भ्रातृबान्धवान् | ३. भाई-बन्धु और | | मोहिताः | १०. मोहित हैं |
| अतिविलङ्घ्य | ५. त्याग करके | | कितवः | ११. हे कपटी ! ऐसी |
| ते अन्ति | ६. तुम्हारे पास | | योषितः | १३. युवतियों को |
| अच्युत | १. हे श्याम सुन्दर ! | | कस्त्यजेत् | १४. तुम्हारे बिना कौन छोड़ सकता है |
| आगताः । | ७. आयी हैं | | निशि ॥ | १२. रात्रि के समय |

श्लोकार्थ—हे श्याम सुन्दर ! हम अपने पति, पुत्र, भाई, बन्धु और कुल-परिवार का त्याग करके तुम्हारे पास आयी हैं। हम आपकी मधुर गान की गति समझ कर मोहित हैं। हे कपटी ! ऐसी रात्रि के समय युवतियों को तुम्हारे बिना कौन छोड़ सकता है ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**रहसि संविदं हृच्छयोदयं प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम् ।**
**बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः ॥१७॥**

पदच्छेद— रहसि संविदम् हृच्छय उदयम् प्रहसित आननम् प्रेम वीक्षणम् ।
बृहत् उरः श्रियः वीक्ष्य धाम ते मुहुः अति स्पृहा मुह्यते मनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **रहसि** | १. | एकान्त में | **बृहत् उरः** | १०. | विशाल वक्षः स्थल को |
| **संविदम्** | २. | मिलन की आकांक्षा | **श्रियः** | ८. | लक्ष्मी जी का |
| **हृच्छय** | ३. | और प्रेमभाव को | **वीक्ष्य** | ११. | देखकर |
| **उदयम्** | ४ | जगाने वाली बातें करते थे | **धाम ते** | ९. | निवास स्थान तुम्हारे |
| **प्रहसित** | ६ | हँसते हुये | **मुहुः अतिस्पृहा** | १३. | बार-बार लालसा बढ़ रही है |
| **आननम्** | ७. | मुखारविन्द तथा | **मुह्यते** | १४. | और वह मुग्ध होता जा रहा है |
| **प्रेमवीक्षणम् ।** | ५. | प्रेम भरी चितवन और | **मनः ॥** | १२. | हमारे मन में |

श्लोकार्थ—एकान्त में मिलन की इच्छा और प्रेम भाव को जगाने वाली बातें करते थे। प्रेम भरी चितवन और हँसते हुये मुखारविन्द तथा लक्ष्मी जी का निवास स्थान तुम्हारे विशाल वक्षः स्थल को देखकर हमारे मन में बार-बार लालसा बढ़ रही है। और वह मुग्ध होता जा रहा है॥

## अष्टादशः श्लोकः

**व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्ग ते वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम् ।**
**त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम् ॥१८॥**

पदच्छेद— व्रज वनौकसाम् व्यक्तिः अङ्ग ते वृजिनहन्त्री अलम् विश्वमङ्गलम् ।
त्यज मनाक् च नः त्वत् स्पृहा आत्मनाम् स्वजन हृत् रुजाम् यत् निषूदनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **व्रज वनौकसाम्** | ३. | व्रजवनवासियों के | **त्यजमनाक्** | १०. | थोड़ी सी ऐसी ओषधि दे दो |
| **व्यक्तिः** | २. | यह अभिव्यक्ति | **च नः त्वत्** | ८. | और हमारा हृदय तुम्हारे प्रति |
| **अङ्ग ते** | १. | हे प्यारे श्याम सुन्दर तुम्हारी | **स्पृहा आत्मानम्** | ९. | लालसा से भर रहा है अतः |
| **वृजिन** | ४. | दुःख ताप को | **स्वजनहृत्** | १२. | निजजनों के हृदय |
| **हन्त्री** | ५. | नष्ट करने वाली और | **रुजाम्** | १३. | रोग को |
| **अलम्** | ६. | सम्पूर्ण | **यत्** | ११. | जो |
| **विश्वमङ्गलम् ।** | ७. | विश्व का मङ्गल करने के लिये है | **निषूदनम् ॥** | १४. | सर्वथा निर्मूल कर दो |

श्लोकार्थ—हे प्यारे श्याम सुन्दर! तुम्हारी यह अभिव्यक्ति व्रज वनवासियों के दुःख-ताप को नष्ट करने वाली और सम्पूर्ण विश्व का मङ्गल करने के लिये है। और हमारा हृदय तुम्हारे प्रति लालसा से भर रहा है। अतः थोड़ी सी ऐसी ओषधि दे दो। जो निजजनों के हृदय रोग को सर्वथा निर्मूल कर दे॥

# एकोनविंशः श्लोकः

**यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु भीताः शनैः प्रियदधीमहि कर्कशेषु ।**
**तेनाटवीमटसि तद् व्यथते न किंस्वित् कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः ॥१९॥**

पदच्छेद—
यत् ते सुजात चरण अम्बुरुहम् स्तनेषु,
भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु ।
तेन अटवीम् अटसि तत् व्यथते न किंस्वित्,
कूर्प आदिभिः भ्रमति धीः भवत् आयुषाम् नः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यत् | २. | क्योंकि | तेन | १३. | उन्हीं कोमल चरणों से तुम |
| ते | ३. | तुम्हारे | अटवीम् | १५. | वन में |
| सुजात | ६. | सुकुमार हैं | अटसि | १६. | विचरण करते हो तो |
| चरण | ४. | चरण | तत् | १२. | तब |
| अम्बुरुहम् | ५. | कमल से भी | व्यथते | १७. | हमारा मन व्यथित |
| स्तनेषु | ८. | स्तनों पर | न किंस्वित् | १८. | क्यों नहीं होगा हमारी |
| भीताः | ११. | डर रही हैं | कूर्प आदिभिः | १४. | कङ्कड़ पत्थर आदि से युक्त |
| शनैः | ९. | उन्हें धीरे-धीरे | भ्रमति | २०. | भ्रमित हो रही हैं क्योंकि |
| प्रिय | १. | हे प्राण प्यारे ! श्यामसुन्दर | धीः | १९. | बुद्धि भी |
| दधीमहि | १०. | रखते हुये भी | भवत् | २२. | आपके लिये ही है |
| कर्कशेषु । | ७. | हम अपने कठोर | आयुषाम् नः ॥ | २१. | हमारा जीवन तो |

श्लोकार्थ—हे प्राणप्यारे ! श्यामसुन्दर ! क्योंकि तुम्हारे चरण कमल से भी सुकुमार हैं । हम अपने कठोर स्तनों पर उन्हें धीरे-धीरे रखते हुये भी डर रही हैं । तब उन्हीं कोमल चरणों से तुम कङ्कड़ पत्थर आदि से युक्त वन में विचरण करते हो । तो हमारा मन व्यथित क्यों नहीं होगा । हमारी बुद्धि भ्रमित हो रही है । क्योंकि हमारा जीवन तो आपके लिये हो है ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे रासक्रीडायां
गोपीगीतं नाम एकत्रिंशः अध्यायः ॥३१॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## द्वात्रिंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—इति गोप्यः प्रगायन्त्यः प्रलपन्त्यश्च चित्रधा ।**
**रुरुदुः सुस्वरं राजन् कृष्णदर्शनलालसाः ॥१॥**

पदच्छेद— इति गोप्यः प्रगायन्त्यः प्रलपन्त्यः च चित्रधा ।
रुरुदुः सुस्वरम् राजन् कृष्ण दर्शन लालसाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| इति | २. इस प्रकार | रुरुदुः | १२. रोने लगीं |
| गोप्यः | ३. भगवान् की प्यारी गोपियाँ | सुस्वरम् | ११. करुणाजनक स्वर मे |
| प्रगायन्त्यः | ५. सस्वर गाने | राजन् | १. हे परीक्षित् ! |
| प्रलपन्त्यः | ७. प्रलाप करने लगीं तथा | कृष्ण | ८. श्रीकृष्ण के |
| च | ६. और | दर्शन | ९. दर्शन की |
| चित्रधा । | ४. अनेक प्रकार से | लालसा ॥ | १०. लालसा से वे |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् । इस प्रकार भगवान् की प्यारी गोपियाँ अनेक प्रकार से सस्वर गाने और प्रलाप करने लगीं । श्रीकृष्ण के दर्शन की लालसा से वे करुणा जनक स्वर में रोने लगीं ॥

### द्वितीयः श्लोकः

**तासामाविरभूच्छौरिः स्मयमानमुखाम्बुजः ।**
**पीताम्बरधरः स्रग्वी साक्षान्मन्मथमन्मथः ॥२॥**

पदच्छेद— तासाम् आविरभूत् शौरिः स्मयमान मुख अम्बुजः ।
पीताम्बरधरः स्रग्वी साक्षात् मन्मथ मन्मथः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तासाम् | ५. उन गोपियों के मध्य | पीताम्बर | ७. वे पीताम्बर |
| आविरभूत् | ६. प्रकट हो गये | धरः | ८. धारण किये थे |
| शौरिः | ४. भगवान् श्रीकृष्ण | स्रग्वी | ९. गले में वन माला थी |
| स्मयमान | १. मन्द-मन्द मुसकान युक्त | साक्षात् | १०. उनका रूप साक्षात् |
| मुख | २. मुख | मन्मथ | ११. कामदेव के भी |
| अम्बुजः । | ३. कमल वाले | मन्मथः ॥ | १२. मन को हरने वाला था |

श्लोकार्थ—मन्द-मन्द मुसकान युक्त मुख वाले भगवान् श्रीकृष्ण उन गोपियों के मध्य प्रकट हो गये । वे पीताम्बर धारण किये थे । गले में वनमाला थी । उनका रूप साक्षात् कामदेव के भी मन को हरने वाला था ॥

## तृतीयः श्लोकः

**तं विलोक्यागतं प्रेष्ठं प्रीत्युत्फुल्लदृशोऽबलाः ।**
**उत्तस्थुर्युगपत् सर्वास्तन्वः प्राणमिवागतम् ॥३॥**

पदच्छेद— तम् विलोक्य आगतम् प्रेष्ठम् प्रीति उत्फुल्लदृशः अबलाः ।
उत्तस्थुः युगपत् सर्वाः तन्वः प्राणम् इव आगतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तम् | १. उन | उत्तस्थुः | १०. | उठ खड़ी हुईं |
| विलोक्य | ४. देखकर | युगपत् | ९. | एक साथ ही |
| आगतम् | २. आये हुये | सर्वाः | ८. | वे सब |
| प्रेष्ठम् | ३. परम प्रियतम श्रीकृष्ण | तन्वः | १४. | शरीर में स्फूर्ति आ जाती है |
| प्रीति | ५. प्रसन्नता के कारण | प्राणम् | १२. | प्राणों का |
| उत्फुल्लदृशः | ७. नेत्र खिल उठे | इव | ११. | जैसे |
| अबलाः । | ६. गोपियों के | आगतम् ॥ | १३. | सञ्चार हो जाने से |

श्लोकार्थ—उन आये हुये परम प्रियतम श्रीकृष्ण को देखकर प्रसन्नता के कारण गोपियों के नेत्र खिल उठे। वे सब एक साथ ही उठ खड़ी हुईं। जैसे प्राणों का सञ्चार हो जाने से शरीर में स्फूर्तिआ जाती है ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**काचित् कराम्बुजं शौरेर्जगृहेऽञ्जलिना मुदा ।**
**काचिद् दधार तद्बाहुमंसे चन्दनरूषितम् ॥४॥**

पदच्छेद — काचित् कर अम्बुजम् शौरेः जगृहे अञ्जलिना मुदा ।
काचित् दधार तत् बाहुम् अंसे चन्दन रूषितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| काचित् | १. एक गोपी ने | काचित् | ८. | दूसरी गोपी ने |
| कर | ४. कर | दधार | १४. | रख लिया |
| अम्बुजम् | ५. कमल को | तत् | ९. | उनके |
| शौरेः | ३. श्रीकृष्ण के | बाहुम् | १२. | भुजदण्ड को |
| जगृहे | ७. ले लिया तथा | अंसे | १३. | अपने कन्धे पर |
| अञ्जलिना | ६. अपने दोनों हाथों में | चन्दन | १०. | चन्दन |
| मुदा । | २. बड़े प्रेम से | रूषितम् ॥ | ११. | चर्चित |

श्लोकार्थ—एक गोपी ने बड़े प्रेम से श्रीकृष्ण के कर कमल को अपने दोनों हाथों में ले लिया तथा दूसरी गोपी ने उनके चन्दन चर्चित भुज दण्ड को अपने कन्धे पर रख लिया ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**काचिदञ्जलिनागृह्णात्तन्वी ताम्बूलचर्वितम् ।**
**एका तदङ्घ्रिकमलं सन्तप्ता स्तनयोरधात् ॥५॥**

**पदच्छेद**— काचित् अञ्जलिना अगृह्णात् तन्वी ताम्बूल चर्वितम् ।
एका तत् अङ्घ्रि कमलम् सन्तप्ता स्तनयोः अधात् ॥

**शब्दार्थ**—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| काचित् | १. तीसरी | | एका | ७. चौथी गोपी ने |
| अञ्जलिना | ५. अपने हाथों में | | तत् अङ्घ्रि | ८. उनके चरण |
| अगृह्णात् | ६. ले लिया (तथा) | | कमलम् | ९. कमलों को |
| तन्वी | २. सुन्दरी ने | | सन्तप्ता | १०. अपने सन्तप्त |
| ताम्बूल | ४. पान | | स्तनयोः | ११. वक्षः स्थल पर |
| चर्वितम् । | ३. भगवान् का चबाया हुआ | | अधात् ॥ | १२. रख लिया |

**श्लोकार्थ**—और तीसरी सुन्दरी ने भगवान् का चबाया हुआ पान अपने हाथों में ले लिया । तथा चौथी गोपी ने उनके चरण कमलों को अपने सन्तप्त वक्षः स्थल पर रख लिया ॥

## षष्ठः श्लोकः

**एका भ्रुकुटिमाबध्य प्रेमसंरम्भविह्वला ।**
**घ्नतीवैक्षत् कटाक्षेपैः संदष्टदशनच्छदा ॥६॥**

**पदच्छेद**— एका भ्रुकुटिम् आबध्य प्रेमसंरम्भ विह्वला ।
घ्नतीव ऐक्षत् कटाक्षैपैः संदष्ट दशनचछदा ॥

**शब्दार्थ**—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एका | १. पाँचवीं गोपी | घ्नतीव | ११. बींधती हुई उनकी ओर |
| भ्रुकुटिम् | ५. भौंहें | ऐक्षत् | १२. ताकने लगी |
| आबध्य | ६. चढ़ाकर | कटाक्षैपैः | १०. अपने कटाक्ष बाणों से |
| प्रेम | २. प्रणय | सन्दष्ट | ९. दबाकर |
| संरम्भ | ३. कोप से | दशन | ७. दाँतों से |
| विह्वला । | ४. विह्वल होकर | च्छदा ॥ | ८. ओठ |

**श्लोकार्थ**—पाँचवीं गोपी प्रणय कोप से विह्वल होकर-भौंहें चढ़ाकर दाँतों से ओठ दबाकर अपने कटाक्ष बाणों से बींधती हुई उनकी ओर ताकने लगी ॥

## सप्तमः श्लोकः

अपरानिमिषद्दृग्भ्यां जुषाणा तन्मुखाम्बुजम् ।
आपीतमपि नातृप्यत् सन्तस्तच्चरणं यथा ॥७॥

पदच्छेद— अपरा अनिमिषद् दृग्भ्याम् जुषाणा तत् मुख अम्बुजम् ।
आपीतम् अपि न अतृप्यत् सन्तः तत् चरणम् यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अपरा | १. छठी गोपी | आपीतम् | ८. | परन्तु उसका पान करते हुये |
| अनिमिषद् | २. अपने निर्निमेष | अपि | १०. | नहीं हुई |
| दृग्भ्याम् | ३. नयनों से | न अतृप्यत् | ६. | वह वैसे ही तृप्त |
| जुषाणा | ७. मकरन्द रस पान करने लगी | सन्तः | १२. | सन्तजन |
| तत् | ४. उनके | तत् | १३. | उनके |
| मुख | ५. मुख | चरणम् | १४. | चरणों के दर्शन से तृप्त नहीं होते हैं |
| अम्बुजम् । | ६. कमल का | यथा ॥ | ११. | जैसे |

श्लोकार्थ—छठी गोपी अपने निर्निमेष नयनों से उनके मुख कमल का मकरन्द रस पान करने लगीं । परन्तु उसका पान करते हुये वह वैसे ही तृप्त नहीं हुई जैसे सन्त जन उनके चरणों के दर्शन से तृप्त नहीं होते हैं ॥

## अष्टमः श्लोकः

तं काचिन्नेत्ररन्ध्रेण हृदिकृत्य निमील्य च ।
पुलकाङ्ग्युपगुह्यास्ते योगीवानन्दसम्प्लुता ॥८॥

पदच्छेद— तम् काचित् नेत्ररन्ध्रेण हृदि कृत्य निमील्य च ।
पुलक अङ्ग उपगुह्य आस्ते योगी इव आनन्द सम्प्लुता ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तम् | ४. भगवान् को | पुलक अङ्ग | ६. | उसका शरीर पुलकित हो गया और |
| काचित् | १. सातवीं गोपी | उपगुह्य | ८. | भगवान् का आलिङ्ग करने से |
| नेत्र | २. नेत्रों के | आस्ते | १४. | हो गयीं |
| रन्ध्रेण | ३. मार्ग से | योगी | १०. | वह योगियों के |
| हृदि | ५. अपने हृदय में | इव | ११. | समान |
| कृत्य | ६. ले गयीं और | आनन्द | १२. | परमानन्द में |
| निमील्य च । | ७. फिर उसने आँखें बन्द कर लीं | सम्प्लुता ॥ | १३. | मग्न |

श्लोकार्थ—सातवीं गोपी नेत्रों के मार्ग से भगवान् को अपने हृदय में ले गयी । और उसने आँखें बन्द कर लीं । भगवान का आलिङ्गन करने से उसका शरीर पुलकित हो गया और वह योगियों के समान परमानन्द में मग्न हो गयी ॥

## नवमः श्लोकः

सर्वास्ताः केशवालोकपरमोत्सवनिर्वृताः ।
जहुर्विरहजं तापं प्राज्ञं प्राप्य यथा जनाः ॥९॥

पदच्छेद — सर्वास्ताः केशव आलोक परम उत्सव निर्वृताः ।
जहुः विरहजम् तापम् प्राज्ञम् प्राप्य यथा जनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सर्वास्ताः | ३. उन समस्त गोपियों को | जहुः | ९. समाप्त हो गया |
| केशव | १. श्रीकृष्ण के | विरहजम् | ७. श्रीकृष्ण के विरह से उत्पन्न |
| आलोक | २. दर्शन से | तापम् | ८. सन्ताप वैसे ही |
| परम | ४. परम आनन्द और | प्राज्ञम् | ११. ज्ञानी सन्त को |
| उत्सव | ५. उल्लास | प्राप्य | १२. पाकर संसार की पीडा से मुक्त हो जाते हैं |
| निर्वृताः | ६. प्राप्त हुआ | यथा जनाः ॥ | १०. जैसे मुमुक्षु जन |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के दर्शन से उन समस्त गोपियों को परम आनन्द और उल्लास प्राप्त हुआ। श्रीकृष्ण के विरह से उत्पन्न सन्ताप वैसे ही समाप्त हो गया जैसे मुमुक्षुजन ज्ञानी सन्त को पाकर संसार की पीडा से मुक्त हो जाते हैं ॥

## दशमः श्लोकः

ताभिर्विधूतशोकाभिर्भगवानच्युतो वृतः ।
व्यरोचताधिकं तात पुरुषः शक्तिभिर्यथा ॥१०॥

पदच्छेद — ताभिः विधूत शोकाभिः भगवान् अच्युतः वृतः ।
व्यरोचत अधिकम् तात पुरुषः शक्तिभिः यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ताभिः | ४. उन गोपियों से | व्यरोचत | ९. शोभायमान हो रहे थे |
| विधूत | ३. मुक्त हुईं | अधिकम् | ८. वैसे ही अधिक |
| शोकाभिः | २. विरह व्यथा से | तात | १. हे परीक्षित् |
| भगवान् | ६. भगवान् | पुरुषः | १२. परमेश्वर शोभायमान होते हैं |
| अच्युतः | ७. श्याम सुन्दर | शक्तिभिः | ११. शक्तियों से सेवित |
| वृतः । | ५. घिरे हुये | यथा ॥ | १०. जैसे |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! विरह व्यथा से मुक्त हुईं उन गोपियों से घिरे हुये भगवान् श्याम सुन्दर वैसे ही अधिक शोभायमान हो रहे थे, जैसे शक्तियों से सेवित परमेश्वर शोभायमान होते हैं ॥

## एकादशः श्लोकः

ताः समादाय कालिन्द्या निर्विश्य पुलिनं विभुः ।
विकसत्कुन्दमन्दारसुरभ्यनिलषट्पदम् ॥११॥

पदच्छेद— ताः समादाय कालिन्द्याः निर्विश्य पुलिनम् विभुः ।
विकसत् कुन्द मन्दार सुरभि अनिल षट्पदम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ताः | २. उन्हें | विकसत् | ७. उस समय खिले हुये |
| समादाय | ३. लेकर | कुन्द | ८. कुन्द और |
| कालिन्द्याः | ४. यमुना जी के | मन्दार | ९. मन्दार के पुष्पों की |
| निर्विश्य | ६. प्रवेश किया | सुरभि | १०. सुगन्ध से युक्त |
| पुलिनम् | ५. पुलिन में | अनिल | ११. वायु के कारण |
| विभुः । | १. भगवान् श्रीकृष्ण ने | षट्पदम् ॥ | १२. मतवाले भौंरे गूंज रहे थे |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने उन्हें लेकर यमुना जी के पुलिन में प्रवेश किया । उस समय खिले हुये कुन्द और मन्दार के पुष्पों की सुगन्ध से युक्त मतवाले भौंरे गूंज रहे थे ॥

## द्वादशः श्लोकः

शरच्चन्द्रांशुसन्दोहध्वस्तदोषातमः शिवम् ।
कृष्णाया हस्ततरलाचितकोमलबालुकम् ॥१२॥

पदच्छेद— शरत् चन्द्रांशु सन्दोह ध्वस्त दोषा तमः शिवम् ।
कृष्णायाः हस्त तरल अचित कोमल बालुकम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| शरत् | १. शरद् पूर्णिमा के | कृष्णायाः | ६. यमुना जी ने |
| चन्द्रांशु | २. चन्द्र की चाँदनी ने | हस्त | ८. हाथों से |
| सन्दोह | ४. समूह को | तरल | ७. अपनी चञ्चल तरंगों के |
| ध्वस्त | ५. नष्ट कर दिया था | आचित | १२. रंग-मँच बना दिया था |
| दोषा तमः | ३. रात के अन्धकार | कोमल | १०. सुकोमल |
| शिवम् । | ११. सुखकर | बालुकम् ॥ | ९. बालुका का |

श्लोकार्थ—शरद् पूर्णिमा के चन्द्र की चाँदनी ने रात के अन्धकार समूह को नष्ट कर दिया था । यमुना जी ने अपनी चञ्चल तरंगों के हाथों और बालुका का सुकोमल रंगमँच बना दिया था ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**तद्दर्शनाह्लादविधूतहृद्रुजो मनोरथान्तं श्रुतयो यथा ययुः।**
**स्वैरुत्तरीयैः कुचकुङ्कुमाङ्कितैरचीक्लृपन्नासनमात्मबन्धवे ॥१३॥**

पदच्छेद — तत् दर्शन आह्लाद विधूत हृद् रुजः मनोरथ अन्तम् श्रुतयः यथा ययुः।
स्वैः उत्तरीयैः कुचकुङ्कुम अङ्कितैः अचीक्लृपन् आसनम् आत्मबन्धवे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तत् दर्शन | १. उन श्रीकृष्ण के दर्शन के | ययुः | ८. | कृतकृत्य हो जाती हैं। |
| आह्लाद | २. आनन्द से | स्वैः उत्तरीयैः | ११. | अपनी ओढ़नी को |
| विधूत | ४. शान्त हो गयी | कुचकुङ्कुम | ९. | वक्षः स्थल पर लगी केसर |
| हृद् रुजः | ३. उन गोपियों के हृदय की पीडा वैसे ही | अङ्कितैः | १०. | से चिह्नित |
| मनोरथ | ६. कामनाओं से | अचीक्लृपन् | १४. | बिछा दिया |
| अन्तम् | ७. परे पहुँच कर | आसनम् | १३. | बैठने के लिये |
| श्रुतयः यथा। | ५. जैसे श्रुतियाँ अन्ततः | आत्मबन्धवे ॥ | १२. | अपने प्यारे श्याम सुन्दर के |

श्लोकार्थ—उन श्रीकृष्ण के दर्शन के आह्लाद से उन गोपियों के हृदय की पीड़ा वैसे ही शान्त हो गयी जैसे श्रुतियाँ अन्ततः कामनाओं से परे पहुँच कर कृतकृत्य हो जाती हैं। वक्षः स्थल पर लगी केसर से चिह्नित अपनी ओढ़नी को अपने प्यारे श्याम सुन्दर के बैठने के लिये बिछा दिया ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**तत्रोपविष्टो भगवान् स ईश्वरो योगेश्वरान्तर्हृदि कल्पितासनः।**
**चकास गोपीपरिषद्गतोऽर्चितस्त्रैलोक्यलक्ष्म्येकपदं वपुर्दधत् ॥१४॥**

पदच्छेद — तत्र उपविष्टः भगवान् सः ईश्वरः योगेश्वर अन्तः हृदि कल्पित आसनः।
चकास गोपी परिषद् गतः अर्चितः त्रैलोक्य लक्ष्मी एक पदम् वपुः दधत् ॥

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| शब्दार्थ—तत्र | ६. गोपियों की ओढ़नी पर | चकास | ८. | शोभायमान हो रहे थे |
| उपविष्टः | ७. बैठे हुये अत्यन्त | गोपीपरिषद् | १२. | गोपियों के समूह के |
| भगवान् सः ईश्वरः | ५. वे भगवान् श्याम सुन्दर | गतः | १३. | मध्य उनके द्वारा |
| योगेश्वर | १. बड़े-बड़े योगीश्वरों के | अर्चितः | १४. | पूजित हो रहे थे |
| अन्तः हृदि | २. हृदय के अन्दर | त्रैलोक्य लक्ष्मी | ९. | तीनों लोकों का ऐश्वर्य |
| कल्पित | ३. कल्पित किये हुए | एक पदम् | १०. | जिनका एक अंशमात्र है |
| आसनः। | ४. आसन पर बैठने वाले | वपुः दधत् ॥ | ११. | ऐसे सुन्दर शरीर को धारण किये हुये वे |

श्लोकार्थ—बड़े-बड़े योगीश्वरों के हृदय के अन्दर कल्पित किये हुये आसन पर बैठने वाले वे भगवान् श्याम सुन्दर गोपियों की ओढ़नी पर बैठे हुये अत्यन्त शोभायमान हो रहे थे। तीनों लोकों का ऐश्वर्य जिनका एक अंशमात्र है, ऐसे सुन्दर शरीर को धारण किये हुये वे गोपियों के समूह के मध्य उनके द्वारा पूजित हो रहे थे ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**सभाजयित्वा तमनङ्गदीपनं सहासलीलेक्षणविभ्रमभ्रुवा ।**
**संस्पर्शनेनाङ्ककृताङ्घ्रिहस्तयोः संस्तुत्य ईषत्कुपिता बभाषिरे ॥१५॥**

पदच्छेद— सभाजयित्वा तम् अनङ्ग दीपनम् सहास लीला ईक्षण विभ्रम भ्रुवा ।
संस्पर्शनेन अङ्क कृत अङ्घ्रि हस्तयोः संस्तुत्य ईषत् कुपिताः बभाषिरे ।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सभाजयित्वा | ७. | सम्मान किया | संस्पर्शनेन | ११. | और वे उन्हें दबाने लगीं |
| तम् | ३. | उन श्री कृष्ण का | अङ्ककृत | १०. | अपनी गोद में रख लिया |
| अनङ्ग | १. | प्रेम और आकांक्षा को | अङ्घ्रि | ८. | किसी ने उनके चरणों को |
| दीपनम् | २. | उभाड़ने वाले | हस्तयोः | ९. | किसी ने हाथों को |
| सहास | ४. | गोपियों ने मन्द मुसकान, | संस्तुत्य | १२. | उनकी प्रशंसा करती हुई |
| लीलाईक्षण | ५. | विलास पूर्ण चितवन और | ईषत्कुपिता | १३. | तनिक रूठ कर |
| विभ्रमभ्रुवा । | ६. | तिरछी भौंहों से | बभाषिरे ॥ | १४. | कहने लगीं |

श्लोकार्थ—प्रेम और आकांक्षा को उभाड़ने वाले उन श्रीकृष्ण का गोपियों ने मन्द मुसकान, विलास भरी चितवन और तिरछी भौंहों से सम्मान किया । किसी ने उनके चरणों को और किसी ने उनके हाथों को अपनी गोद में रख लिया । और वे उन्हें दबाने लगीं । तथा उनकी प्रशंसा करती हुई वे तनिक रूठकर कहने लगीं ॥

## षोडशः श्लोकः

**गोप्य ऊचुः—भजतोऽनुभजन्त्येक एक एतद्विपर्ययम् ।**
**नोभयांश्च भजन्त्येक एतन्नो ब्रूहि साधु भोः ॥१६॥**

पदच्छेद— भजतः अनुभजन्ति एके एके एतद् विपर्ययम् ।
न उभयान् च भजन्ति एके एतत् नः ब्रूहि साधु भोः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भजतः | ३. | प्रेम करने वालों से ही | च | ८. | और |
| अनुभजन्ति | ४. | प्रेम करते हैं | भजन्ति | ११. | करते हैं |
| एके | २. | कुछ लोग तो | एके | ९. | कुछ लोग तो |
| एके | ५. | कुछ लोग | एतत् | १२. | इनमें आपको |
| एतत् | ६. | इसके | नः ब्रूहि | १४. | हमें बताइये |
| विपर्ययम् । | ७. | विपरीत आचरण करते हैं | साधु | १३. | कौन अच्छा लगता है यह |
| न उभयान् | १०. | उन दोनों से ही प्रेम नहीं | भोः ॥ | १. | हे नट नागर ! |

श्लोकार्थ—हे नट नागर ! कुछ लोग तो प्रेम करने वालों से ही प्रेम करते हैं । कुछ लोग इसके विपरीत आचरण करते हैं । और कुछ लोग उन दोनों से ही प्रेम नहीं करते हैं । इनमें आपको कौन अच्छा लगता है । यह हमें बताइये ॥

## सप्तदशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच— मिथो भजन्ति ये सख्यः स्वार्थैकान्तोद्यमा हि ते ।
न तत्र सौहृदं धर्मः स्वार्थार्थं तद्धि नान्यथा ॥१७॥

पदच्छेद— मिथः भजन्ति ये सख्यः स्वार्थ एकान्त उद्यमाः हि ते ।
न तत्र सौहृदम् धर्मः स्वार्थ अर्थम् तत् हि न अन्यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मिथः | २. | प्रेम करने पर | न तत्र | ८. | उनमें न तो |
| भजन्ति | ३. | प्रेम करते हैं | सौहृदम् | ९. | सौहार्द है |
| ये सख्यः | १. | मेरी प्रिय सखियो ! जो लोग | धर्मः | १०. | न धर्म है |
| स्वार्थ | ७. | स्वार्थ को लेकर है | स्वार्थ | १२. | स्वार्थ को |
| एकान्त | ५. | सारा | अर्थम् | १३. | लेकर ही है |
| उद्यमाः | ६. | उद्योग | तत् हि | ११. | उनका प्रेम |
| हि ते । | ४. | उनका तो | न अन्यथा ॥ | १४. | इसके अतिरिक्त कोई प्रयोजन नहीं है |

श्लोकार्थ—मेरी प्रिय सखियो ! जो लोग प्रेम करने पर प्रेम करते हैं उनका तो सारा उद्योग स्वार्थ को लेकर है। उनमें न तो सौहार्द्र है। न धर्म है। उनका प्रेम स्वार्थ को लेकर ही है। इसके अतिरिक्त कोई प्रयोजन नहीं है ॥

## अष्टादशः श्लोकः

भजन्त्यभजतो ये वै करुणाः पितरो यथा ।
धर्मो निरपवादोऽत्र सौहृदं च सुमध्यमाः ॥१८॥

पदच्छेद— भजन्ति अभजतः ये वै करुणाः पितरः यथा ।
धर्मः निरपवादः अत्र सौहृदम् च सुमध्यमाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भजन्ति | ७. | प्रेम करते हैं | धर्मः | १२. | धर्म भी होता है |
| अभजतः | ६. | प्रेम न करने वालों से | निरपवादः | ११. | निश्छल |
| ये वै | ५. | वैसे ही जो लोग | अत्र | ८. | उनके व्यवहार में |
| करुणाः | ४. | करुणाशील होते हैं | सौहृदम् | ९. | सौहार्द होता है |
| पितरः | ३. | माता-पिता स्वभाव से ही | च | १०. | और |
| यथा । | २. | जिस प्रकार | सुमध्यमाः ॥ | १. | हे सुन्दरियो ! |

श्लोकार्थ—हे सुन्दरियो ! जिस प्रकार माता-पिता स्वभाव से ही करुणाशील होते हैं वैसे ही जो लोग प्रेम न करने वालों से प्रेम करते हैं, उनके व्यवहार में सौहार्द होता है। और निश्छल धर्म भी होता है ॥

# एकोनविंशः श्लोकः

भजतोऽपि न वै केचिद् भजन्त्यभजतः कुतः ।
आत्मारामा ह्याप्तकामा अकृतज्ञा गुरुद्रुहः ।।१९।।

पदच्छेद— भजतः अपि न वै केचित् भजन्ति अभजतः कुतः ।
आत्मारामा हि आप्त कामाः अकृतज्ञाः गुरु द्रुहः ।।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| भजतः अपि | २. प्रेम करने वालों से भी | आत्मारामाः | ७. अपने आप में ही मस्त रहने वाले |
| न वै | ३. प्रेम नहीं करते तब | हि आप्त | ८. पूर्ण |
| केचित् | १. कुछ लोग जब | कामाः | ९. काम |
| भजन्ति | ६. प्रेम करेंगे । ऐसे लोग | अकृतज्ञाः | १०. उपकार न मानने वाले और |
| अभजतः | ४. प्रेम न करने वालों से | गुरु | ११. गुरु जनों से भी |
| कुतः । | ५. कैसे | द्रुहः ।। | १२. द्रोह करने वाले होते हैं |

श्लोकार्थ—कुछ लोग जब प्रेम करने वालों से भी प्रेम नहीं करते, तब प्रेम न करने वालों से कैसे प्रेम करेंगे । ऐसे लोग अपने आप में ही मस्त रहने वाले, पूर्ण काम, उपकार न मानने वाले और गुरुजनों से भी द्रोह करने वाले होते हैं ।।

# विंशः श्लोकः

नाहं तु सख्यो भजतोपि जन्तून् भजाम्यमीषामनुवृत्तिवृत्तये ।
यथाधनो लब्धधने विनष्टे तच्चिन्तयान्यन्निभृतो न वेद ।।२०।।

पदच्छेद - न अहम् तु सख्यः भजतः अपि जन्तून् भजामि अमीषाम् अनुवृत्ति वृत्तये ।
यथः अधनः लब्धधने विनष्टे तत् चिन्तया अन्य निभृतः न वेद ।।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| न | ७. प्रेम नहीं | यथा | ९. जैसे |
| अहम् तु सख्यः | १. हे गोपियों ! मैं तो | अधनः | १०. निर्धन व्यक्ति को |
| भजतः | २. प्रेम करने वाले | लब्धधने | ११. कभी बहुत साधन मिल जाय और |
| अपि जन्तून् | ३. प्राणियों से भी | विनष्टे | १२. फिर खो जाय तो |
| भजामि | ८. करता (क्योंकि) | तत् | १३. उस |
| अमीषाम् | ४. उनकी | चिन्तया | १४. चिन्ता से दुःखी |
| अनुवृत्ति | ६. अपने में लगाने के लिये | अन्य निभृतः | १५. भरा होने के कारणअन्य कुछ |
| वृत्तये । | ५. चित्त वृत्ति को | न वेद ।। | १६. नहीं जानता है |

श्लोकार्थ—हे गोपियो ! मैं तो प्रेम करने वाले प्राणियों से भी उनकी चित्त वृत्ति को अपने में लगाने के लिये प्रेम नहीं करता । क्योंकि जैसे निर्धन व्यक्ति को कभी बहुत धन मिल जाय और फिर खो जाय तो उस खोये हुये धन की चिन्ता से भरा होने के कारण अन्य कुछ नहीं जानता है ।।

## एकविंशः श्लोकः

**एवं मदर्थोज्झितलोकवेदं स्वानां हि वो मय्यनुवृत्तयेऽबलाः ।**
**मया परोक्षं भजता तिरोहितं मासूयितुं मार्हथ तत् प्रियं प्रियाः ॥२१॥**

पदच्छेद— एवम् मद् अर्थ उज्झित लोक वेदं स्वानाम् हि वः मयि अनुवृत्तये अबलाः ।
मया परोक्षम् भजता तिरोहितम् माअसूयितुम् मा अर्हथ तत् प्रियम् प्रियाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | ३. | इस प्रकार | मया परोक्षम् | ६. | इसलिये मैं परोक्षरूप से |
| मद् अर्थः | ४. | मेरे लिये | भजता | १०. | तुमसे प्रेम करता हुआ |
| उज्झित | ७. | छोड़ दिया है अतः | तिरोहितम् | ११. | छिप गया था |
| लोक वेदम् | ५. | लोक मर्यादा वेद मार्ग और | माअसूयितुम् | १२. | मेरे प्रेम में दोष निकालना |
| स्वानाम् | ६. | सगे सम्बन्धियों को भी | माअर्हथ | १३. | उचित नहीं है |
| हि वः | २. | तुम लोगों ने | तत् | १४. | अतः |
| मयि अनुवृत्तये | ८. | तुम्हारी चित्त वृत्ति मुझमें लगी रहे | प्रियम् | १६. | मैं तुम्हारा प्यारा हूँ |
| अबलाः । | १. | हे गोपियो ! | प्रियाः ॥ | १५. | तुम मेरी प्यारी हो |

श्लोकार्थ—हे गोपियो ! तुम लोगों ने इस प्रकार मेरे लिये लोक मर्यादा, वेद मार्ग और सगे सम्बन्धियों को भी छोड़ दिया है । अतः तुम्हारी चित्तवृत्ति मुझमें लगी रहे । इसलिये मैं परोक्षरूप से तुम से प्रेम करता हुआ छिप गया था । मेरे प्रेम में दोष निकालना उचित नहीं है । अतः तुम मेरी प्यारी हो और मैं तुम्हारा प्यारा हूँ ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**न पारयेऽहं निरवद्यसंयुजां स्वसाधुकृत्यं विबुधायुषापि वः ।**
**या माभजन् दुर्जरगेहशृङ्खलाः संवृश्च्य तद् वः प्रतियातु साधुना ॥२२॥**

पदच्छेद— न पारये अहम् निरवद्य संयुजाम् स्वसाधु कृत्यम् विबुध आयुषा अपि वः ।
याः मा अभजन् दुर्जर गेह शृङ्खलाः संवृश्च्य तद् वः प्रतियातु साधुना ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न पारये | ११. | उपकार नहीं चुका सकता हूँ | याः माअभजन् | २. | जो यह प्रेम में |
| अहम्निरवद्य | ६. | मैं निर्मल | दुर्जरगेह | ३. | कठिन घर गृहस्थी की |
| संयुजाम् | ७. | संयोगवाली तुम्हारा | शृङ्खलाः | ४. | बेड़ियों को |
| स्व साधु | ८. | अपने शुभ | संवृश्च्य | ५. | तोड़ दिया है तो |
| कृत्यम् विबुध | ९. | कार्यों से अनन्त | तत् वः | १२. | इसलिये तुम लोग |
| आयुषा अपि | १०. | वर्षों में भी | प्रतियातु | १४. | मुझे उऋण कर सकती हो |
| वः । | १. | तुमने | साधुना ॥ | १३. | अपने स्वभाव से ही सौम्य |

श्लोकार्थ—हे गोपियो ! तुमने जो यह प्रेम में कठिन घर गृहस्थी की बेड़ियों को तोड़ दिया है तो मैं निर्मल संयोग वाली तुम्हारा अपने शुभ कार्यों से अनन्त वर्षों में भी उपकार नहीं चुका सकता हूँ । इसलिये तुम लोग अपने सौम्य स्वभाव से ही मुझे उऋण कर सकती हो ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे रासक्रीडायां
गोपीसान्त्वनं नाम द्वात्रिंशः अध्यायः ॥३२॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## त्रयस्त्रिंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इत्थं भगवतो गोप्यः श्रुत्वा वाचः सुपेशलाः।
जहुर्विरहजं तापं तदङ्गोपचिताशिषः ॥१॥

पदच्छेद— इत्थम् भगवतः गोप्यः श्रुत्वा वाचः सुपेशलाः।
जहुः विरहजम् तापम् तत् अङ्ग उपचित आशिषः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| इत्थम् | २. इस प्रकार | जहुः | ६. मुक्त हो गयीं (और) |
| भगवतः | ३. भगवान् की | विरहजम् | ७. विरह जन्य |
| गोप्यः | १. गोपियाँ | तापम् | ८. ताप से भी |
| श्रुत्वा | ६. सुनकर | तत् अङ्ग | १०. उनके अङ्ग सङ्ग से |
| वाचः | ५. वाणी | उपचित | ११. सफल |
| सुपेशलाः। | ४. प्रेम भरी सुमधुर | आशिषः ॥ | १२. मनोरथ हो गयीं |

श्लोकार्थ—गोपियाँ इस प्रकार भगवान् की प्रेम भरी सुमधुर वाणी सुनकर विरह जन्य ताप से मुक्त हो गयीं और उनके अङ्ग सङ्ग से सफल मनोरथ हो गयीं ॥

### द्वितीयः श्लोकः

तत्रारभत गोविन्दो रासक्रीडामनुव्रतैः।
स्त्रीरत्नैरन्वितः प्रीतैरन्योन्याबद्धबाहुभिः ॥२॥

पदच्छेद— तत्र आरभत गोविन्दः रासक्रीडाम् अनुव्रतैः।
स्त्री रत्नैः अन्वितः प्रीतैः अन्योन्य बद्ध बाहुभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत्र | ८. यमुना तट पर | स्त्रीरत्नैः | २. उन स्त्री रत्नों |
| आरभत | १२. प्रारम्भ की | अन्वितः | ३. के साथ |
| गोविन्दः | १. भगवान् श्रीकृष्ण ने | प्रीतैः | ९. प्रेम पूर्वक |
| रास | १०. रास | अन्योन्य | ४. जो परस्पर |
| क्रीडाम् | ११. क्रीडा | बद्ध | ६. डाले खड़ी थीं तथा |
| अनुव्रतैः। | ७. उनका अनुसरण करने वाली थीं | बाहुभिः ॥ | ५. बाँह में बाँह |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने उन स्त्री रत्नों के साथ जो परस्पर बाँह में बाँह डाले खड़ी थीं तथा अनुसरण करने वाली थीं। यमुना तट पर प्रेम पूर्वक रास क्रीडा प्रारम्भ की ॥

## तृतीयः श्लोकः

रासोत्सवः सम्प्रवृत्तो गोपीमण्डलमण्डितः ।
योगेश्वरेण कृष्णेन तासां मध्ये द्वयोर्द्वयोः ।
प्रविष्टेन गृहीतानां कण्ठे स्वनिकटं स्त्रियः ॥३॥

पदच्छेद— रास उत्सवः सम्प्रवृत्तः गोपी मण्डल मण्डितः ।
योगेश्वरेण कृष्णेन तासाम् मध्ये द्वयोः द्वयोः ।
प्रविष्टेन गृहीतानाम् कण्ठे स्वनिकटम् स्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| रास | १४. रास | तासाम् | ३. उन |
| उत्सवः | १५. लीला | मध्ये | ५. मध्य में |
| सम्प्रवृत्तः | १६. प्रारम्भ की | द्वयोः द्वयोः । | ४. दो-दो गोपियों के |
| गोपी | ११. इस प्रकार गोपियों के | प्रविष्टेन | ६. प्रकट हो गये और |
| मण्डल | १२. समूह से | गृहीतानाम् | ८. अपना हाथ डाल दिया तथा |
| मण्डितः । | १३. सुशोभित होकर उन्होंने | कण्ठे | ७. उनके गले में |
| योगेश्वरेण | १. सम्पूर्ण योगों के स्वामी | स्वनिकटम् | १०. अपने समीप ही समझा |
| कृष्णेन | २. श्रीकृष्ण | स्त्रियः ॥ | ९. गोपियों ने उन्हें |

श्लोकार्थ—सम्पूर्ण योगों के स्वामी श्रीकृष्ण उन दो-दो गोपियों के मध्य में प्रकट हो गये और उनके गले में अपना हाथ डाल दिया तथा गोपियों ने उन्हें अपने समीप ही समझा। इस प्रकार गोपियों के समूह से सुशोभित होकर उन्होंने रासलीला प्रारम्भ की ॥

## चतुर्थः श्लोकः

यं मन्येरन् नभस्तावद् विमानशतसङ्कुलम् ।
दिवौकसां सदाराणामौत्सुक्यापहृतात्मनाम् ॥४॥

पदच्छेद— यम् मन्येरन् नभः तावद् विमानशत सङ्कुलम् ।
दिवौकसाम् सदाराणाम् औत्सुक्य अपहृत आत्मनाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यम् | १. गोपियों ने जब उन्हें | दिवौकसाम् | ६. सभी देवता अपनी |
| मन्येरन् | २. अपने निकट समझा | सदाराणाम् | ७. पत्नियों के साथ आ गये |
| नभः तावद् | ३. तब तक आकाश में | औत्सुक्य | ८. उत्सुकता के कारण |
| विमानशत | ४. शत-शत विमानों की | अपहृत | १०. वश में नहीं था |
| सङ्कुलम् । | ५. भीड़ लग गयी | आत्मनाम् ॥ | ९. उनका मन |

श्लोकार्थ—गोपियों ने जब उन्हें अपने निकट समझा तब-तक आकाश में शत-शत विमानों की भीड़ लग गयी। सभी देवता अपनी पत्नियों के साथ आ गये। उत्सुकता के कारण उनका मन वश में नहीं था ॥

## पञ्चमः श्लोकः

ततो दुन्दुभयो नेदुर्निपेतुः पुष्पवृष्टयः ।
जगुर्गन्धर्वपतयः सस्त्रीकास्तद्यशोऽमलम् ॥५॥

पदच्छेद— ततः दुन्दुभयः नेदुः निपेतुः पुष्प वृष्टयः ।
जगुः गन्धर्व पतयः सस्त्रीकाः तत् यशः अमलम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | तब | जगुः | १२. | गान करने लगे |
| दुन्दुभयः | २. | दिव्य दुन्दुभियाँ | गन्धर्व पतयः | ७. | गन्धर्व पति |
| नेदुः | ३. | बज उठीं | सस्त्रीकाः | ८. | अपनी-अपनी पत्नियों के साथ |
| निपेतुः | ६. | होने लगी | तत् | ९. | भगवान् के |
| पुष्प | ४. | दिव्य पुष्पों की | यशः | ११. | यश का |
| वृष्टयः । | ५. | वर्षा | अमलम् ॥ | १०. | निर्मल |

श्लोकार्थ—तब दिव्य दुन्दुभियाँ बज उठीं। दिव्य पुष्पों की वर्षा होने लगी। गन्धर्व पति अपनी-अपनी पत्नियों के साथ भगवान् के निर्मल यश का गान करने लगे ॥

## षष्ठः श्लोकः

वलयानां नूपुराणां किङ्किणीनां च योषिताम् ।
सप्रियाणामभूच्छब्दस्तुमुलो रासमण्डले ॥६॥

पदच्छेद— वलयानाम् नूपुराणाम् किङ्किणीनाम् च योषिताम् ।
सप्रियाणाम् अभूत् शब्दः तुमुलः रासमण्डले ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वलयानाम् | ४. | कलाइयों के कङ्गन | सप्रियाणाम् | २. | श्रीकृष्ण के साथ |
| नूपुराणाम् | ५. | पैरों के पायजेब | अभूत् | १०. | हो रही थी |
| किङ्किणीनाम् | ७. | करधनी के घुंघरुओं की | शब्दः | ८. | मधुर ध्वनि भी |
| च | ६. | और | तुमुलः | ९. | बड़े ही जोर से |
| योषिताम् । | ३. | गोपियों की | रासमण्डले ॥ | १. | रासमण्डल में |

श्लोकार्थ—उस समय रासमण्डल में गोपियों की कलाइयों के कङ्गन पैरों के पायजेब और करधनी के घुंघरुओं की मधुर ध्वनि भी बड़े ही जोर से हो रही थी ॥

## सप्तमः श्लोकः

तत्रातिशुशुभे ताभिर्भगवान् देवकीसुतः ।
मध्ये मणीनां हैमानां महामरकतो यथा ॥७॥

पदच्छेद— तत्र अति शुशुभे ताभिः भगवान् देवकी सुतः ।
मध्ये मणीनाम् हैमानाम् महा मरकतो यथा ॥

| शब्दार्थ— | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तत्र | १. यमुना की रेती पर | मध्ये | १०. | मध्य में |
| अति | ५. उसी प्रकार बड़ी | मणीनाम् | ९. | मणियों के |
| शुशुभे | ६. शोभा हुई | हैमानाम् | ८. | सुवर्ण |
| ताभिः | २. गोपियों के बीच में | महा | ११. | ज्योतिर्मयी |
| भगवान् | ४. भगवान् श्रीकृष्ण की | मरकतो | १२. | नीलमणि चमक रही हो |
| देवकी सुतः । | ३. देवकी नन्दन | यथा ॥ | ७. | जैसे |

श्लोकार्थ—यमुना की रेती पर गोपियों के बीच में देवकी नन्दन श्रीकृष्ण की उसी प्रकार बड़ी शोभा हुई जैसे सुवर्ण मणियों के मध्य में ज्योतिर्मयी नीलमणि चमक रही हो ॥

## अष्टमः श्लोकः

पादन्यासैर्भुजविधुतिभिः सस्मितैर्भ्रूविलासै-
र्भज्यन्मध्यैश्चलकुचपटैः कुण्डलैर्गण्डलोलैः ।
स्विद्यन्मुख्यः कबररशनाग्रन्थयः कृष्णवध्वो
गायन्त्यस्तं तडित इव ता मेघचक्रे विरेजुः ॥८॥

पदच्छेद—

पादन्यासैः भुजविधुतिभिः सस्मितैः भ्रूविलासैः भज्यत् मध्यैः चलत् कुचपटैः कुण्डलैः गण्ड लोलैः ।
स्विद्यत् मुख्यः कबररशना ग्रन्थयः कृष्णवध्वः गायन्त्यः तम् तडित इव ताः मेघचक्रे विरेजुः ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| पादन्यासैः | १. गोपियाँ पैर नचातीं | स्विद्यत् मुख्यः | ११. मुख पर पसीना आ गया था |
| भुजविधुतिभिः | २. हाथ घुमातीं | कबररशना | १२. केशों की चोटियाँ |
| सस्मितैः | ३. मुसकान सहित | ग्रन्थयः | १३. ढीली पड़ गईं थीं |
| भ्रू विलासैः | ४. भौंहें मटकातीं तो वे | कृष्णवध्वः | १४. श्रीकृष्ण की परम प्रेयसी |
| भज्यत्मध्यैः | ५. मानों कमर से टूट-टूट जातीं | गायन्त्यतम् | १६. गाती हुई उन श्रीकृष्ण रूपी |
| चलत् | ६. चलने की फुर्ती से उनके | तडितः | १९. चमकती बिजली की भाँति |
| कुचपटैः | ७. स्तन हिलते और वस्त्र उड़ जाते इव | | १८. मानों |
| कुण्डलैः | ९. कुण्डल उनके | ताः | १५. वे गोपियाँ |
| गण्ड | १०. गण्ड स्थल पर चमक रहे थे | मेघचक्रे | १७. मेघ मण्डल के बीच |
| लोलैः । | ८. चञ्चल | विरेजुः ॥ | २०. सुशोभित हो रही थीं। |

श्लोकार्थ—गोपियाँ पैर नचातीं, हाथ घुमातीं, मुसकान सहित भौहें मटकातीं तो वे मानों कमर से टूट-टूट जातीं । चलने की फुर्ती से उनके स्तन हिलते और वस्त्र उड़ जाते । चञ्चल कुण्डल उनके गण्ड स्थल पर चमक रहे थे । मुख पर पसीना आ गया था । केशों की चोटियाँ ढीली पड़ गईं थीं । श्रीकृष्ण की परम प्रेयसी वे गोपियाँ गाती हुई श्रीकृष्णरूपी मेघ मण्डल के बीच मानों चमकती बिजली की भाँति सुशोभित हो रहीं थीं ॥

## नवमः श्लोकः

उच्चैर्जगुर्नृत्यमाना रक्तकण्ठ्यो रतिप्रियाः ।
कृष्णाभिमर्शमुदिता यद्गीतेनेदमावृतम् ॥९॥

पदच्छेद— उच्चैः जगुः नृत्यमानाः रक्त कण्ठ्यः रति प्रियाः ।
कृष्ण अभिमर्श मुदिताः यत् गीतेन इदम् आवृतम् ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उच्चैः | ४. | उच्च | कृष्ण | ७. | उन्हीं श्रीकृष्ण का |
| जगुः | ६. | कर रही थीं । तथा | अभिमर्श | ८. | संस्पर्श पाकर |
| नृत्यमानाः | २. | नाचतीं और | मुदिताः | ९. | आनन्द मग्न हो रही थीं |
| रक्त | ३. | प्रेम पूर्ण | यत् गीतेन | १०. | जिनके गान से |
| कण्ठ्यः | ५. | स्वर से गान | इदम् | ११. | यह सारा जगत् |
| रति प्रियाः । | १. | वे कृष्ण को प्यारी गोपियां | आवृतम् ॥ | १२. | आज भी गूंज रहा है |

श्लोकार्थ—वे कृष्ण की प्यारी गोपियाँ नाचतीं और प्रेम पूर्ण उच्च स्वर से गान कर रही थीं । तथा उन्हीं श्रीकृष्ण का संस्पर्श पाकर आनन्द मग्न हो रही थीं । जिनके गान से यह सारा जगत् आज भी गूंज रहा है ।

## दशमः श्लोकः

काचित् समं मुकुन्देन स्वरजातीरमिश्रिताः ।
उन्निन्ये पूजिता तेन प्रीयता साधु साध्विति
तदेव ध्रुवमुन्निन्ये तस्यै मानं च बह्वदात् ॥१०॥

पदच्छेद— काचित् समम् मुकुन्देन स्वर जातीः अमिश्रिताः ।
उन्निन्ये पूजिता तेन प्रीयता साधु सधुइति ।
तत् एव ध्रुवम् उन्निन्ये तस्यै मानम् च बहु अदात् ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| काचित् | १. | कोई गोपी | साधु साधुइति | ८. | वाह-वाह कह कर उसकी |
| समम् मुकुन्देन | २. | भगवान् के साथ | तत् एव | १०. | उसी राग को अन्य गोपी ने |
| स्वर | ३. | उनके स्वर में | ध्रुवम् उन्निन्ये | ११. | ध्रुव पद में गाया |
| जातीः | ४. | स्वर मिलाकर | तस्यै | १३. | उस गोपी को भी |
| अमिश्रिता : | ५. | कुछ ऊँचे स्वर से | मानम् | १५. | सम्मान |
| उन्निन्ये | ६. | राग अलापने लगी | च | १२. | और तब |
| पूजिता | ९. | प्रशंसा करने लगे | बहु | १४. | भगवान् ने |
| तेन प्रीयता | ७. | उससे प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण | अदात् ॥ | १६. | दिया |

श्लोकार्थ—कोई गोपी भगवान् के साथ उनके स्वर में स्वर मिला कर कुछ ऊँचे स्वर से राग अलापने लगी । उससे प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण वाह-वाह कह कर उसकी प्रशंसा करने लगे । उसी राग को दूसरी गोपी ने ध्रुव पद में गाया । और तब उस गोपी को भी भगवान् ने सम्मान दिया ॥

## एकादशः श्लोकः

काचिद् रासपरिश्रान्ता पार्श्वस्थस्य गदाभृतः ।
जग्राह बाहुना स्कन्धं श्लथद्वलयमल्लिका ॥११॥

पदच्छेद— काचित् रास परिश्रान्ता पार्श्वस्थस्य गदाभृतः ।
जग्राह बाहुना स्कन्धम् श्लथत् वलय मल्लिका ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| काचित् | १. एक गोपी | जग्राह | १२. कस कर पकड़ लिया |
| रास | २. नृत्य करते-करते | बाहुना | ११. अपनी बाँह से |
| परिश्रान्ता | ३. थक गई | स्कन्धम् | १०. कन्धे को |
| पार्श्व | ७. अपने बगल में | श्लथत् | ६. खिसकने लगे उसने |
| स्थस्य | ८. खड़े | वलय | ४. उसकी कलाइयों से कंगन और |
| गदाभृतः । | ९. श्याम सुन्दर के | मल्लिका ॥ | ५. बेला के फूल |

श्लोकार्थ—एक गोपी नृत्य करते-करते थक गई। उसकी कलाइयों से कंगन और बेला के फूल खिसकने लगे। उसने अपने बगल में खड़े श्याम सुन्दर के कन्धे को कस कर पकड़ लिया ॥

## द्वादशः श्लोकः

तत्रैकांसगतं बाहुं कृष्णस्योत्पलसौरभम् ।
चन्दनालिप्तमाघ्राय हृष्टरोमा चुचुम्ब ह ॥१२॥

पदच्छेद— तत्र एका अंसगतम् बाहुम् कृष्णस्य उत्पल सौरभम् ।
चन्दन आलिप्तम् आघ्राय हृष्ट रोमा चुचुम्बह ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत्र एका | २. वहाँ एक गोपी के | चन्दन | ७. उसमें चन्दन का |
| अंसगतम् | ४. कंधे पर रखा | आलिप्तम् | ८. लेप भी था, उसे |
| बाहुम् | ३. हाथ | आघ्राय | ९. सूँघ कर गोपी का |
| कृष्णस्य | १. श्रीकृष्ण ने अपना | हृष्ट | ११. खिल उठा तब उसने वह |
| उत्पल | ५. वह कमल के समान | रोमा | १०. रोम-रोम |
| सौरभम् । | ६. सुगन्धित था और | चुचुम्बह ॥ | १२. चूम लिया |

श्लोकार्थ—वहाँ श्रीकृष्ण ने अपना हाथ एक गोपी के कंधे पर रखा। वह कमल के समान सुगन्धित था। और उसमें चन्दन का लेप भी था। उसे सूँघ कर गोपी का रोम-रोम खिल उठा। तब उसने वह हाथ चूम लिया ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

कस्याश्चिन्नाट्यविक्षिप्तकुण्डलत्विषमण्डितम् ।
गण्डं गण्डे सन्दधत्या अदात्ताम्बूलचर्वितम् ॥१३॥

पदच्छेद— कस्याश्चित् नाट्य विक्षिप्त कुण्डल त्विष मण्डितम् ।
गण्डम् गण्डे सन्दधत्या अदात् ताम्बूल चर्वितम् ॥

शब्दार्थ —

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कस्याश्चित् | १. | एक गोपी के | गण्डम् | ७. | उसने अपने कपोलों को |
| नाट्य | २. | नाचने के कारण | गण्डे | ८. | श्रीकृष्ण के कपोल से |
| विक्षिप्त | ४. | हिल रहे थे, उसकी | सन्दधत्या | ९. | सटा दिया और |
| कुण्डल | ३. | कुण्डल | अदात् | १२. | मुँह में दे दिया |
| त्विष | ५. | छटा से उसके | ताम्बूल | ११. | पान उसके |
| मण्डितम् । | ६. | कपोल और भी चमक रहे थे | चर्वितम् ॥ | १०. | भगवान् ने अपना चबाया हुआ |

श्लोकार्थ—एक गोपी के नाचने के कारण कुण्डल हिल रहे थे। उसकी छटा से उसके कपोल और भी चमक रहे थे। उसने अपने कपोलों को श्रीकृष्ण के कपोल से सटा दिया। और भगवान् ने अपना चबाया हुआ पान उसके मुँह में दे दिया ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

नृत्यन्ती गायती काचित् कूजन्नूपुरमेखला ।
पार्श्वस्थाच्युतहस्ताब्जं श्रान्ताधात् स्तनयोः शिवम् ॥१४॥

पदच्छेद— नृत्यन्ती गायती काचित् कूजत् नू पुर मेखला ।
पार्श्वस्थ अच्युत हस्ताब्जम् श्रान्ता अधात् स्तनयोः शिवम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नृत्यन्ती | ५. | नाच और | पार्श्वस्थ | ८. | अपने पास में ही खड़े |
| गायती | ६. | गा रही थी | अच्युत | ९. | श्याम सुन्दर के |
| काचित् | १. | कोई गोपी | हस्ताब्जम् | ११. | कर कमल को |
| कूजत् | ४. | झनकारती हुई | श्रान्ता | ७. | जब वह थक गई तो उसने |
| नू पुर | २. | नूपुर और | अधात् | १३. | रख लिया |
| मेखला । | ३. | करधनी के घुंघरुओं को | स्तनयोः | १२. | अपने दोनों स्तनों पर |
| | | | शिवम् ॥ | १०. | शीतल |

श्लोकार्थ—कोई गोपी नूपुर और करधनी के घुंघरुओं को झनकारती हुई नाच और गा रही थी। जब वह थक गई तो उसने अपने पास में खड़े श्याम सुन्दर के शीतल कर कमल को अपने दोनों स्तनों पर रख लिया ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**गोप्यो लब्ध्वाच्युतं कान्तं श्रिय एकान्तवल्लभम् ।**
**गृहीतकण्ठ्यस्तद्दोर्भ्यां गायन्त्यस्तं विजह्रिरे ॥१५॥**

पदच्छेद— गोप्यः लब्ध्वा अच्युतम् कान्तम् श्रियः एकान्त वल्लभम् ।
गृहीत कण्ठ्यः तत् दोर्भ्याम् गायन्त्यः तम् विजह्रिरे ॥

| शब्दार्थ | | | |
|---|---|---|---|
| **गोप्यः** | १. गोपियाँ | गृहीत | १४. बाँध रखा था |
| **लब्ध्वा** | ७. पाकर | कण्ठ्यः | १२. गलों को |
| **अच्युतम्** | ६. श्रीकृष्ण को | तत् | ११. श्रीकृष्ण ने उनके |
| **कान्तम्** | ३. परम प्रियतम | दोर्भ्याम् | १३. अपने भुज पाश में |
| **श्रियः** | २. लक्ष्मी जी के | गायन्त्यः | ८. गान करती हुई |
| **एकान्त** | ४. एकान्त | तम् | ९. उनके साथ |
| **वल्लभम् ।** | ५. वल्लभ | विजह्रिरे ॥ | १०. विहार करने लगीं |

श्लोकार्थ—गोपियाँ लक्ष्मी जी के परम प्रियतम एकान्त वल्लभ श्रीकृष्ण को पाकर गान करती हुईं उनके साथ बिहार करने लगीं । श्रीकृष्ण ने उनके गलों को अपने भुजपाश में बाँध रखा था ॥

## षोडशः श्लोकः

**कर्णोत्पलालकविटङ्ककपोलघर्मवक्त्रश्रियो वलयनूपुरघोषवाद्यैः ।**
**गोप्यः समं भगवता ननृतुः स्वकेशस्रस्तस्रजो भ्रमरगायकरासगोष्ठ्याम् ॥१६॥**

पदच्छेद— कर्णउत्पल अलकविटङ्क कपोल घर्मवक्त्र श्रियः वलय नूपुर घोष वाद्यैः ।
गोप्यः समम् भगवता ननृतुः स्वकेश स्रस्तस्रजः भ्रमर गायक रास गोष्ठ्याम् ॥

| शब्दार्थ | | | |
|---|---|---|---|
| **कर्णउत्पल** | १. कानों में कमल के कुण्डल और | **गोप्यः** | ६. गोपियाँ |
| **अलकविटङ्क** | ३. अलकों की शोभा थी | **समम् भगवता** | ८. भगवान् के साथ |
| **कपोल** | २. कपोलों पर | **ननृतुः** | ९. नृत्य कर रही थीं |
| **घर्मवक्त्र** | ४. पसीने से मुख की | **स्वकेश** | १३. उनके केशों में गुंथी |
| **श्रियः** | ५. शोभा निराली थी | **स्रस्तस्रजः** | १४. मालायें टूट कर गिर रही थीं |
| **वलय** | १०. उनके कंगन और | **भ्रमर** | १५. भौंरे उनके सुर में |
| **नूपुर** | ११. पायजेबों के | **गायक** | १६. सुर मिला रहे थे |
| **घोषवाद्यैः ।** | १२. बाजे बाज रहे थे | **रास गोष्ठयाम् ॥** | १७. रास मण्डल में |

श्लोकार्थ—उनके कानों में कमल के कुण्डल और कपोलों पर अलकों की शोभा थी । पसीने से मुख की शोभा निराली थी । गोपियाँ रास मण्डल में भगवान् के साथ नृत्य कर रही थीं । उनके कंगन और पायजेबों के बाजे बज रहे थे । उनके केशों में गुंथी मालायें टूट कर गिर रही थीं । भोंरें उनके सुर में सुर मिला रहे थे ॥

## सप्तदशः श्लोकः

एवं परिष्वङ्गकराभिमर्शस्निग्धेक्षणोद्दामविलासहासैः ।
रेमे रमेशो व्रजसुन्दरीभिर्यथार्भकः स्वप्रतिबिम्बविभ्रमः ॥१७॥

पदच्छेद— एवम् परिष्वङ्ग कर अभिमर्श स्निग्ध ईक्षण उद्दाम विलास हासैः ।
रेमे रमेशः व्रजसुन्दरीभिः यथा अर्भकः स्वप्रतिबिम्ब विभ्रमः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एवम् | ५. वैसे ही | रेमे | १४. उन्होंने विहार किया |
| परिष्वङ्ग | ७. हृदय से लगाते थे | रमेशः | ६. भगवान् श्रीकृष्ण |
| कर | ८. कभी हाथ से उनका | व्रजसुन्दरीभिः | १३. व्रज गोपियों के साथ |
| अभिमर्श | ६. अङ्ग स्पर्श करते कभी | यथा | १. जैसे |
| स्निग्ध ईक्षण | १०. प्रेम भरी चितवन से देखते | अर्भकः | २. नन्हा शिशु |
| उद्दाम विलास | ११. कभी लीला से | स्वप्रतिबिम्ब | ३. अपनी परछाँई के |
| हासैः । | १२. हंसी हंसते हुये | विभ्रमः ॥ | ४. साथ खेलता है |

श्लोकार्थ—जैसे नन्हा शिशु अपनी परछाई से खेलता है। वैसे ही भगवान् श्रीकृष्ण कभी उन्हें हृदय से लगाते थे। कभी हाथ से उनका अङ्ग स्पर्श करते और कभी प्रेम भरी चितवन से देखते कभी लीला से हंसी हंसते हुये व्रज गोपियों के साथ उन्होंने विहार किया ॥

## अष्टादशः श्लोकः

तदङ्गसङ्गप्रमुदाकुलेन्द्रियाः केशान् दुकूलं कुचपट्टिकां वा ।
नाञ्जः प्रतिव्योढुमलं व्रजस्त्रियो विस्रस्तमालाभरणाः कुरूद्वह ॥१८॥

पदच्छेद — तत् अङ्ग सङ्ग प्रमुदा आकुलेन्द्रियाः केशान् दुकूलम् कुचपट्टिकाम् वा ।
न अञ्जः प्रतिव्योढुम् अलम् व्रजस्त्रियः विस्रस्त मालाआभरणा कुरूद्वह ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत् अङ्ग | २. भगवान् के अङ्गों का | न | ११. न हो सकीं |
| सङ्ग | ३. स्पर्श प्राप्त करके | अञ्जः प्रतिव्योढुम् | ६. थोड़ा सा भी संभालने में |
| प्रमुदा | ४ अत्यन्त आनन्द से | अलम् | १०. समर्थ |
| आकुलेन्द्रियाः | ५ गोपियों की इन्द्रियाँ | व्रजस्त्रियः | १२. व्रजवासिनी स्त्रियों के |
| केशान् | ६. वे अपने केश | विस्रस्त | १४. अस्त-व्यस्त हो गये |
| दुकूलम् | ७ वस्त्र | मालाआभरणाः | १३. हार और गहने भी |
| कुचपट्टिकाम् । | ८. अथवा कञ्चुकी को | कुरूद्वह ॥ | १. हे परीक्षित् ! |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! भगवान् के अङ्गों का स्पर्श प्राप्त करके अत्यन्त आनन्द से गोपियों की इन्द्रियाँ विह्वल हो गयीं। वे अपने केश, वस्त्र अथवा कञ्चुकी को थोड़ा भी संभालने में समर्थ न हो सकीं व्रजवासिनी स्त्रियों के हार और गहने भी अस्त-व्यस्त हो गये ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

कृष्णविक्रीडितं वीक्ष्य मुमुहुः खेचरस्त्रियः।
कामार्दिताः शशाङ्कश्च सगणो विस्मितोऽभवत् ॥१९॥

पदच्छेद— कृष्ण विक्रीडितम् वीक्ष्य मुमुहुः खेचर स्त्रियः।
काम अर्दिताः शशाङ्कः च सगणः विस्मितः अभवत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्ण | १. | भगवान् श्री कृष्ण की | काम | ६. | मिलन की |
| विक्रीडितम् | २. | रासलीला | अर्दिताः | ७. | कामना से |
| वीक्ष्य | ३. | देखकर | शशाङ्कः च | ९. | और चन्द्रमा |
| मुमुहुः | ८. | मोहित हो गयीं, | सगणः | १०. | तारों तथा ग्रहों के साथ. |
| खेचर | ४. | देवताओं की | विस्मितः | ११. | चकित और विस्मित |
| स्त्रियः। | ५. | स्त्रियाँ भी | अभवत् ॥ | १२. | हो गये |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण की रासलीला देखकर देवताओं की स्त्रियाँ भी मिलन की कामना से मोहित हो गयीं। और चन्द्रमा तारों तथा ग्रहों के साथ चकित और विस्मित हो गये ॥

## विंशः श्लोकः

कृत्वा तावन्तमात्मानं यावतीर्गोपयोषितः।
रेमे स भगवांस्ताभिरात्मारामोऽपि लीलया ॥२०॥

पदच्छेद— कृत्वा तावन्तम् आत्मानम् यावतीः गोपयोषितः।
रेमे स भगवान् ताभिः आत्मारामः अपि लीलया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृत्वा | १०. | बताये और | रेमे | १२. | विहार किया |
| तावन्तम् | ९. | उतने ही रूप | सः भगवान् | १. | वे भगवान् तो |
| आत्मानम् | ८. | अपने | ताभिः | ११. | उन गोपियों के साथ |
| यावतीः | ५. | जितनी | आत्मारामः | २. | आत्माराम हैं |
| गोप | ६. | गोप | अपि | ३. | फिर भी |
| योषितः। | ७. | स्त्रियां थीं | लीलया ॥ | ४. | लीलापूर्वक उन्होंने |

श्लोकार्थ—वे भगवान् तो आत्माराम हैं। फिर भी लीलापूर्वक उन्होंने जितनी गोप स्त्रियां थीं अपने उतने ही रूप बनाये और उन गोपियों के साथ विहार किया ॥

## एकविंशः श्लोकः

तासामतिविहारेण श्रान्तानां वदनानि सः ।
प्रामृजत् करुणः प्रेम्णा शन्तमेनाङ्गपाणिना ॥२१॥

पदच्छेद— तासाम् अति विहारेण श्रान्तानाम् वदनानि सः ।
प्रामृजत् करुणः प्रेम्णा शन्तमेन अङ्ग पाणिना ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तासाम् | ४. गोपियाँ | प्रामृजत् | १२. पोंछे |
| अति | २. बहुत देर तक | करुणः | ६. करुणामय |
| विहारेण | ३. विहार करने के कारण | प्रेम्णा | ८. बड़े प्रेम से |
| श्रान्तानाम् | ५. थक गयीं | शन्तमेन | ९. अपने सुखद |
| वदनानि | ११. उनके मुँह | अङ्ग | १. परीक्षित् |
| सः । | ७. उन भगवान् श्रीकृष्ण | पाणिना ॥ | १०. हाथ से |

श्लोकार्थ—परीक्षित् ! बहुत देर तक विहार करने के कारण गोपियाँ थक गयीं । करुणामय भगवान् श्रीकृष्ण ने बड़े प्रेम से अपने सुखद हाथ से उनके मुँह पोंछे ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

गोप्यः स्फुरत्पुरटकुण्डलकुन्तलत्विड्गण्डश्रिया सुधितहासनिरीक्षणेन ।
मानं दधत्य ऋषभस्य जगुः कृतानि पुण्यानि तत्कररुहस्पर्शप्रमोदाः ॥२२॥

पदच्छेद— गोप्यः स्फुरत् पुरट कुण्डल कुन्तलत्विड् गण्ड श्रिया सुधित हास निरीक्षणेन ।
मानम् दधत्यः ऋषभस्य जगुः कृतानि पुण्यानि तत् कर रुह स्पर्श प्रमोदाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गोप्यः | ३. गोपियों को बड़ा ही | मानम्दधत्यः | १२. सम्मान किया और उनकी |
| स्फुरत् | ५. झिलमिलाते हुये | ऋषभस्य | ११. भगवान् श्रीकृष्ण का |
| पुरट कुण्डल | ६. सोने के कुण्डलों और | जगुः | १४ गान करने लगीं |
| कुन्तलत्विड् | ७. घुंघराली अलकों की कान्ति से | कृतानिपुण्यानि | १३ परम पवित्र लीलाओं का |
| गण्डश्रिया | ८. सुशोभित कपोलों तथा | तत् कर | १. भगवान् के कर कमल और |
| सुधितहास | ९. अमृतमयी मुसकान और | रुहस्पर्श | २. नख-स्पर्श से |
| निरीक्षणेन । | १०. प्रेम भरी चितवन से | प्रमोदाः ॥ | ४. आनन्द प्राप्त हुआ । उन्होंनें |

श्लोकार्थ—भगवान् के कर कमल और नख-स्पर्श से गोपियों को बड़ा ही आनन्द प्राप्त हुआ । उन्होंने झिलमिलाते सोने के कुण्डलों और घुंघराली अलकों की कान्ति से सुशोभित कपोलों तथा अमृतमयी मुसकान और प्रेमभरी चितवन से भगवान् श्रीकृष्ण का सम्मान किया और उनकी परम पवित्र लीलाओं का गान करने लगीं ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**ताभिर्युतः श्रममपोहितुमङ्गसङ्गघृष्टस्रजः स कुचकुङ्कुमरञ्जितायाः ।**
**गन्धर्वपालिभिरनुद्रुत आविशद् वाः श्रान्तो गजीभिरिभराडिव भिन्नसेतुः॥२३॥**

पदच्छेद— ताभिः युतः श्रमम् अपोहितुम् अङ्ग-सङ्ग घृष्टः स्रजः सः कुचकुङ्कुम रञ्जितायाः ।
गन्धर्व पालिभिः अनुद्रुतः आविशत् वाः श्रान्तः गजीभिः इभराडिव भिन्नसेतुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ताभिः युतः | ८. गोपियों के साथ | गन्धर्व पालिभिः | १६. गन्धर्व राज की भाँति लग रहे थे |
| श्रमम् | ६. अपनी थकान | अनुद्रुतः | १५. अनुगत भौंरे |
| अपोहितुम् | ७. दूर करने के लिये | आविशत् | १०. प्रवेश किया । उस समय |
| अङ्ग-सङ्ग-घृष्टः | १२. गोपियों के अङ्ग-सङ्ग की रगड़ से और | वाः | ९. यमुना के जल में |
| स्रजः | ११. भगवान् की वनमाला | श्रान्तः | २. थका हुआ |
| सः | ५. भगवान् श्रीकृष्ण ने | गजीभिः | ४. हथिनियों के साथ क्रीड़ा करते हैं |
| कुचकुङ्कुम | १३. वक्षः स्थल की केसर से | इभराडिव | ३. गजराज जैसे |
| रञ्जितायाः । | १४. रङ्ग सी गई थी उनके | भिन्नसेतुः ॥ | १. मर्यादाओं का अतिक्रमण करने वाला |

श्लोकार्थ— मर्यादाओं का अतिक्रमण करने वाला थका हुआ गजराज जैसे हथनियों के साथ क्रीड़ा करते हैं, वैसे ही भगवान् श्रीकृष्ण ने अपनी थकान दूर करने के लिये गोपियों के साथ यमुना के जल में प्रवेश किया । उस समय भगवान् की वनमाला गोपियों के अङ्ग-सङ्ग की रगड़ से और वक्षः स्थल की केसर से रंग सी गई थी । उनके अनुगत भौंरे गन्धर्व राज की भाँति लग रहे थे ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**सोऽम्भस्यलं युवतिभिः परिषिच्यमानः प्रेम्णेक्षितः प्रहसतीभिरितस्ततोऽङ्ग ।**
**वैमानिकैः कुसुमवर्षिभिरीड्यमानो रेमे स्वयं स्वरतिरत्र गजेन्द्रलीलः ॥२४॥**

पदच्छेद—सः अम्भसि अलम् युवतिभिः परिषिच्यमानः प्रेम्णा ईक्षितः प्रहसतीभिः इतः ततः अङ्ग ।
वैमानिकैः कुसुम वर्षिभिः ईड्यमानः रेमे स्वयम् स्वरतिः अत्र गजेन्द्रलीलः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सः अम्भसि | ५. उन भगवान् पर यमुना जल से | वैमानिकैः | ८. विमानों पर चढ़े देवता |
| अलम् युवतिभिः | ६ गोपियों ने खूब | कुसुम वर्षिभिः | ९. पुष्पों की वर्षा करके उनकी |
| परिषिच्यमानः | ७. जल की बौछारें डाली | ईड्यमानः | १०. स्तुति करने लगे |
| प्रेम्णाईक्षितः | २. प्रेमभरी चितवन से | रेमे | १४. की |
| प्रहसतीभिः | ३ हंस-हंस कर | स्वयम् स्वरतिः | ११. स्वयम् भगवान् श्रीकृष्ण ने |
| इतः ततः | ४. इधर-उधर से | अत्र | १२. इस प्रकार यमुना जल में |
| अङ्ग । | १. हे परीक्षित् ! | गजेन्द्रलीलः ॥ | १३. गजराज के समान क्रीड़ा |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! प्रेमभरी चितवन से हंस-हंस कर इधर-उधर से उन भगवान् पर गोपियों ने खूब जल की बौछारें डाली । विमानों पर चढ़े देवता पुष्पों की वर्षा करके उनकी स्तुति करने लगे । स्वयम् भगवान् श्रीकृष्ण ने इस प्रकार यमुना जल में गजराज के समान क्रीड़ा की ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**ततश्च कृष्णोपवने जलस्थलप्रसूनगन्धानिलजुष्टदिक्तटे ।**
**चचार भृङ्गप्रमदागणावृतो यथा मदच्युद् द्विरदः करेणुभिः ॥२५॥**

पदच्छेद— ततः च कृष्ण उपवने जल स्थल प्रसून गन्ध अनिल जुष्ट दिक्तटे ।
चचार भृङ्ग प्रमदागण आवृतः यथा मदच्युत् द्विरदः करेणुभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. इसके बाद | चचार | १२. | वे विचरण करने लगे |
| च | ४. और | भृङ्ग | ३. | भौंरों |
| कृष्ण | २. भगवान् श्रीकृष्ण | प्रमदागण | ५. | युवतियों के समूह से |
| उपवने जल | ८. उपवन में गये वहाँ जल | आवृतः | ६. | घिरे हुये |
| स्थल | ९. और स्थल में सुन्दर | यथा | १३. | उसी प्रकार |
| प्रसून गन्ध | १०. सुगन्ध वाले पुष्प खिले थे | मदच्युत् | १४. | जैसे मतवाला गजराज |
| अनिल जुष्टः | ११. सुगन्धित वायुयुक्तस्थल में | द्विरदः | १५. | हथिनियों के साथ |
| दिक्तटे । | ७. यमुना तट के | करेणुभिः ॥ | १६. | घूम रहा हो |

श्लोकार्थ—इसके बाद भगवान् श्रीकृष्ण भौंरों और युवतियों के समूह से घिरे हुये यमुना तट के उपवन में गये, वहाँ जल और स्थल में सुन्दर सुगन्ध वाले पुष्प खिले थे । सुगन्धित वायु युक्त स्थल में वे विचरण करने लगे , उसी प्रकार जैसे मतवाला गजराज हथनियों के साथ घूम रहा हो ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**एवं शशाङ्कांशुविराजिता निशाः स सत्यकामोऽनुरताबलागणः ।**
**सिषेव आत्मन्यवरुद्धसौरतः सर्वाः शरत्काव्यकथारसाश्रयाः ॥२६॥**

पदच्छेद— एवम् सिषेव शशाङ्क अंशु विराजिताः निशाः सः सत्यकामः अनुरत अबला गणः ।
सिषेव आत्मनि अवरुद्ध सौरतः सर्वाः शरत् काव्य कथा रस आश्रयाः ॥

शब्दार्थ —

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. इस प्रकार | सिषेव | १४. | विहार किया |
| शशाङ्क अंशु | २. चन्द्रमा की किरणों | आत्मनि | १२. | अपने |
| विराजिता | ३. सुशोभित | अवरुद्ध | १३. | अधीन करके |
| निशाः | ४. शरद् की रात्रि में | सौरतः | ११. | काम भाव को |
| सः सत्यकामः | ८. सत्य सङ्कल्प श्रीकृष्ण ने | सर्वाः शरत् | ६. | समस्त शरद् ऋतु |
| अनुरत | १०. साथ | काव्य कथा | ५. | काव्यों में वर्णित सामग्रियों से |
| अबला गणः । | ९. स्त्री समूह के | रस आश्रयाः ॥ | ७. | रस से युक्त रात्रियों में |

श्लोकार्थ—इस प्रकार चन्द्रमा की किरणों से सुशोभित शरद् की रात्रि में काव्यों में वर्णित सामग्रियों से समस्त, शरद् ऋतु की रस से युक्त रात्रियों में सत्य सङ्कल्प श्रीकृष्ण ने स्त्री समूह के साथ काम भाव को अपने अधीन करके विहार किया ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

राजोवाच— संस्थापनाय धर्मस्य प्रशमायेतरस्य च।
अवतीर्णो हि भगवानंशेन जगदीश्वरः ॥२७॥

पदच्छेद— संस्थापनाय धर्मस्य प्रशमाय इतरस्य च।
अवतीर्णः हि भगवान् अंशेन जगत् ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| संस्थापनाय | ६. स्थापना | अवतीर्णः | १०. अवतीर्ण हुये हैं |
| धर्मस्य | ५. धर्म की | हि भगवान् | ३. भगवान् श्रीकृष्ण अपने |
| प्रशमाय | ९. विनाश के लिये | अंशेन | ४. अंश बलराम जी सहित |
| इतरस्य | ८. अधर्म के | जगत् | १. सारे जगत् के |
| च। | ७. और | ईश्वरः ॥ | २. ईश्वर |

श्लोकार्थ—सारे जगत् के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्ण अपने अंश बलराम जी के सहित धर्म की स्थापना और अधर्म के विनाश के लिये अवतीर्ण हुये हैं ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

स कथं धर्मसेतूनां वक्ता कर्ताभिरक्षिता।
प्रतीपमाचरद् ब्रह्मन् परदाराभिमर्शनम् ॥२८॥

पदच्छेद— सः कथम् धर्मसेतूनां वक्ता कर्ता अभिरक्षिता।
प्रतीपम् आचरत् ब्रह्मन् पर दारा अभिमर्शनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सः | २. वे | प्रतीपम् | ७. उन्होंने धर्म के विपरीत |
| कथम् | ११. कैसे | आचरत् | १२. किया |
| धर्मसेतूनां | ३. धर्म मर्यादा | ब्रह्मन् | १. हे ब्रह्मन्! |
| वक्ता | ५. उपदेश करने वाले | पर | ८. परायी |
| कर्ता | ४. बनाने वाले | दारा | ९. स्त्रियों का |
| अभिरक्षिता। | ६. रक्षक थे (और) | अभिमर्शनम् ॥ | १०. स्पर्श |

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन्! वे धर्म मर्यादा बनाने वाले, उपदेश करने वाले, रक्षक थे। और उन्होंने धर्म के विपरीत परायी स्त्रियों का स्पर्श कैसे किया ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

आप्तकामो यदुपतिः कृतवान् वै जुगुप्सितम् ।
किमभिप्राय एतं नः संशयं छिन्धि सुव्रत ॥२६॥

पदच्छेद — आप्तकामः यदुपतिः कृतवान् वै जुगुप्सितम् ।
किम् अभिप्रायः एतम् नः संशयम् छिन्धि सुव्रत ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| आप्तकामः | ३. पूर्ण काम थे फिर भी | अभिप्रायः | ५. अभिप्राय से |
| यदुपतिः | २. भगवान् श्रीकृष्ण | एवम् | ६. इस |
| कृतवान् | ८. किया | नः | १०. हमारे इस |
| वै | १. निश्चय ही | संशयम् | ११. संशय को |
| जुगुप्सितम् । | ७. घृणित कर्म को | छिन्धि | १२. मिटाइये |
| किम् | ४. उन्होंने किस | सुव्रत ॥ | ६. हे परम ब्रह्मचारी मुनीश्वर |

श्लोकार्थ—निश्चय ही भगवान् श्रीकृष्ण पूर्णकाम थे। उन्होंने किस अभिप्राय से इस घृणित कर्म को किया। हे परम ब्रह्मचारी मुनीश्वर! इस संशय को मिटाइये ॥

## त्रिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— धर्मव्यतिक्रमो दृष्ट ईश्वराणां च साहसम् ।
तेजीयसां न दोषाय वह्नेः सर्वभुजो यथा ॥३०॥

पदच्छेद— धर्म व्यतिक्रमः दृष्टः ईश्वराणाम् च साहसम् ।
तेजीयसाम् न दोषाय वह्नेः सर्वभुजः यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| धर्म | २. धर्म का | तेजीयसाम् | ७. तेजस्वी पुरुषों को वैसे ही |
| व्यतिक्रमः | ३. उल्लंघन | न | ६. नहीं होता |
| दृष्टः | ६. देखे जाते हैं | दोषाय | ८. कोई दोष |
| ईश्वराणाम् | १. समर्थ जन कभी-कभी | वह्नेः | १२. अग्नि को दोष नहीं होता |
| च | ४. और | सर्वभुजः | ११. सर्व कुछ भक्षण करने पर भी |
| साहसम् । | ५. साहस का काम करते | यथा ॥ | १०. जैसे |

श्लोकार्थ—समर्थ जन कभी-कभी धर्म का उल्लंघन और साहस का काम करते देखे जाते हैं। तेजस्वी पुरुषों को वैसे ही कोई दोष नहीं होता। जैसे सब कुछ भक्षण कर लेने पर भी अग्नि को दोष नहीं होता है ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**नैतत् समाचरेज्जातु मनसापि ह्यनीश्वरः ।**
**विनश्यत्याचरन् मौढ्याद्यथारुद्रोऽब्धिजं विषम् ॥३१॥**

पदच्छेद— न एतत् समाचरेत् जातु मनसा अपि हि अनीश्वरः ।
विनश्यति आचरन् मौढ्यात् यथा रुद्रः अब्धिजम् विषम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | ६. | नहीं | विनश्यति | १०. | वह नष्ट हो जायेगा |
| एतत् | ५. | इस विषय में | आचरन् | ९. | ऐसा आचरण करने से |
| समाचरेत् | ७. | सोचना चाहिये | मौढ्यात् | ८. | क्योंकि मूर्खता वश |
| जातु | २. | कभी | यथा | ११. | जैसे कि |
| मनसा | ३. | मन से | रुद्रः | १४. | शङ्कर ही पी सकते थे |
| अपि हि | ४. | भी | अब्धिजम् | १२. | समुद्र से निकले |
| अनीश्वरः । | १. | असमर्थ व्यक्ति को | विषम् ॥ | १३. | विष को |

श्लोकार्थ—असमर्थ व्यक्ति को कभी मन से भी इस विषय में नहीं सोचना चाहिये । क्योंकि मूर्खता वश ऐसा आचरण करने से वह नष्ट हो जायेगा । जैसे कि समुद्र से निकले विष को शङ्कर ही पी सकते थे ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**ईश्वराणां वचः सत्यं तथैवाचरितं क्वचित् ।**
**तेषां स्ववचोयुक्तं बुद्धिमांस्तत् समाचरेत् ॥३२॥**

पदच्छेद— ईश्वराणाम् वचः सत्यम् तथा एव आचरितम् क्वचित् ।
तेषाम् यत् स्ववचः युक्तम् बुद्धिमान् तत् समाचरेत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ईश्वराणाम् | १. | शङ्करादि ईश्वरों के | तेषाम् | ८. | उन्होंने |
| वचः | २. | वचन | यत् | ९. | जो |
| सत्यम् | ३. | सत्य होने पर भी | स्ववचः | १०. | अपनी वाणी से |
| तथा | ४. | उस | युक्तम् | ११. | उपदेश किया है |
| एव | ५. | ही प्रकार का | बुद्धिमान् | १२. | बुद्धिमान् व्यक्ति को |
| आचरितम् | ६. | आचरण | तत् | १३. | उसी का |
| क्वचित् । | ७. | कहीं-कहीं ही किया जा सकता है | समाचरेत् ॥ | १४. | आचरण करना चाहिये |

श्लोकार्थ—शङ्करादि ईश्वरों के वचन सत्य होने पर भी उसी प्रकार का आचरण कहीं-कहीं ही किया जा सकता है । उन्होंने जो अपनी वाणी से उपदेश किया है, बुद्धिमान् व्यक्ति को उसी का आचरण करना चाहिये ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**कुशलाचरितेनैषामिह स्वार्थो न विद्यते ।**
**विपर्ययेण वानर्थो निरहंकारिणां प्रभो ॥३३॥**

पदच्छेद— कुशल आचरितेन एषाम् इह स्वार्थः न विद्यते ।
विपर्ययेण वा अनर्थः निरहंकारिणाम् प्रभो ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कुशल | ३. शुभ कर्म | विद्यते । | ६. होता है |
| आचरितेन | ४. करने में | विपर्ययेण | ११. अशुभ कर्म करने में |
| एकम् | ५. उनका कोई | वा | १०. और |
| इह | ६. सांसारिक | अनर्थः | १२. अनर्थ नहीं होता है |
| स्वार्थः | ७. स्वार्थ | निरहंकारिणाम् | २. अहंकार रहित होते हैं |
| न | ८. नहीं | प्रभो ॥ | १. सामर्थ्यवान् पुरुष |

श्लोकार्थ—सामर्थ्यवान् पुरुष अहंकार रहित होते हैं। शुभ कर्म करने में उनका कोई सांसारिक स्वार्थ नहीं होता है। और अशुभकर्म करने में अनर्थ नहीं होता है ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**किमुताखिलसत्त्वानां तिर्यङ्मर्त्यदिवौकसाम् ।**
**ईशितुश्चेशितव्यानां कुशलाकुशलान्वयः ॥३४॥**

पदच्छेद— किमुत अखिल सत्त्वानाम् तिर्यक् मर्त्य दिव ओकसाम् ।
ईशितुः च ईशितव्यानाम् कुशल अकुशल अन्वयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| किमुत | १२. कैसे जोड़ा जा सकता है | ईशितुः | ७. स्वामी सर्वेश्वर भगवान् को |
| अखिल | ५. समस्त चराचर | च | ९. और |
| सत्त्वानाम् | ६. जीवों के | ईशितव्यानाम् | ४. शासन करने योग्य |
| तिर्यक् | १. पशु-पक्षी | कुशल | ८. शुभ |
| मर्त्य | २. मनुष्य | अकुशल | १०. अशुभ |
| दिव ओकसाम् । | ३. देवता आदि के | अन्वयः ॥ | ११. सम्बन्ध से |

श्लोकार्थ—फिर पशु-पक्षी-मनुष्य-देवता आदि के शासन करने योग्य समस्त चराचर जीवों के स्वामी सर्वेश्वर भगवान् को शुभ और अशुभ सम्बन्ध से कैसे जोड़ा जा सकता है ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**यत्पादपङ्कजपरागनिषेवतृप्ता योगप्रभावविधुताखिलकर्मबन्धाः ।**
**स्वैरं चरन्ति मुनयोऽपि न नह्यमानास्तस्येच्छयाऽऽत्तवपुषः कुत एव बन्धः ॥३५॥**

पदच्छेद—यत् पाद पङ्कज परागनिषेव तृप्ताः योगप्रभाव विधुत अखिल कर्मबन्धाः ।
स्वैरम् चरन्ति मुनयः अपि न नह्यमानाः तस्य इच्छया आत्तवपुषः कुत एव बन्धः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यत् | १. जिनके | स्वैरम्चरन्ति | ११. स्वच्छन्द विचरण करते हैं |
| पादपङ्कज | २. चरण कमलों के | मुनयः अपि | ९. विचारशील ज्ञानी जन भी उन्हें जानकर |
| पराग निषेव | ३. रजका सेवन करके भक्तजन | न नह्यमानाः | १०. बन्धन को नहीं प्राप्त होते हैं तथा |
| तृप्ताः | ४. तृप्त हो जाते हैं और | तस्य | १४. उन भगवान् को |
| योगप्रभाव | ५. जिनसे योग प्राप्त करके योगी | इच्छया | १२. भक्तों की इच्छा से |
| विधूत | ८. काट डालते हैं | आत्तवपुषः | १३. शरीर धारण करने वाले |
| अखिल | ६. सारे | कुत एव | १६. कैसे हो सकता है |
| कर्मबन्धाः । | ७. कर्म बन्धन को | बन्धः ॥ | १५. कर्म बन्धन |

श्लोकार्थ—जिनके चरण कमलों के रज का सेवन करके भक्त जन तृप्त हो जाते हैं। जिनसे योग प्राप्त करके योगी सारे कर्म बन्धन को काट डालते हैं। विचारशीलज्ञानी जन भी उन्हें जानकर बन्धन को नहीं प्राप्त होते हैं, स्वच्छन्द विचरण करते हैं। भक्तों की इच्छा से शरीर धारण करने वाले उन भगवान् को कर्मबन्धन कैसे हो सकता है ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**गोपीनां तत्पतीनां च सर्वेषामेव देहिनाम् ।**
**योऽन्तश्चरति सोऽध्यक्षः क्रीडनेनेह देहभाक् ॥३६॥**

पदच्छेद— गोपीनाम् तत् पतीनाम् सर्वेषाम् एव देहिनाम् ।
यः अन्तः चरति सः अध्यक्षः क्रीडनेन इह देहभाक् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गोपीनाम् | १. गोपियों के | यः अन्तः | ७. अन्तः करण में जो |
| तत् | २. उनके | चरति | ८. विराजमान हैं |
| पतीनाम् | ३. पतियों के | सः अध्यक्षः | ९. वे ही सबके साक्षी हैं वे |
| च सर्वेषाम् | ४. और सम्पूर्ण | क्रीडनेन | १२. लीला कर रहे हैं |
| एव | ५. ही | इह | १०. ही यहाँ |
| देहिनाम् । | ६. शरीरधारियों के | देहभाक् ॥ | ११. दिव्य विग्रह धारण करके |

श्लोकार्थ—गोपियों के, उनके पतियों के और सभी शरीर धारियों के अन्तः करण में जो विराजमान हैं, वे ही सबके साक्षी हैं। वे ही यहाँ दिव्य विग्रह धारण करके लीला कर रहे हैं ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**अनुग्रहाय भूतानां मानुषं देहमास्थितः।**
**भजते तादृशीः क्रीडा याः श्रुत्वा तत्परो भवेत् ॥३७॥**

पदच्छेद— अनुग्रहाय भूतानाम् मानुषम् देहम् आस्थितः।
भजते तादृशीः क्रीडाः याः श्रुत्वा तत् परः भवेत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अनुग्रहाय | २. कृपा करने के लिये ही | भजते | ८. करते हैं |
| भूतानाम् | १. भगवान् जीवों पर | तादृशीः | ६. और वैसी ही |
| मानुषम् | ३. अपने को मनुष्य | क्रीडाः | ७. लीलायें |
| देहम् | ४. रूप में | याः श्रुत्वा | ९. जिन्हें सुनकर |
| आस्थितः | ५. प्रकट करते हैं | तत्परः। | १०. जीव भगवत परायण |
| | | भवेत् ॥ | ११. हो जायें |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण जीवों पर कृपा करने के लिये ही अपने को मनुष्य रूप में प्रकट करते हैं। और वैसी ही लीलायें करते हैं। जिसे सुन कर जीव भगवत्परायण हो जाये ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**नासूयन् खलु कृष्णाय मोहितास्तस्य मायया।**
**मन्यमानाः स्वपार्श्वस्थान् स्वान् स्वान् दारान् व्रजौकसः ॥३८॥**

पदच्छेद— न असूयन् खलु कृष्णाय मोहिताः तस्य मायया।
मन्यमानाः स्वपार्श्व स्थान् स्वान् स्वान् दारान् व्रज ओकसः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| न | ६. नहीं की। | मन्यमानाः | १०. ऐसा समझ रहे थे |
| असूयन् | ५. तनिक भी दोष बुद्धि | स्वपार्श्व | १३. हमारे पास ही |
| खलु | ३. निश्चय ही | स्थान् | १४. स्थित हैं |
| कृष्णाय | ४. श्रीकृष्ण में | स्वान् स्वान् | ११. कि हमारी |
| मोहिताः | ९. मोहित होकर वे | दारान् | १२. पत्नियाँ |
| तस्य | ७. उनकी | व्रज | १. व्रज |
| मायया। | ८. योगमाया से | ओकसः ॥ | २. वासी गोपों ने |

श्लोकार्थ—व्रजवासी गोपों ने निश्चय ही श्रीकृष्ण में तनिक भी दोष बुद्धि नहीं की। वे उनकी योग माया से मोहित होकर ऐसा समझ रहे थे कि हमारी पत्नियाँ हमारे पास ही हैं ॥

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

ब्रह्मरात्र उपावृत्ते वासुदेवानुमोदिताः ।
अनिच्छन्त्यो ययुर्गोप्यः स्वगृहान् भगवत्प्रियाः ॥३९॥

पदच्छेद— ब्रह्मरात्रे उपावृत्ते वासुदेव अनुमोदिताः ।
अनिच्छन्त्यः ययुः गोप्यः स्वगृहान् भगवत् प्रियाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ब्रह्मरात्रे | १. ब्रह्मा की रात्रि के बराबर रात्रि | ययुः | ८. | लौट गयीं क्योंकि वे |
| उपावृत्ते | २. बीत जाने पर | गोप्यः | ३. | वे गोपियाँ |
| वासुदेव | ४. श्रीकृष्ण की | स्वगृहान् | ७. | अपने अपने घरों को |
| अनुमोदिताः | ५. आज्ञा पाकर | भगवत् | ९. | भगवान् श्रीकृष्ण को |
| अनिच्छन्त्यः । | ६. न चाहते हुये भी | प्रियाः ॥ | १०. | प्रसन्न करना चाहती थीं |

श्लोकार्थ—ब्रह्मा को रात्रि के बराबर रात्रि बीत जाने पर वे गोपियाँ श्रीकृष्ण की आज्ञा पाकर न चाहते हुये भी अपने अपने घरों को लौट गईं। क्योंकि वे भगवान् श्रीकृष्ण को प्रसन्न करना चाहती थीं ॥

## चत्वारिंशः श्लोकः

विक्रीडितं व्रजवधूभिरिदं च विष्णोः श्रद्धान्वितोऽनुशृणुयादथ वर्णयेद् यः ।
भक्तिं परां भगवति प्रतिलभ्य कामं हृद्रोगमाश्वपहिनोत्यचिरेण धीरः ॥४०॥

पदच्छेद— विक्रीडितम् व्रजवधुभिः इदम् च विष्णोः श्रद्धान्वितः अनुशृणुयात् अथ वर्णयेत् यः ।
भक्तिम् पराम् भगवति प्रतिलभ्यकामम् हृद् रोगम् आशु अपहिनोति अचिरेण धीरः ॥

शब्दार्थ —

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| विक्रीडितम् | ७. इस विषय का | भक्तिं पराम् | १३. | पराभक्ति को |
| व्रजवधुभिः | ४. व्रज सुन्दरियों के साथ | भगवति | ११. | वह भगवान् के चरणों में |
| इदम् | ६. इस चिन्मय तथा | प्रतिलभ्य | १४. | प्राप्त करता है और |
| च विष्णोः | ५. भगवान् श्रीकृष्ण के | कामम् | १७. | काम विकार से |
| श्रद्धाअन्वितः | ८. श्रद्धा के साथ | हृद् रोगम् | १६. | हृदय के रोग |
| अनुशृणुयात् | ९. बार बार श्रवण और | आशु | १२. | शीघ्र ही |
| अथ | १. अतः | अपहिनोति | १८. | छुटकारा पा जाता है |
| वर्णयेत् | १०. वर्णन करता है | अचिरेण | १५. | तत्काल |
| यः । | २. जो | धीरः ॥ | ३. | धीर पुरुष |

श्लोकार्थ—अतः जो धीर पुरुष व्रज सुन्दरियों के साथ भगवान् श्रीकृष्ण के इस चिन्मय तथा इस विषय का श्रद्धा के साथ बार बार श्रवण और वर्णन करता है। वह भगवान् के चरणों में शीघ्र ही परा भक्ति को प्राप्त करता है। और तत्काल हृदय के रोग काम विकार से छुटकारा पा जाता है ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे रासक्रीडा
वर्णनं नाम त्रयस्त्रिंशः अध्यायः ॥३३॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## पञ्चत्रिंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—गोप्यः कृष्णे वनं याते तमनुद्रुतचेतसः ।**
**कृष्णलीलाः प्रगायन्त्यो निन्युर्दुःखेन वासरान् ॥१॥**

पदच्छेद— गोप्यः कृष्णे वनम् याते तम् अनुद्रुत चेतसः ।
कृष्ण लीलाः प्रगायन्त्यः निन्युः दुःखेन वासरान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गोप्यः | ७. गोपियाँ | कृष्ण | ८. श्रीकृष्ण की |
| कृष्णे | १. श्रीकृष्ण भगवान् के | लीलाः | ९. लीलाओं का |
| वनम् | २. वन में | प्रगायन्त्यः | १०. गायन करती हुईं |
| याते | ३. चले जाने पर | निन्युः | १३. बिताती थीं |
| तम् | ४. उनके | दुःखेन | ११. बड़े कष्ट से |
| अनुद्रुत | ५. पीछे गये हुये | वासरान् ॥ | १२. दिन |
| चेतसः । | ६. चित्तवाली | | |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण भगवान् के वन में चले जाने पर उनके पीछे गये हुये चित्तवाली गोपियाँ श्रीकृष्ण की लीलाओं का गायन करती हुईं बड़े कष्ट से दिन बिताती थीं ॥

### द्वितीयः श्लोकः

**गोप्य ऊचुः—वामबाहुकृतवामकपोलो वल्गितभ्रुरधरार्पितवेणुम् ।**
**कोमलाङ्गुलिभिराश्रितमार्गं गोप्य ईरयति यत्र मुकुन्दः ॥२॥**

पदच्छेद— वाम बाहु कृत वाम कपोलः वल्गितभ्रुः अधर अर्पित वेणुम् ।
कोमल अङ्गुलिभिः आश्रित मार्गम् गोप्यः ईरयति यत्र मुकुन्दः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| वाम बाहु | ४. बायीं बाँह की ओर | कोमल | १०. सुकुमार |
| कृत | ५. झुका करके | अङ्गुलिभिः | ११. अङ्गुलियों को |
| वाम कपोलः | ३. अपने बाँये कपोल को | आश्रित | १३. रख कर |
| वल्गितभ्रुः | ६. भौहें चलाते हुये | मार्गम् | १२. छेदों पर |
| अधर | ८. अधरों से | गोप्यः | १. हे गोपियो ! |
| अर्पित | ९. लगाते हैं (तथा अपनी) | ईरयति | १४. मधुर तान छेड़ते हैं |
| वेणुम् । | ७. बाँसुरी को | यत्र मुकुन्दः ॥ | २. जहाँ श्रीकृष्ण |

श्लोकार्थ—हे गोपियो ! जहाँ श्रीकृष्ण अपने बाँयें कपोल को बायीं बाँह की ओर झुका करके भौहें चलाते हुये बाँसुरी को अधरों से लगाते हैं। तथा अपनी सुकुमार अंगुलियों को छेदों पर रख कर मधुर तान छेड़ते हैं ॥

## तृतीयः श्लोकः

व्योमयानवनिताः सह सिद्धैर्विस्मितास्तदुपधार्य सलज्जाः ।
काममार्गणसमर्पितचित्ताः कश्मलं ययुरपस्मृतनीव्यः ॥३॥

पदच्छेद— व्योमयान वनिताः सह सिद्धैः विस्मिताः तत् उपधार्य सलज्जाः ।
काम मार्गण समर्पित चित्ताः कश्मलम् ययुः अपस्मृत नीव्यः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| व्योमयान | ३. | विमानों पर आई हुई | काम | ९. | काम के |
| वनिताः | ४. | सुन्दरियाँ | मार्गण | १०. | बाणों से |
| सह | २. | साथ | समर्पित | ११. | बिंधे हुये |
| सिद्धैः | १. | वहाँ सिद्ध गणों के | चित्ताः | १२. | चित्त वाली (होकर) |
| विस्मिताः | ७. | आश्चर्य चकित (और) | कश्मलम् | १३. | अचेत |
| तत् | ५. | उस बात को | ययुः | १४. | हो जाती हैं |
| उपधार्य | ६. | सुनकर | अपस्मृत | १६. | सुधि नहीं रहती है |
| सलज्जाः । | ८. | लज्जित (तथा) | नीव्यः ॥ | १५. | उन्हें नीवी खुलने की भी |

श्लोकार्थ—वहाँ सिद्ध गणों के साथ विमानों पर आई सुन्दरियाँ आश्चर्यचकित और लज्जित तथा काम के बाणों से बिंधे हुये चित्त वाली होकर अचेत हो जाती हैं। उन्हें नीवी खुलने की भी सुधि नहीं रहती है ॥

## चतुर्थः श्लोकः

हन्त चित्रमबलाः शृणुतेदं हारहास उरसि स्थिरविद्युत् ।
नन्दसूनुरयमार्तजनानां नर्मदो यर्हि कूजितवेणुः ॥४॥

पदच्छेद— हन्त चित्रम् अबलाः शृणुत इदम् हार हासः उरसि स्थिर विद्युत् ।
नन्द सूनुः अयम् आर्त जनानाम् नर्मदः यर्हि कूजित वेणुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हन्त | १. | अहो | नन्द | १२. | नन्द जी के |
| चित्रम् | ४. | आश्चर्य की बात | सूनुः | १३. | पुत्र |
| अबलाः | २. | गोपियो ! तुम | अयम् | ११. | ये |
| शृणुत | ५. | सुनो | आर्तजनानाम् | ९. | दुःखी जनों को |
| इदम् | ३. | यह | नर्मदः | १०. | सुख देने वाले |
| हारहासः | ७. | हार की शोभा | यर्हि | १४. | जब |
| उरसि | ६. | उनके वक्षः स्थल पर | कूजित | १६. | बजाते हैं |
| स्थिर विद्युत् । | ८. | अचल बिजली जैसी है | वेणुः ॥ | १५. | बाँसुरी |

श्लोकार्थ—अहो ! गोपियो ! तुम यह आश्चर्य की बात सुनो । उनके वक्षः स्थल पर हार की शोभा अचल बिजली जैसी है। ये दुःखी जनों को सुख देने वाले नन्द जी के पुत्र जब बाँसुरी बजाते हैं ॥

## पञ्चमः श्लोकः

वृन्दशो व्रजवृषा मृगगावो वेणुवाद्यहृतचेतस आरात्।
दन्तदष्टकवला धृतकर्णा निद्रिता लिखितचित्रमिवासन् ॥५॥

पदच्छेद— वृन्दशः व्रजवृषाः मृगगावः वेणुवाद्य हृत चेतसः आरात्।
दन्त दष्ट कवलाः धृत कर्णाः निद्रिताः लिखित चित्रम् इव आसन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| वृन्दशः | ४. झुन्ड के झुन्ड | दन्तदष्ट | ८. दाँतों से काटे गये |
| व्रज | ३. व्रज के | कवलाः | ९. घास का ग्रास लिये |
| वृषाः | ५. बैल | धृतकर्णाः | १०. कानों को खड़े किये हुये |
| मृगगावः | ६. हरिण-गाय | निद्रिताः | ११. सोये हुये से |
| वेणु वाद्य | १. तब बांसुरी की ध्वनि से | लिखित | १२. दीवार पर लिखे हुये |
| हृतचेतसः | २. चुराये गये चित्त वाले | चित्रम् इव | १३. चित्र के समान |
| आरात्। | ७. पास में (आकर) | आसन् ॥ | १४. स्थिर खड़े हो जाते थे |

श्लोकार्थ—तब बांसुरी की ध्वनि से चुराये गये चित्त वाले व्रज के झुण्ड के झुन्ड बैल, हिरण, गाय पास में आकर दाँतों से काटे गये घास का ग्रास लिये, कानों को खड़े किये हुये, सोये हुये से दीवार पर लिखे हुये के समान स्थिर खड़े हो जाते थे ॥

## षष्ठः श्लोकः

बर्हिणस्तबकधातुपलाशैर्बद्धमल्लपरिबर्हविडम्बः ।
कर्हिचित् सबल आलि स गोपैर्गाः समाह्वयति यत्र मुकुन्दः ॥६॥

पदच्छेद— बर्हिणस्तबकधातु पलाशैः बद्ध मल्ल परिबर्ह विडम्बः।
कर्हिचित् सबलः आलि सः गोपैः गाः समाह्वयति यत्र मुकुन्दः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| बर्हिणः | ४. मोर पंख | कर्हिचित् | ३. कभी |
| स्तबक | ५. फूल के गुच्छे | सबलः | १३. बलराम (और) |
| धातु | ६. धातु (और) | आलि | १. हे सखि ! |
| पलाशैः | ७. पल्लवों को | सः | १२. वे |
| बद्ध | ८. बाँधे हुये | गोपैः | १४. गोपों के साथ |
| मल्ल | ९. पहलवान का सा | गाः | १५. गौओं को |
| परिबर्ह | १०. वेष | समाह्वयति | १६. पुकारते हैं |
| विडम्बः। | ११. बनाकर | यत्र मुकुन्दः ॥ | २. जहाँ श्रीकृष्ण |

श्लोकार्थ—हे सखि ! जहाँ श्रीकृष्ण कभी मोर पंख, फूल के गुच्छे, धातु और पल्लवों को बाँधे हुये पहलवान का सा वेष बनाकर वे बलराम और गोपों के साथ गौओं को पुकराते हैं ॥

## सप्तमः श्लोकः

**तर्हि भग्नगतयः सरितो वै तत्पदाम्बुजरजोऽनिलनीतम् ।**
**स्पृहयतीर्वयमिवाबहुपुण्याः प्रेमवेपितभुजाः स्तिमितापः ॥७॥**

पदच्छेद— तर्हि भग्न गतयः सरितः वै तत् पद अम्बुज रजः अनिल नीतम् ।
स्पृहयतीः वयम् इव अबहु पुण्याः प्रेम वेपित भुजाः स्तिमित आपः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **तर्हि** | १. उस समय | स्पृहयतीः | १२. | कामना करती हैं पर |
| **भग्न** | ४. रुक जाती है (वे) | वयम् | १६. | हमारी |
| **गतयः** | ३. गति | इव | १७. | तरह |
| **सरितः वै** | २. नदियों की | अबहु पुण्याः | १८. | अल्प पुण्य वाली है |
| **तत् पद** | ५. उन श्रीकृष्ण के चरण | प्रेम | १३. | प्रेम के कारण |
| **अम्बुज** | ६. कमल की | वेपित | १४. | काँपती हुई |
| **रजः** | ७. धूलि को | भुजाः | १५. | भुजाओं वाली |
| **अनिल** | ८. वायु द्वारा | स्तिमित | ११. | रुके हुये |
| **नीतम् ।** | ९. अपने पास पहुँचाने की | आपः ॥ | १२. | जलवाला |

श्लोकार्थ—उस समय नदियों की गति रुक जाती हैं। वे उन श्रीकृष्ण के चरण कमल की धूलि को वायु द्वारा अपने पास पहुँचाने की कामना करती है। रुके हुये जलवाली प्रेम क कारण काँपती हुई भुजाओं वाली हमारी तरह अल्प पुण्य वाली हैं ॥

## अष्टमः श्लोकः

**अनुचरैः समनुवर्णितवीर्य आदिपूरुष इवाचलभूतिः ।**
**वनचरो गिरितटेषु चरन्तीर्वेणुनाऽऽह्वयति गाः स यदा हि ॥८॥**

पदच्छेद— अनुचरैः समनु वर्णित वीर्य आदि पुरुषः इव अचल भूतिः ।
वन चरः गिरि तटेषु चरन्तीः वेणुना आह्वयति गाः सः यदा हि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **अनुचरैः** | १. अनुचरों द्वारा | **वनचरः** | ९. | वन विहारी |
| **समनु** | ३. ज ते हुये | **गिरि** | ११. | पर्वत की |
| **वर्णित** | २. गायन किये | **तटेषु** | १२. | घाटी में |
| **वीर्यः** | ४. पराक्रम वाले (तथा) | **चरन्तीः** | १३. | चरती हुई |
| **आदि पूरुषः** | ५. आदि पुरुष के | **वेणुना** | १५. | बाँसुरी में |
| **इव** | ६. समान | **आह्वयति** | १६. | पुकारते हैं |
| **अचल** | ७. निश्चल | **गाः** | १४. | गौओं को |
| **भूतिः ।** | ८. ऐश्वर्य वाले | **सः यदाहि ॥** | १०. | वे श्रीकृष्ण जब |

श्लोकार्थ—अनुचरों द्वारा गायन किये जाते हुये पराक्रम वाले तथा आदि पुरुष के समान निश्चल ऐश्वर्य वाले वनविहारी वे श्रीकृष्ण जब पर्वत की घाटी में चरती हुई गौओं को बाँसुरी से पुकारते हैं ॥

## नवमः श्लोकः

**वनलतास्तरव आत्मनि विष्णुं व्यञ्जयन्त्य इव पुष्पफलाढ्याः ।**
**प्रणतभारविटपा मधुधाराः प्रेमहृष्टतनवः ससृजुः स्म ॥९॥**

पदच्छेद— वनलताः तरवः आत्मनि विष्णुम् व्यञ्जयन्त्यः इव पुष्प फलआढ्याः ।
प्रणत भार विटपाः मधुधाराः प्रेमहृष्ट तनवः ससृजुः स्म ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वनलताः | ४. वन की लतायें | प्रणत | १०. | झुकी हुई |
| तरवः | ३. वृक्ष (तथा) | भार | ९. | भार से |
| आत्मनि | ५. अपने भीतर | विटपाः | ११. | डालियों वाली (तथा) |
| विष्णुम् | ६. विष्णु की | मधुधाराः | १४. | मधु की धारायें |
| व्यञ्जयन्त्यः | ७. अभिव्यक्ति करती हुई के | प्रेमहृष्टाः | १२. | प्रेम से पुलकित |
| इव | ८. समान | तनवः | १३. | शरीर वाली होकर |
| पुष्प | १. उस समय पुष्पों और | ससृजुः स्म ॥ | १५. | उडेलने लगती हैं |
| फलाढ्याः । | २. फलों से लदे हुये | | | |

श्लोकार्थ—उस समय पुष्पों और फलों से लदे हुये वृक्ष तथा वन की लतायें अपने भीतर विष्णु की अभिव्यक्ति करती हुई के समान भार से झुकी हुई डालियों वाली तथा प्रेम से पुलकित शरीर वाली होकर मधु की धारारें उडेलने लगती हैं ॥

## दशमः श्लोकः

**दर्शनीयतिलको वनमालादिव्यगन्धतुलसीमधुमत्तैः ।**
**अलिकुलैरलघुगीतमभीष्टमाद्रियन् यर्हि सन्धितवेणुः ॥१०॥**

पदच्छेद— दर्शनीय तिलकः वनमाला दिव्य गन्ध तुलसी मधु मत्तैः ।
अलिकुलैः लघु गीतम् अभीष्टम् आद्रियन् यर्हि सन्धित वेणुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| दर्शनीय | १. देखने योग्य | अलिकुलैः | ९. | भौंरों के झुन्डों के |
| तिलकः | २. तिलक वाले (श्रीकृष्ण) | लघु | १०. | उच्चस्वर के |
| वनमाला | ३. वनमाला की | गीतम् | १२. | गुञ्जार का |
| दिव्य | ४. दिव्य | अभीष्टम् | ११. | अभीष्ट |
| गन्ध | ५. सुगन्ध (तथा) | आद्रियन् | १३. | आदर करते हुये |
| तुलसी | ६. तुलसी के | यर्हि | १४. | जब |
| मधु | ७. मधु से | सन्धित | १६. | बजाते हैं |
| मत्तैः । | ८. मतवाले | वेणुः ॥ | १५. | बाँसुरी |

श्लोकार्थ—देखने योग्य तिलक वाले श्रीकृष्ण वनमाला की दिव्य सुगन्ध तथा तुलसी के मधु से मतवाले भौंरों के झुन्डों के उच्चस्वर के अभीष्ट गुञ्जार का आदर करते हुये जब बाँसुरी बजाते हैं ॥

## एकादशः श्लोकः

**सरसि सारहंसविहङ्गाश्चारुगीतहृतचेतस एत्य ।**
**हरिमुपासत ते यतचित्ता हन्त मीलितदृशो धृतमौनाः ॥११॥**

पदच्छेद— सरसि सारस हंस विहङ्गाः चारु गीत हृत चेतसः एत्य ।
हरिम् उपासते ते यत चित्ताः हन्त मीलित दृशः धृत मौनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सरसि | ८. सरोवर से | हरिम् | १५. | श्रीकृष्ण की |
| सारस | ५. सारस | उपासते | १६ | उपासना करने लगते हैं |
| हंस | ६. हंस (आदि) | ते | १०. | और वे |
| विहङ्गाः | ७. पक्षी | यतचित्ताः | ११. | एकाग्रमन से |
| चारुगीत | २. सुन्दर गीत से | हन्त | १. | आश्चर्य की बात है कि |
| हृत | ३. हरे हुये | मीलित | १३. | मूंदकर |
| चेतसः | ४. चित्त वाले | दृशः | १२. | आँखें |
| एत्य । | ९. निकल कर आ जाते | धृतमौनाः ॥ | १४. | चुप्पी साधकर |

श्लोकार्थ—आश्चर्य की बात है कि सुन्दर गीत से हरे हुये चित्त वाले सारस हंस आदि पक्षी सरोवर से निकल कर आ जाते हैं। और वे एकाग्रमन से आँखें मूंदकर चुप्पी साधकर श्रीकृष्ण की उपासना करने लगते हैं ॥

## द्वादशः श्लोकः

**सहबलः स्रगवतंसविलासः सानुषु क्षितिभृतो व्रजदेव्यः ।**
**हर्षयन् यर्हि वेणुरवेण जातहर्ष उपरम्भति विश्वम् ॥१२॥**

पदच्छेद— सह बलः स्रग् अवतंस विलासः सानुषु क्षिति भृतः व्रज देव्यः ।
हर्षयन् यर्हि वेणु रवेण जात हर्षः उपरम्भति विश्वम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सह | ४. साथ (श्रीकृष्ण) | व्रजदेव्यः | १. | अरी व्रज देवियो ! |
| बलः | ३. बलराम जी के | हर्षयन् | ११. | हर्षित करते हुयें मानों |
| स्रग् | ५. फूलों की माला का | यर्हि | २. | जब |
| अवतंस | ६. आभूषण | वेणुरवेण | १०. | वंशी की ध्वनि से |
| विलासः | ७. धारण करके | जातहर्ष | १२. | आनन्द में भर कर |
| सानुषु | ९. शिखर पर चढ़कर | उपरम्भति | १४. | आलिंगन कर रहे हैं |
| क्षितिभृतः । | ८. गिरिराज पर्वत के | विश्वम् ॥ | १३. | संसार को |

श्लोकार्थ—अरी व्रजदेवियो ! जब बलराम जी के साथ श्रीकृष्ण फूलों की माला का आभूषण धारण करके गिरराज पर्वत के शिखर पर चढ़कर वंशी की ध्वनि से हर्षित करते हुये मानों आनन्द में भर कर संसार को आलिगित कर रहे है ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**महदतिक्रमणशङ्कितचेता मन्दमन्दमनुगर्जति मेघः ।**
**सुहृदमभ्यवर्षत् सुमनोभिश्छायया च विदधत् प्रतपत्रम् ॥१३॥**

पदच्छेद— महत् अतिक्रमण शङ्कित चेताः मन्द-मन्दम् अनुगर्जति मेघः ।
सुहृदम् अभ्यवर्षत् सुमनोभिः छायया च विदधत् प्रतपत्रम् ॥

शब्दार्थ

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **महत्** | १. बड़ों की बात का | सुहृदम् | ८. | अपने मित्र श्रीकृष्ण पर |
| **अतिक्रमण** | २. उल्लंघन करने से | अभ्यवर्षत् | १०. | वर्षा करने लगता है |
| **शङ्कित** | ३. सशङ्कित | सुमनोभिः | ९. | फूलों की |
| **चेताः** | ४. मन वाला | छायया | १४. | छाया करता है |
| **मन्दमन्दम्** | ६. धीरे-धीरे | च | ११. | और |
| **अनुगर्जति** | ७. गरजता है (और) | विदधत् | ११. | बन कर |
| **मेघः ।** | ५. बादल | प्रतपत्रम् ॥ | १२. | छाता |

श्लोकार्थ—बड़ों की बात का उल्लंघन करने से सशङ्कित मन वाला बादल धीरे-धीरे गरजता है । और अपने मित्र श्रीकृष्ण पर फूलों की वर्षा करने लगता है । और छाता बन कर छाया करता है ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**विविधगोपचरणेषु विदग्धो वेणुवाद्य उरुधा निजशिक्षाः ।**
**तव सुतः सति यदाधरबिम्बे दत्तवेणुरनयत् स्वरजातीः ॥१४॥**

पदच्छेद— विविध गोप चरणेषु विदग्धः वेणु वाद्ये उरुधा निज शिक्षाः ।
तव सुतः सति यदा अधर बिम्बे दत्त वेणुः अनयत् स्वर जातीः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **विविध** | ३. अनेक | तवसुतः | २. | आपके पुत्र श्रीकृष्ण |
| **गोप** | ४. ग्वालों के साथ | सति | १. | हे सती यशोदा जी ! |
| **चरणेषु** | ५. खेल खेलने में बड़े | यदा | १०. | जब वे |
| **विदग्धः** | ६. चतुर हैं (उन्होंने) | अधर बिम्बे | ११. | लाल अधरों पर |
| **वेणुवाद्य** | ७. वंशी पर | दत्तवेणुः | १२. | बाँसुरी रख कर |
| **उरुधाः** | ८. अनेक प्रकार के राग | अनयत् | १४. | बजाने लगते हैं |
| **निजशिक्षाः ।** | ९. स्वयं सीख लिये हैं | स्वर जातीः ॥ | १३. | अनेक स्वरों में |

श्लोकार्थ—हे सती यशोदा जी ! आपके पुत्र श्रीकृष्ण अनेक ग्वालों के साथ खेल-खेलनें में बड़े चतुर हैं । उन्होंने अनेक प्रकार के राग स्वयं सीख लिये हैं । जब लाल अधरों पर बाँसुरी रखकर अनेक स्वरों में बजाने लगते हैं ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**सवनशस्तदुपधार्य सुरेशाः शक्रशर्वपरमेष्ठिपुरोगाः ।**
**कवय आनतकन्धरचित्ताः कश्मलं ययुरनिश्चिततत्त्वाः ॥१५॥**

पदच्छेद— सवनशः तत् उपधार्य सुरेशाः शक्र शर्व परमेष्ठि पुरोगाः ।
कवयः आनत कन्धर चित्ताः कश्मलम् ययुः अनिश्चित तत्त्वाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सवनशः | १. वंशी की परममोहिनी और | कवयः | ९. सर्वज्ञ हैं (वे) |
| तत् | २. नई तान | आनत | १३. झुका कर |
| उपधार्य | ३. सुनकर | कन्धर | १२. गरदन के |
| सुरेशाः | ४. बड़े बड़े देवता | चित्ताः | १४. मन से |
| शक्र | ५. इन्द्र | कश्मलम् | १५. मोहित |
| शर्व | ६. शंकर | ययुः | १६. हो गये |
| परमेष्ठि | ७. ब्रह्मा | अनिश्चित | ११. निश्चय न कर सकने से |
| पुरोगाः । | ८. आदि (जो) | तत्त्वाः ॥ | १०. वास्तविकता का |

श्लोकार्थ—वंशी की परममोहिनी और नई तान सुनकर बड़े बड़े देवता इन्द्र, शंकर, ब्रह्मा आदि जो सर्वज्ञ हैं, वे वास्तविकता का निश्चय न कर सकने से गरदन को झुकाकर मन से मोहित हो जाते हैं ।

## षोडशः श्लोकः

**निजपदाब्जदलैर्ध्वजवज्रनीरजाङ्कुशविचित्रललामैः ।**
**व्रजभुवः शमयन् खुरतोदं वर्ष्मधुर्यगतिरीडितवेणुः ॥१६॥**

पदच्छेद— निज पद अब्ज दलैः ध्वज वज्र नीरज अङ्कुश विचित्र ललामैः ।
व्रजभुवः शमयन् खुरतोदम् वर्ष्मधुर्य गतिः ईडित वेणुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| निज | ६. अपने | व्रजभुवः | ८. व्रज भूमि की |
| पद अब्जदलैः | ७. चरण कमलों से | शमयन् | ११. शान्त करते हुये |
| ध्वजवज्र | १. ध्वज वज्र | खुर | ९. गौओं के खुरों से |
| नीरज | २. कमल (तथा) | तोदम् | १०. खुदने की व्यथा को |
| अङ्कुश | ३. अंकुश के | वर्ष्मधुर्य | १३. गजराज के समान |
| विचित्र | ४. अनोखे | गतिः | १४. चाल से चल रहे हैं |
| ललामैः । | ५. सुन्दर चिह्नों से युक्त | ईडितवेणुः ॥ | १२. बाँसुरी बजाते हुये श्रीकृष्ण |

श्लोकार्थ—ध्वज, वज्र, कमल तथा अंकुश के अनोखे सुन्दर चिह्नों से युक्त अपने चरण कमलों से व्रज भूमि की गौओं के खुरों से खुदने की व्यथा को शान्त करते हुये एवम् बाँसुरी बजाते हुये श्रीकृष्ण गजराज के समान चाल से चल रहे हैं ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**व्रजति तेन वयं सविलासवीक्षणार्पितमनोभववेगाः।**

**कुजगतिं गमिता न विदामः कश्मलेन कबरं वसनं वा ॥१७॥**

पदच्छेद— व्रजति तेन वयम् सविलास वीक्षण अर्पित मनोभव वेगाः।
कुजगतिम् गमिताः न विदामः कश्मलेन कबरम् वसनम् वा ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| व्रजति | १. जब वे चलते हैं | कुजगतिम् | ८. वृक्षों के समान निश्चल गति को |
| तेन | २. तब उनकी चाल (और) | गमिता | ९. प्राप्त कर लेती है |
| वयम् | ७. हम | न विदामः | १४. हम नहीं जान पाती हैं |
| सविलास | ३. विलास भरी | कश्मलेन | १०. मोह के कारण |
| वीक्षण | ४. चितवन से (हमारा) | कबरम् | ११. जूड़ा खुलने |
| अर्पित | ६. बढ़ जाता है (और) | वसनम् | १३. वस्त्र उतरने को भी |
| मनोभववेगाः। | ५. काम वेग | वा ॥ | १२. अथवा |

श्लोकार्थ—अरी वीर ! जब वे चलते हैं तब उनकी चाल और विलास भरी चितवन से हमारा काम वेग बढ़ जाता है और हम वृक्षों के समान निश्चल गति को प्राप्त कर लेती हैं। मोह के कारण जूड़ा खुलने अथवा वस्त्र उतरने को भी नहीं जान पाती हैं ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**मणिधरः क्वचिदागणयन् गा मालया दयितगन्धतुलस्याः।**

**प्रणयिनोऽनुचरस्य कदांसे प्रक्षिपन् भुजमगायत यत्र ॥१८॥**

पदच्छेद— मणिधरः क्वचित् आगणयन् गाः मालया दयित गन्ध तुलस्याः।
प्रणयिनः अनुचरस्य कदा अंसे प्रक्षिपन् भुजम् अगायत यत्र ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| मणिधरः | १. मणि धारण किये हुये | प्रणयिनः | ९. प्रेमी |
| क्वचित् | २. कहीं श्रीकृष्ण | अनुचरस्य | १०. सखा के |
| आगणयन् | ८. गिनते हुये | कदा | १५. कभी |
| गाः | ७. गौओं को | अंसे | ११. कन्धे पर |
| मालया | ६. माला से | प्रक्षिपन् | १३. रख कर |
| दयित | ३. प्रिय | भुजम् | १२. बाँह |
| गन्ध | ४. गन्ध वाली | अगायत | १६. गाने लगते हैं |
| तुलस्याः। | ५. तुलसी की | यत्र ॥ | १४. जब तब |

श्लोकार्थ—मणि धारण किये हुये कहीं श्रीकृष्ण प्रिय गन्ध वाली तुलसी की माला सेगौओं को गिनते हुये, प्रेमी सखा के कन्धे पर बाँह रख कर जब तब कभी गाने लगते हैं ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**क्वणितवेणुरववञ्चितचित्ताः कृष्णमन्वसत कृष्णगृहिण्यः ।**
**गुणगणार्णमनुगत्य हरिण्यो गोपिका इव विमुक्तगृहाशाः ॥१९॥**

पदच्छेद— क्वचित् वेणुरव वञ्चित चित्ताः कृष्णम् अन्वसत कृष्ण गृहिण्यः ।
गुणगण अर्णम् अनुगत्य हरिण्यः गोपिका इव विमुक्त गृहाशाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| क्वणित | १. बजती हुई | गुणगण | १४. गुण समूह के |
| वेणुरव | २. बाँसुरी की (ध्वनि से) | अर्णम् | १५. समुद्र (कृष्ण) का |
| वञ्चित | ३. मोहित | अनुगत्य | १६. अनुगमन करने लगती हैं |
| चित्ताः | ४. चित्तवाली | हरिण्यः | १३. हरिणियाँ |
| कृष्णम् | ७. कृष्ण के पास | गोपिकाः | ११. हम गोपियों के |
| अन्वसत | ८. दौड़ आती हैं (और) | इव | १२. समान |
| कृष्ण | ५. कृष्णसार मृगों की | विमुक्त | १०. छोड़ चुकने वाली |
| गृहिण्यः । | ६. रानियाँ | गृहाशाः ॥ | ९. घर की आशा |

श्लोकार्थ—उस समय बजती हुई बाँसुरी की ध्वनि से मोहित चित्तवाली कृष्णसार मृगों की पत्नियाँ कृष्ण के पास दौड़ आती हैं । और घर की आशा छोड़ चुकने वाली हम गोपियों के समान हरिणियाँ गुण समूह के समुद्र कृष्ण का अनुगमन करने लगती हैं ॥

## विंशः श्लोकः

**कुन्ददामकृतकौतुकवेषो गोपगोधनवृतो यमुनायाम् ।**
**नन्दसूनुरनघे तव वत्सो नर्मदः प्रणयिनां विजहार ॥२०॥**

पदच्छेद— कुन्द दाम कृत कौतुक वेषः गोप गोधन वृतः यमुनायाम् ।
नन्द सूनुः अनघे तव वत्सः नर्मदः प्रणयिनाम् विजहार ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कुन्ददाम | ६. कुन्द के पुष्पों की माला से | नन्दसूनुः | ९. नन्द जी के पुत्र (श्रीकृष्ण) |
| कृत | ८. धारण किये हुये | अनघे | १. हे निष्पाप ! यशोदा जी |
| कौतुक वेषः | ७. कौतुहल उत्पन्न करने वाला वेष | तव | २. आपके |
| गोप | १०. ग्वाल वालों तथा | वत्सः | ३. पुत्र |
| गोधन | ११. गऊओं से | नर्मदः | ५. आनन्द देने वाले हैं |
| वृतः | १२. घिर कर | प्रणयिनाम् | ४. प्रेमी जनों को |
| यमुनायाम् । | १३. यमुना में | विजहार ॥ | १४. खेलने लगते हैं |

श्लोकार्थ—हे निष्पाप यशोदा जी ! आपके पुत्र प्रेमी जनों को आनन्द देने वाले हैं । कुन्द के पुष्पों की माला से कौतुहल उत्पन्न करने वाला वेष धारण किये हुये नन्द जी के पुत्र ग्वालवालों तथा गऊओं से घिर कर यमुना में खेलने लगते है ॥

## एकविंशः श्लोकः

**मन्दवायुरुपवात्यनुकूलं मानयन् मलयजस्पर्शेन ।**
**वन्दिनस्तमुपदेवगणा ये वाद्यगीतबलिभिः परिवव्रुः ॥२१॥**

पदच्छेद— मन्द वायुः उपवाति अनुकूलम् मानयन् मलयज स्पर्शेन ।
वन्दिनः तम् उपदेवगणाः ये वाद्यगीत बलिभिः परिवव्रुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| मन्द | २. मन्द-मन्द | वन्दिनः | १०. बन्दी बन कर |
| वायुः | १. वायु | तम् | १३. उनकी |
| उपवाति | ४. बह कर | उपदेवगणाः | ९. (गन्धर्वादि) उपदेवतागण हैं वे |
| अनुकूलम् | ३. अनुकूल | ये | ८. (और) जो |
| मानयन् | ७. उनका सम्मान करती है | वाद्यगीत | ११. वाद्य गीत तथा |
| मलयज | ५. चन्दन के समान | बलिभिः | १२. उपहारों से |
| स्पर्शेन । | ६. शीतल स्पर्श से | परिवव्रुः ॥ | १४. सेवा करते हैं |

श्लोकार्थ—उस समय वायु मन्द-मन्द अनुकूल बह कर चन्दन के समान शीतल स्पर्श से उनका सम्मान करती है । और जो गन्धर्वादि उपदेवता गण हैं वे बन्दी बन कर वाद्यगीत तथा उपहारों से उनकी सेवा करते हैं ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**वत्सलो व्रजगवां यदगध्रो वन्द्यमानचरणः पथि वृद्धैः ।**
**कृत्स्नगोधनमुपोह्य दिनान्ते गीतवेणुरनुगेडितकीर्तिः ॥२२॥**

पदच्छेद— वत्सलः व्रज गवाम् यत् अगध्रः वन्द्यमान चरणः पथि वृद्धैः ।
कृत्स्न गोधनम् उपोह्य दिन अन्ते गीत वेणुः अनुग ईडित कीर्तिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| वत्सलः | ८. स्नेही (श्रीकृष्ण) | कृत्स्न | १०. सब |
| व्रज | ६. व्रज की | गोधनम् | ११. गौओं को |
| गवाम् | ७. गौओं के | उपोह्य | १२. लौटा कर |
| यत् अगध्रः | ५. जिनके लिये पर्वत को धारण किया था | दिन अन्ते | ९. सायंकाल |
| वन्द्यमान | ३. पूजित | गीतवेणुः | १६. बाँसुरी बजाते हुये आ ही रहे हैं |
| चरणः | ४. चरण वाले भगवान् | अनुग | १३. सखाओं द्वारा |
| पथि | १. मार्ग में | ईडित | १४. गायी जाती हुई |
| वृद्धैः । | २. वृद्ध जनों तथा (ब्रह्मादि) द्वारा | कीर्तिः ॥ | १५. कीर्ति वाले (तथा) |

श्लोकार्थ—अरी सखि ! मार्ग में वृद्ध जनों तथा ब्रह्मादि द्वारा पूजित चरण वाले भगवान्, ने जिनके लिये पर्वत को धारण किया था उन व्रज की गौओं के स्नेही श्रीकृष्ण सायंकाल सब गौओं को लौटाकर सखाओं द्वारा गायी जाती हुई कीर्ति वाले तथा बाँसुरी बजाते हुये आ ही रहे हैं।

## त्रयोविंशः श्लोकः

**उत्सवं श्रमरुचापि दृशीनामुन्नयन् खुररजश्छुरितस्रक् ।**
**दित्सयैति सुहृदाशिष एष देवकीजठरभूरुडुराजः ॥२३॥**

पदच्छेद— उत्सवम् श्रम रुचा अपि दृशीनाम् उन्नयन् खुररजः छुरित स्रक् ।
दित्सयाएति सुहृद् आशिषः एषः देवकी जठर भूः उडुराजः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्सवम् | ७. आनन्द | दित्सया | १५. देने की इच्छा से |
| श्रम | ४. परिश्रम की | एति | १७. आ रहे हैं |
| रुचा अपि | ५. शोभा से भी | सुहृद | १३. मित्रों की |
| दृशीनाम् | ६. नेत्रों को | आशिषः | १४. कामनाओं को |
| उन्नयन् | ८. देते हुये | एषः | १६. वे (श्रीकृष्ण) |
| खुररजः | १. गायों के खुरों से उड़ी धूल से | देवकी | ९. देवकी की |
| छुरित | २. शोभित | जठर | १०. कोख से |
| स्रक् | ३. वन माला वाले | भूः | ११. प्रकट |
| | | उडुराजः ॥ | १२. चन्द्रमा के समान आह्लादक |

श्लोकार्थ—गायों के खुरों से उड़ी धूल से शोभित वनमाला वाले, परिश्रम की शोभा से भी नेत्रों को आनन्द देते हुये, देवकी के कोख से प्रकट, चन्द्रमा के समान आह्लादक, मित्रों की कामनाओं को देने की इच्छा से वे श्रीकृष्ण आ रहे हैं ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**मदविघूर्णितलोचन ईषन्मानदः स्वसुहृदां वनमाली ।**
**बदरपाण्डुवदनो मृदुगण्डं मण्डयन् कनककुण्डललक्ष्म्या ॥२४॥**

पदच्छेद— मद विघूर्णित लोचनः ईषत् मानदः स्व सुहृदाम् वनमाली ।
बदर पाण्डु वदनः मृदु गण्डम् मण्डयन् कनक कुण्डल लक्ष्म्या ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| मद | १. मद के कारण | बदर | ९. बेर के समान |
| विघूर्णित | २. चढ़ी हुई | पाण्डु | १०. पीले |
| लोचनः | ३. आँखों वाले | वदन | ११. मुख वाले |
| ईषत् | ६. कुछ | मृदु | १४. कोमल |
| मानदः | ७. मान देने वाले | गण्डम् | १५. कपोलों को विभूषित |
| स्व | ४. अपने | मण्डयन् | १६. करते हुये आ रहे हैं |
| सुहृदाम् | ५. मित्रों को | कनक कुण्डल | १२. सोने के बने कुण्डलों की |
| वनमाली । | ८. वनमाला पहने हुये | लक्ष्म्या ॥ | १३. कान्ति से |

श्लोकार्थ—अरी सखी ! मद के कारण चढ़ी हुई आँखों वाले, अपने मित्रों को कुछ मान देने वाले, वनमाला पहने हुये, बेर के समान पीले मुख वाले सोने के बने कुण्डलों की कान्ति से कोमल कपोलों को विभूषित करते हुये आ रहे हैं ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**यदुपतिर्द्विरदराजविहारो यामिनीपतिरिवैष दिनान्ते ।**
**मुदितवक्त्र उपयाति दुरन्तं मोचयन् व्रजगवां दिनतापम् ॥२५॥**

पदच्छेद— यदुपतिः द्विरदराज विहारः यामिनीपतिः इव एषः दिन अन्ते ।
मुदित वक्त्रः उपयाति दुरन्तम् मोचयन् व्रज गवाम् दिन तापम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यदुपतिः | ६. | यदुराज श्रीकृष्ण | वक्त्रः | ५. | मुख |
| द्विरदराज | १. | गजराज के समान | उपयाति | १६. | समीप चले आ रहे हैं |
| विहारः | २. | चलने वाले | दुरन्तम् | ११. | असहनीय |
| यामिनीपतिः | १४. | चन्द्रमा की | मोचयन् | १३. | मिटाते हुये |
| इव | १५. | भाँति | व्रज | ८. | व्रज की |
| एषः | ३. | ये | गवाम् | ६. | गौओं के |
| दिन-अन्ते । | ७. | सायंकाल में | दिन | १०. | दिन भर के |
| मुदित | ४. | प्रसन्न | तापम् ॥ | १२. | विरह जनित ताप को |

श्लोकार्थ—ओह सखि ! गजराज के समान चलने वाले ये प्रसन्न मुख यदुराज श्रीकृष्ण सायंकाल में व्रज की गौओं के दिन भर के असहनीय विरह जनित ताप को मिटाते हुये चन्द्रमा की भाँति समीप चले आ रहे हैं ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—एवं व्रजस्त्रियो राजन् कृष्णलीला नु गायतीः ।**
**रेमिरेऽहःसु तच्चित्तास्तन्मनस्का महोदयाः ॥२६॥**

पदच्छेद— एवम् व्रजस्त्रियः राजन् कृष्ण लीलाः नु गायतीः ।
रेमिरे अहः सु तत् चित्ताः तत् मनस्काः महोदयाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | २. | इस प्रकार | रेमिरे | १२. | रम जाती हैं |
| व्रज स्त्रियः | ४. | व्रज की स्त्रियाँ | अहः सु | ६. | दिन में |
| राजन् | १. | हे राजन् ! | तत् चित्ताः | ६. | उन्हीं में चित्त और |
| कृष्ण लीलाः | ५. | कृष्ण की लीलाओं का | तत् | १०. | उन्हीं में |
| नु | ७. | निश्चित रूप से | मनस्काः | ११. | मन को लगा कर |
| गायतीः । | ८. | गान करती हुई | महोदयाः ॥ | ३. | बड़ भागिनी |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस प्रकार बड़ भागिनी व्रज की स्त्रियाँ कृष्ण की लीलाओं का दिन में निश्चित रूप से गान करती हुई उन्हीं में चित्त और मन को लगा कर रम जाती हैं ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
वृन्दावनक्रीडायाम् गोपिकायुगलगीतं नाम पञ्चत्रिंशः अध्यायः ॥३५॥

## द्वादशः श्लोकः

गोप्युवाच— मधुप कितवबन्धो मा स्पृशाङ्घ्रिं सपत्न्याः
कुचविलुलितमालाकुङ्कुमश्मश्रुभिर्नः ।
वहतु मधुपतिस्तन्मानिनीनां प्रसादं
यदुसदसि विडम्ब्यं यस्य दूतस्त्वमीदृक् ॥१२॥

पदच्छेद— मधुप कितवबन्धो मा स्पृश अङ्घ्रिम् सपत्न्याःकुच विलुलितमाला कुङ्कुमश्मश्रुभिः नः ।
वहतु मधुपतिः तत् मानिनी नाम् प्रसादम् यदुसदसि विडम्ब्यम् यस्य दूतःत्वम् ईदृक् ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| मधुप | १. हे भ्रमर ! | वहतु | १६. वृथा ढोते हैं |
| कितवबन्धो | २. धूर्त का मित्र | मधुपतिः | ११. श्रीकृष्ण |
| मा स्पृश | ८. मत छू | तत मानिनीनाम् | १२. मथुरा की मानिनीनायिकाओं का |
| अङ्घ्रिम् | ७. पैरों को | प्रसादम् | १५. कुङ्कुमरूप प्रसाद को |
| सपत्न्याःकुच | ४. सौत के कुचों पर | यदुसदसि | १३. यदुवंशियों की सभा में |
| विलुलितमाला | ५. मसली गई माला के | विडम्ब्यम् | १४. उपहास करने योग्य |
| कुङ्कुमश्मश्रुभिः | ६. कुङ्कुम से लिप्त मूछों से | यस्य दूतःत्वम् | ९. जिनका दूत तू |
| नः । | ३. हमारी | ईदृक् ॥ | १०. ऐसा है (वे) |

श्लोकार्थ—हे भ्रमर ! धूर्त का मित्र ! हमारी सौत के कुचों पर मसली गई माला के कुङ्कुम से लिप्त मूंछों से पैरों को मत छू। जिनका दूत तू ऐसा है, वे श्रीकृष्ण मथुरा की मानिनी नायिकाओं का उपहास करने योग्य कुङ्कुम रूप प्रसाद को वृथा ढोते हैं ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

सकृदधरसुधां स्वां मोहिनीं पाययित्वा सुमनस इव सद्यस्तत्यजेऽस्मान् भवादृक् ।
परिचरति कथं तत्पादपद्मं तु पद्मा ह्यपि बत हृतचेता उत्तमश्लोकजल्पैः ॥१३॥

पदच्छेद—सकृत् अधर सुधाम् स्वाम् मोहिनीम् पाययित्वा सुमनस इव सद्यः तत्यजे अस्मान् भवादृक् ।
परिचरति कथम् तत् पादपद्मम् तु पद्मा हि अपि बत हृतचेताः उत्तमश्लोक जल्पैः ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| सकृत् | १. उन्होंने एक बार | परिचरति | १२. सेवा करती रहती हैं |
| अधर सुधाम् | ३. अधरामृत | कथम् तत् | १०. कैसे उनके |
| स्वाम् मोहिनीम् | २. अपना मादक | पादपद्मम् | ११. चरण कमलों की |
| पाययित्वा | ४. पिला कर | तु पद्मा | ९. लक्ष्मी |
| सुमनसः इव | ५. मानों फूलों से रस लेकर | हि अपि | १५. उनका भी |
| सद्यः | ६. तत्काल उड़ जाने वाले | बत | १३. मालूम पड़ता है |
| तत्यजे अस्मान् | ८. हमें त्याग दिया | हृतचेताः | १६. चित्त चुरा लिया है |
| भवादृक् | ७. आपके समान | उत्तमश्लोक जल्पैः ॥ | १४. श्रीकृष्ण की मीठी बातों ने |

श्लोकार्थ—उन्होंने एक बार अपना मादक अधरामृत पिला कर मानों फूलों से रस लेकर तत्काल उड़ जाने वाले आप के समान हमें त्याग दिया। लक्ष्मी कैसे उनके चरणों की सेवा करती रहती हैं। मालूम पड़ता है श्रीकृष्ण की मीठी बातों ने उनका भी चित्त चुरा लिया है ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**किमिह बहु षडङ्घ्रे गायसि त्वं यदूनामधिपतिमगृहाणामग्रतो नः पुराणम् ।**
**विजयसखसखीनां गीयतां तत्प्रसङ्गः क्षपितकुचरुजस्ते कल्पयन्तीष्टमिष्टाः ॥१४॥**

पदच्छेद—किम् इह बहु षडङ्घ्रे गायसि त्वम् यदूनाम् अधिपतिः अगृहाणाम् अग्रतः नः पुराणम् ।
विजय सख सखीनाम् गीयताम् तत् प्रसङ्गः क्षपित कुचरुजः ते कल्पयन्ति इष्टम् इष्टाः ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| किं इह बहु | ७. क्यों यहाँ बहुत | विजय सख | ९ विजय के साथी श्रीकृष्ण की |
| षडङ्घ्रे | १. अरे भ्रमर ! | सखीनाम् | १०. मथुरा वासिनी सखियों के सामने |
| गायसि | ८. गुण-गान कर रहा है | गीयताम् | १२. गायनकर (उन्होंने) |
| त्वम् | २. तू | तत् प्रसङ्गः | ११. उनकी लीलाओं का |
| यदूनाम् अधिपतिम् | ६. यदुवंशियों के स्वामी का | क्षपित | १४. मिटा दिया है (वे) |
| अगृहाणाम् | ३ घर-द्वार से रहित | कुचरुजः | १३. उनके हृदय की पीड़ा को |
| अग्रतः नः | ४ हमारे आगे | ते कल्पयन्ति | १६. तुझे देंगी |
| पुराणम् । | ५. पुराने परिचित | इष्टमिष्टाः ॥ | १५. प्रसन्न होकर मुह मांगी वस्तुयें |

श्लोकार्थ—अरे भ्रमर ! घर-द्वार से रहित हमारे आगे पुराने परिचित यदुवंशियों के स्वामी का क्यों यहां बहुत गुण-गान कर रहा है। विजय के साथी श्रीकृष्ण की मथुरा वासिनी सखियों के सामने उनकी लीलाओं का गायन कर, उन्होंने उनके हृदय की पीड़ा को मिटा दिया है। वे प्रसन्न होकर तुझे मुँह माँगी वस्तुयें देंगी ।

## पञ्चदशः श्लोकः

**दिवि भुवि च रसायां काः स्त्रियस्तद्दुरापाः कपटरुचिरहासभ्रूविजृम्भस्य याःस्युः ।**
**चरणरज उपास्ते यस्य भूतिर्वयं का अपि च कृपणपक्षे ह्युत्तमश्लोकशब्दः ॥१५॥**

पदच्छेद—दिवि भुवि च रसायाम् काः स्त्रियः तत् दुरापाः कपट रुचिर हास भ्रू विजृम्भस्य याः स्युः ।
चरणरजः उपास्ते यस्य भूतिः वयम् का अपि च कृपणपक्षे हि उत्तम श्लोक शब्दः ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| दिविभुवि | १. स्वर्ग में पृथ्वी में | स्युः । | १२. हैं |
| च रसायाम् | २. और पाताल में (ऐसी) | चरणरजः | १०. चरणों की धूलि की |
| काः स्त्रियः | ३. कौन स्त्रियाँ हैं | उपास्ते | ११. उपासना करती |
| तत् दुरापाः | ८. भगवान् के लिये दुर्लभ हों | यस्यभूतिः | ९. लक्ष्मी जिनकी |
| कपट रुचिर | ५. कपट भरी मनोहर | वयम् का | १३. उनके लिये हम कौन हैं |
| हास भ्रू | ६. मुसकान तथा भौहों के | अपि च | १४. किन्तु उनका |
| विजृम्भस्य | ७. मटकाने वाले | कृपणपक्षेहि | १६. कृपण पक्ष में ही है |
| याः । | ४. जो श्रीकृष्ण की | उमश्लोकशब्दः | १५. उत्तम श्लोक यह नाम |

श्लोकार्थ—स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल में ऐसी कौन स्त्रियाँ हैं, जो भगवान् के लिये दुर्लभ हों। कपट भरी मनोहर मुसकान तथा भौंहों को मटकाने वाले जिन श्रीकृष्ण के चरणों की धूली की उपासना लक्ष्मी करती हैं, उनके लिये हम कौन हैं। किन्तु उनका उत्तम श्लोक यह नाम कृपण पक्ष में ही है ॥

## षोडशः श्लोकः

**विसृज शिरसि पादं वेद्म्यहं चाटुकारैरनुनयविदुषस्तेऽभ्येत्य दौत्यैर्मुकुन्दात् ।**
**स्वकृत इह विसृष्टापत्यपत्यन्यलोका व्यसृजदकृतचेताः किं नु सन्धेयमस्मिन् ॥१६**

पदच्छेद— विसृज शिरसिपादम् वेद्मि अहम चाटुकारैः अनुनय विदुषः ते अभ्येत्य दौत्यैः मुकुन्दात् ।
स्वकृत इह विसृष्ट अपत्य पति अन्य लोकाः व्यसृजत् अकृत चेताः किम् न सन्धेयम् अस्मिन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| विसृज | २. मत टेक | स्वकृत इह | १०. अपने लिये यहाँ |
| शिरसि पादम् | १. पैरों पर सिर | विसृज | १३. त्यागने वाली हम लोगों को |
| वेद्मि अहम् | ३. मैं जानती हूँ कि | अपत्य पति | ११. सन्तान, पति तथा |
| चाटुकारैः | ४. चापलूसी से | अन्यलोकाः | १२. दूसरे लोगों को |
| अनुनय | ५ मनाने में | व्यसृजत् | १४. छोड़कर चले गये |
| विदुषः ते | ५. तू पण्डित है | अकृतचेताः | ६. वे अकृतज्ञ हैं |
| अभ्येत्य | ८. आया है | किम् नु | १५. क्या |
| दौत्यैः | ७. दूतकर्म सीखकर | सन्धेयम् | १६. सन्धि करनी चाहिये |
| मुकुन्दात् । | ६. भगवान् श्रीष्ण के पास से | अस्मिन् ॥ | १६. उनसे |

श्लोकार्थ—पैरों पर सिर मत टेक मैं जानती हूँ कि चापलूसी से मनाने में तू पण्डित है। भगवान् श्रीकृष्ण के पास से दूत कर्म सीख कर आया है। वे अकृतज्ञ हैं। अपने लिये यहाँ सन्तान, पति तथा दूसरे लोगों को त्यागने वाली हम लोगों को छोड़ कर चले गये। क्या उनसे सन्धि करनी चाहिये ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**मृगयुरिव कपीन्द्रं विव्यधे लुब्धधर्मा स्त्रियमकृत विरूपां स्त्रीजितः कामयानाम् ।**
**बलिमपि बलिमत्त्वावेष्टयद् ध्वाङ्क्षवद् यस्तदलमसितसख्यैर्दुस्त्यजस्तत्कथार्थः १७**

पदच्छेद— मृगयुः इव कपीन्द्रम् विव्यधे लुब्ध धर्मा स्त्रियम् अकृत विरूपाम् स्त्री जितः कामयानाम् ।
बलिम् अपि बलिम् अत्त्वा आवेष्टयत् ध्वाङ्क्षवत यः तत् अलम् असित सख्यैः दुस्त्यजः तत् कथाअर्थः ॥

शब्दार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| मृगयुः इव | ३. व्याध के समान (छिपकर) | बलिम् अपि | १२. राजा बलि को भी |
| कपीन्द्रम् | ४. वानरराजबालि को | बलिम् अत्त्वा | ११. बलि खाकर भी |
| विव्यधे | ५. मार डाला था | आवेष्टयत् | १३. बाँध दिया था |
| लुब्धधर्मा | २. शिकारी | ध्वाङ्क्षवत् | १०. कौए के समान |
| स्त्रियम् | ७. स्त्री (शूर्पणखा) को | यः तत् | १. जिन्होंने |
| अकृतविरूपाम् | ६. विरूप कर दिया और | अलम्असितसख्यैः | १४. ऐसे काले व्यक्ति से मित्रता व्यर्थ है |
| स्त्रीजितः | ८. स्त्री के वश में होकर | दुस्त्यजः तत् | १६. छोड़ देना कठिन है |
| कामयानाम् । | ६. कामना करती हुई | कथा अर्थः ॥ | १५. किन्तु उनकी चर्चा को |

श्लोकार्थ—उन्होंने शिकारी व्याध के समान छिपकर वानरराजबालि को मार डाला था। कामना करती हुई स्त्री सूर्पणखा को स्त्री के वश में होकर विरूप कर दिया और कौए के समान बलि खाकर भी राजा बलि को बाँध दिया था। ऐसे काले व्यक्ति से मित्रता व्यर्थ है। किन्तु उनकी चर्चा को छोड़ना कठिन है ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**यदनुचरितलीलाकर्णपीयूषविप्रुट्सकृददनविधूतद्वन्द्वधर्मा विनष्टाः ।**
**सपदि गृहकुटुम्बं दीनमुत्सृज्य दीना बहव इह विहङ्गा भिक्षुचर्यां चरन्ति ॥१८॥**

पदच्छेद— यत् अनुचरित लीला कर्ण पीयूष विप्रुट् सकृत् अदन विधूत द्वन्द्वधर्माः विनष्टाः ।
सपदि गृह कुट्म्बम् दीनम् उत्सृज्य दीनाः बहवः इहविहङ्गाः भिक्षुचर्याम् चरन्ति ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यत् अनुचरित | १. जिनकी की हुई | सपदि | १०. शीघ्र ही |
| लीला | २. लीलाओं का | गृह | ११. घर और |
| कर्ण पीयूष | ३. कर्णामृत के | कुट्म्बम् दीनम् | १२. दुःखी परिवार को |
| विप्रुट् सकृत् | ४. एक कण का एक बार भी | उत्सृज्य | १३. छोड़ कर |
| अदन | ५ रसास्वादन कर लेता है उसके | दीनाः बहवः | ६. अकिञ्चन लोग बहुत से |
| विधूत | ७. धुले हुये के समान | इहविहङ्गाः | १४. यहाँ पक्षियों के समान |
| द्वन्द्वधर्माः | ६. राग-द्वेष आदि | भिक्षुचर्याम् | १५. भिक्षाटन |
| विनष्टाः । | ८. नष्ट हो जाते हैं (ऐसे) | चरन्ति ॥ | १६. करते हैं |

श्लोकार्थ—जिनकी की हुई लीलारूप कर्णामृत के एक कण का एक बार भी जो रसास्वादन कर लेता है, उसके राग-द्वेष आदि धुले हुये के समान नष्ट हो जाते हैं। ऐसे बहुत से अकिञ्चन लोग शीघ्र ही घर और दुःखी परिवार को छोड़ कर यहाँ पक्षियों के समान भिक्षाटन करते है ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**वयमृतमिव जिह्मव्याहृतं श्रद्दधानाः कुलिकरुतमिवाज्ञाः कृष्णवध्वो हरिण्यः ।**
**ददृशुरसकृदेतत्तन्नखस्पर्शतीव्रस्मररुज उपमन्त्रिन् भण्यतामन्यवार्ता ॥१९॥**

पदच्छेद—वयम् ऋतम् इव जिह्म व्याहृतम् श्रद्दधानाः कुलिकरुतम् इव अज्ञाः कृष्णवध्वः हरिण्यः ।
ददृशुः असकृत् एतत् तत् नख स्पर्श तीव्र स्मररुज उपमन्त्रिन् भण्यताम् अन्य वार्ता ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| शब्दार्थ— वयम् | २. हम लोगों ने (श्रीकृष्ण की) | हरिण्यः । | ८. हरिणियाँ |
| ऋतम् इव | ३. सत्य के समान | ददृशुः असकृत् | १३. अनुभव किया |
| जिह्म व्याहृतम् | ४. कपट भरी बातों पर | एतत् तत् नख | १०. और उनके नख |
| श्रद्दधानाः | ५ श्रद्धा की | स्पर्शतीव्र | ११. स्पर्श से तीव्र |
| कुलिकरुतम् | ६. व्याध के गान पर विश्वास कर लेती है | स्मररुज | १२. काम पीडा का |
| इव | ६. जैसे | उपमन्त्रिन् | १४. हे दूत! भ्रमर |
| अज्ञाः | १. भोली-भाली | भण्यताम् | १५. दूसरी कोई |
| कृष्णवध्वः | ७. कृष्णसार मृग की पत्नी | अन्य वार्ता ॥ | १६. बात कहो |

श्लोकार्थ—भोली-भाली हम लोगों ने श्रीकृष्ण की सत्य के समान कपट भरी बातों पर श्रद्धा की। जैसे कृष्ण सार मृग की पत्नी हरिणियाँ व्याध के गान पर विश्वास कर लेती हैं। और हमने उनके नख स्पर्श से तीव्र काम पीडा का अनुभव किया। हे दूत भ्रमर! दूसरी कोई बात कहो ॥

## विंशः श्लोकः

**प्रियसख पुनरागाः प्रेयसा प्रेषितः किं वरय किमनुरुन्धे माननीयोऽसि मेऽङ्ग ।**
**नयसि कथमिहास्मान् दुस्त्यजद्वन्द्वपार्श्वं सततमुरसि सौम्य श्रीर्वधूःसाकमास्ते २०**

पदच्छेद— प्रियसख पुनः आगाः प्रेयसाप्रेषितः किम् वरय किम् अनुरुन्धे माननीयः असिमे अङ्ग ।
नयसि कथम् इह अस्मान् दुस्त्यज द्वन्द्वपार्श्वं सततम् उरसि सौम्य श्रीः वधूः साकम् आस्ते ।।

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| प्रियसख | १. प्रिय मित्र ! तुम | नयसि | ११. ले चलना चाहते हो |
| पुनः गाः | २. फिर लौट आये हो | कथम् इह | ९. क्या वहाँ पर |
| प्रेयसाप्रेषितः | ४. प्रियतम ने भेजा है | अस्मान् | १०. हमें |
| किम् | ३. क्या | दुस्त्यज | १३. लौटना कठिन है |
| वरय | ६. माँग लो | द्वन्द्वपार्श्वं | १२. उनके पास से |
| किम् अनुरुन्धे | ५. क्या चाहते हो | सततम् उरसि | १५ उनके वक्षः स्थल पर सदा |
| माननीयः असि | ८. माननीय हो | सौम्य श्रीःवधूः | १४. सौम्य उनकी पत्नी लक्ष्मी |
| मे अङ्ग । | ७ मेरे प्रिय भ्रमर तुम | साकम् आस्ते ।। | १६. साथ रहती हैं |

श्लोकार्थ— प्रिय मित्र ! तुम फिर लौट आये हो । क्या प्रियतम ने भेजा है । क्या चाहते हो माँग लो । मेरे प्रिय भ्रमर ! तुम माननीय हो । क्या वहाँ पर हमें ले चलना चाहते हो । उनके पास से लौटना कठिन है । सौम्य ! उनकी पत्नी लक्ष्मी उनके वक्षः स्थल पर सदा साथ रहती हैं ।।

## एकविंशः श्लोकः

**अपि बत मधुपुर्यामार्यपुत्रोऽधुनाऽऽस्ते स्मरति स पितृगेहान्सौम्य बन्धूंश्च गोपान्**
**क्वचिदपि स कथा नः किङ्करीणां गृणीते भुजमगुरुसुगन्धंमूर्ध्न्यधास्यत्कदानु २१**

पदच्छेद—अपि बत मधुपुर्याम् आर्यपुत्र अधुना आस्ते स्मरति सःपितृगेहान् सौम्य बन्धून् च गोपान् ।
क्वचित् अपि सः कथाः नः किङ्करीणाम् गृणीते भुजम् अगुरु सुगन्धम् मूर्ध्नि अधास्यत् कदा नु ।।

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| अपि बत | २. अच्छा क्या | क्वचित् | १२. कभी कुछ |
| मधुपुर्याम् | ५. मधुपुरी में | अपि सः | १० और वे |
| आर्यपुत्र | ३. आर्य पुत्र श्रीकृष्ण | कथाः | १३. बातें |
| अधुना | ४. इस समय | नः किङ्करीणाम् | ११. हम दासियों की |
| आस्ते | ६. हैं (क्या) | गृणीते | १४. करते हैं क्या |
| स्मरति | ९ स्मरण करते हैं | भुजम् | १७. भुजा (हमारे) |
| सः पितृगेहान् | ७ वे पिता के घरों | अगुरु सुगन्धम् | १६. अगर के सुगन्ध के समान |
| सौम्य | १. हे सौम्य ! | मूर्ध्नि अधास्यत् | १८. सिर पर रखेंगे |
| बन्धून् च गोपान् । | ८. बन्धुओं और गौओं का | कदा नु ।। | १५. कब वे अपनी |

श्लोकार्थ—हे सौम्य ! अच्छा, आर्य पुत्र श्रीकृष्ण इस समय मधुपुरी में हैं क्या ? वे पिता के घरों बन्धुओं और गौओं को स्मरण करते हैं । और वे हम दासियों की कभी कुछ बातें करते हैं क्या ? कब वे अपनी अगर के सुगन्ध के समान भुजा हमारे सिर पर रखेंगे ।।